सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 142, नई दिल्ली । शुक्रवार, 02 अगस्त 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जब तक जीना, तब तक सीखना, अनुभव ही जीवन में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।

03 अलर्ट:बिन बरसात स्कूलों में आतिशी ने की छुट्टी

06 मातृभाषा में खुलती शिक्षा की की नई नई राहें

08 रक्तदाता का सम्मान समारोह एवं मोटिवेशनल सेमिनार रक्तदान शिविर

नमो भारत ट्रेन के यात्रियों के लिए जरूरी खबर, दो अगस्त तक बंद रहेंगे छह स्टेशन के आठ गेट

अगर आप रोजाना आने-जाने के लिए नमो भारत ट्रेन का उपयोग करते हैं तो यह जानकारी आपके काम की है। दरअसल कांवड़ यात्रा के चलते दो अगस्त तक नमो भारत ट्रेन के छह स्टेशन के आठ गेट बंद रहेंगे। वर्तमान में नमो भारत ट्रेनें साहिबाबाद और मोदीनगर उत्तर के बीच 34 किलोमीटर के सेक्शन में आठ स्टेशनों के साथ यात्रियों को सेवा प्रदान कर रही है।

गाजियाबाद। मेरठ रोड पर नमो भारत ट्रेन के छह स्टेशन के आठ गेट कांवड़ यात्रा के चलते दो अगस्त तक गेट बंद किए गए हैं। यात्रियों को स्टेशन के दूसरे गेट से निकाला जा रहा।

नमो भारत ट्रेन के गाजियाबाद, गुलधर, दुहाई, मुरादनगर, मोदीनगर नाथ और मोदीनगर साउथ स्टेशन के आठ गेट जो मेरठ रोड के दाएं तरफ पर हैं, सभी को बंद कर दिया है। कांवड़ यात्रा खत्म होने के बाद तीन अगस्त से यह गेट यात्रियों के लिए खोले जाएंगे।

टिकट बुकिंग का अनुभव होगा बेहतर

नमो भारत ट्रेन के यात्रियों को बेहतर डिजिटल टिकटिंग अनुभव प्रदान करने के लिए एनसीआरटीसी ने एयरटेल पेमेंट्स बैंक के साथ साझेदारी की है। इसके तहत यात्री एयरटेल पेमेंट्स बैंक द्वारा जारी नेशनल कॉमन मोबिलिटी कार्ड (एनसीएमसी) से नमो भारत ट्रेनों मे यात्रा कर पाएंगे।

साथ ही यात्री इस एनसीएमसी के द्वारा देश भर में अन्य परिवहन प्रणालियों पर भी यात्रा कर सकेंगे। एनसीआरटीसी के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी पुनीत वत्स ने बताया कि एयरटेल पेमेंट्स बैंक द्वारा पेश किए गए एनसीएमसी डेबिट और प्रीपेड कार्ड सभी परिचालित आरआरटीएस स्टेशनों पर उपलब्ध हैं।

कैसे उठा सकेंगे सुविधा का लाभ?

यात्री 100 रुपये का शुल्क देकर टिकट खिड़की से ये एनसीएमसी कार्ड प्राप्त कर सकते हैं। इस सुविधा का लाभ उठाने के लिए यात्रियों को अपना मोबाइल नंबर साझा करना होगा, जिससे एनसीएमसी कार्ड लिंक हो जाएगा।

एनसीआरटीसी और एयरटेल पेमेंट्स बैंक के इस सहयोग से उन यात्रियों को बहुत लाभ होगा, जो मेट्रो, आरआरटीएस, रेलवे, बस सेवाओं जैसे परिवहन के कई साधनों का नियमित रूप से इस्तेमाल करते हैं।

एक कार्ड के उपयोग से लोगों को कई टिकट या कार्ड साथ रखने की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी और वे अपनी यात्रा के साथ साथ खरीदारी और अन्य भुगतानों के लिए भी सरलता से एनसीएमसी के द्वारा त्वरित भुगतान कर सकेंगे।

मालूम हो कि दिल्ली से मेरठ तक पूरे कॉरिडोर पर जून 2025 तक नमो भारत ट्रेन सेवा के संचालन शुरू होने की उम्मीद है।

परिवहन विभाग दिल्ली द्वारा सुर्खिया बटोरने के बाद अपनों द्वारा घोषित ऑनलाइन फेस फ्री कार्य प्रणाली से नहीं कर रहा कार्य

संजय बाटला

नई दिल्ली। विशेष परिवहन आयुक्त दिल्ली जो विभाग के सक्षम अधिकारी के रुप में आज कार्य एवं देश एवं दिशा निर्देश जारी कर रहे हैं कि निगरानी और दिशा निर्देश के कारण दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा बटोरी गई सुर्खिया अब हवा में उड़ती दिखाई दे रही है कारण दिल्ली पहला ऐसा परिवहन विभाग अपने आप को घोषित कर चुका था की वाहन मालिक/ वाहन चालक / जनता या जनता द्वारा नियुक्त किसी भी नुमाइंदे को परिवहन से सम्बंधित कार्य के लिए कार्यालय में आने की आवश्यकता नहीं है और उनका कार्य समय सीमा में हो जाएगा। इसी घोषणा और सुर्खियों को बटोरने के चक्कर मे दिल्ली में नोटिफाइड तीन जिला कार्यालयों में दिल्ली के मुख्यमंत्री के हाथो से ताले लगवा दिए गए थे। आनलाइन फेस फ्री आवेदन प्रक्रिया के शुरु होने से पिछले दो महीने तक तो कार्य करवाने वालों को कुछ परेशानियां नजर आ रही थी पर पिछले दो महीने से वाहन मालिको/ वाहन चालकों/ जनता और जनता द्वारा नियुक्त नुमाइंदों के बारंबार चक्कर काटने के बाद भी कार्य नही हो रहे। **यहां तक की आनलाइन फेस फ्री आवेदन को लटकाने के लिए उस पर इस तरह के ऑब्जेक्शन लगाए जा रहे है जिसका कोई अर्थ ही नहीं।** इन सभी बातों की जानकारी होते हुए भी विशेष परिवहन आयुक्त उर्फ सक्षम अधिकारी परिवहन विभाग है चुप, आख़िर क्यों ? **क्या पूर्व परिवहन आयुक्त द्वारा किए गए आदेश गलत थे** और उन्हे सुधारने का प्रयास कर रहे हैं विशेष परिवहन आयुक्त दिल्ली या **दिल्ली परिवहन विभाग को गैर तकनीकी कार्यशैली की और पहुंचाने का कोई अर्थ इससे जोड़ कर कार्य कर रहे हैं। बड़ा सवाल ?** आपकी जानकारी के लिए बता दें **दिल्ली परिवहन विभाग में स्थाई रूप में मात्र एक तकनीकी अधिकारी एमएलओ/ डीटीओ ही आज की तारीख में कार्यरत है और उस एक स्थाई तकनीकी अधिकारी को गैर तकनीकी पद पर इसी सक्षम अधिकारी द्वारा नियुक्त किया गया है।** तकनीकी पदो पर इनके द्वारा जान बुझकर सांख्यिकी और अनुभाग अधिकारियो को नियुक्त किया गया है। कानूनी दृष्टि के अनुसार सक्षम अधिकारी का अधिकार/ कार्य क्षेत्र विभाग के आयुक्त का बनता है पर परिवहन विभाग में सक्षम अधिकारी की शक्ति का प्रयोग विशेष परिवहन आयुक्त निभा रहा है और मुख्य सचिव और उपराज्यपाल दिल्ली सब कुछ जानते हुए भी चुप है।

डॉ. लॉजिस्टिक्स : इंलैंड कंटेनर डिपो और लॉजिस्टिक्स

डॉ. अंकुर शरण

इंलैंड कंटेनर डिपो (ICD) भारत के व्यापारिक ढांचे में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये सुविधाएं समुद्रतटीय बंदरगाहों से दूर, घरेलू क्षेत्रों में स्थित होती हैं, और कंटेनराइज्ड कार्गो के आयात और निर्यात की प्रक्रियाओं को सुगम बनाती हैं। भारत जैसे विशाल भू-भाग वाले देश में, जहां समुद्रतटीय बंदरगाहों से दूर क्षेत्रों से भी व्यापार संचालित होता है, आईसीडी का महत्व और भी बढ़ जाता है। ये न केवल व्यापारिक सामग्री के परिवहन को सुविधाजनक और कुशल बनाते हैं, बल्कि बंदरगाहों पर दबाव को भी कम करते हैं।

आईसीडी का मुख्य उद्देश्य व्यापारिक कार्गो के कस्टम क्लियरेंस, भंडारण, और अन्य लॉजिस्टिक सेवाओं को उपलब्ध कराना है। यह केंद्र कंपनियों को उनके उत्पादों को सुरक्षित रखने और समय पर वितरित करने में मदद करते हैं। लॉजिस्टिक्स इंडस्ट्री आईसीडी के संचालन और विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह उद्योग परिवहन, कस्टम क्लियरेंस, वेयरहाउसिंग, ट्रैकिंग और ट्रेसिंग, और रिस्क मैनेजमेंट जैसी सेवाएं प्रदान करता है, जो व्यापारिक प्रक्रियाओं को सुगम बनाती हैं। विशेष रूप से, आधुनिक लॉजिस्टिक्स प्रौद्योगिकी के माध्यम से, कंपनियां कंटेनरों की ट्रैकिंग और ट्रेसिंग सेवाएं प्रदान करती हैं, जिससे कार्गो की स्थिति और स्थान का रियल-टाइम अपडेट मिलता है।

लॉजिस्टिक्स कंपनियां संभावित जोखिमों को कम करने के लिए सुरक्षा निगरानी, बीमा, और आकस्मिक योजनाओं का पालन करती हैं। इस प्रकार, आईसीडी और लॉजिस्टिक्स का संयोजन भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को नई ऊँचाइयों पर ले जाने में सहायक है। यह न केवल व्यापारिक प्रक्रियाओं को सुगम बनाता है बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी सशक्त बनाता है। आने वाले समय में, आईसीडी और लॉजिस्टिक्स का महत्व और भी बढ़ेगा, जिससे भारत वैश्विक व्यापारिक केंद्र के रूप में उभरेगा।

भारत में इंलैंड कंटेनर डिपो (ICD) की कुल संख्या लगभग 315 है, जिसमें सरकारी और निजी दोनों प्रकार के ICD शामिल हैं। ये डिपो देशभर में फैले हुए हैं और आयात-निर्यात की प्रक्रियाओं को सुगम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख सरकारी ICD हैं CONCOR द्वारा संचालित, जबकि निजी ICD में Adani Logistics और Gateway Rail Freight जैसी कंपनियां शामिल हैं।

दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में विशेष रूप से 12 प्रमुख ICD स्थित हैं। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण ICD हैं:

Tughlakabad ICD (CONCOR) - यह दिल्ली का सबसे बड़ा ICD है और इसका प्रबंधन CONCOR द्वारा किया जाता है।

Dadri ICD (CMA CGM Logistics Park) - यह नोएडा में स्थित है और CMACGM द्वारा संचालित होता है।

Patli ICD (Gateway Rail Freight) - यह गुड़गांव के निकट स्थित है और Gateway Rail द्वारा संचालित होता है।

Garhi Harsaru ICD (GDL) - यह गुड़गांव के पास स्थित है और Gateway Distriparks द्वारा संचालित होता है।

ये ICD दिल्ली-एनसीआर में आयात-निर्यात के लिए महत्वपूर्ण केंद्र हैं और विभिन्न कंपनियों को लॉजिस्टिक्स सेवाएं प्रदान करते हैं। इनकी सुविधाओं में कस्टम क्लियरेंस, वेयरहाउसिंग, और कार्गो हैंडलिंग शामिल हैं, जो व्यापार को सुगम और कुशल बनाते हैं

इंलैंड कंटेनर डिपो (ICD) में एक्सपोर्टर और इंपोर्टर को कई सुविधाएं मिलती हैं, जो उनके व्यापार को सुगम और कुशल बनाती हैं। यहां कुछ प्रमुख सुविधाएं दी गई हैं:

कस्टम क्लियरेंस: ICD में कस्टम क्लियरेंस की सुविधा उपलब्ध होती है, जिससे आयात और निर्यात के लिए जरूरी कागजात और प्रक्रियाओं को तेजी से पूरा किया जा सकता है।

वेयरहाउसिंग और स्टोरेज: एक्सपोर्ट और इंपोर्ट किए गए सामानों को ICD में सुरक्षित रूप से स्टोर किया जा सकता है। वेयरहाउसिंग की यह सुविधा व्यापारियों को अपने उत्पादों को संग्रहित करने और उनकी गुणवत्ता को बनाए रखने में मदद करती है।

ट्रांसपोर्टेशन: ICD से बंदरगाहों तक सामान के परिवहन की सुविधा भी होती है। यह सड़क और रेल मार्गों से संचालित होता है, जिससे लॉजिस्टिक्स की लागत कम होती है और समय की बचत होती है।

ट्रैकिंग और ट्रेसिंग: आधुनिक प्रौद्योगिकी के माध्यम से, ICD में कंटेनरों की ट्रैकिंग और ट्रेसिंग की सुविधा उपलब्ध होती है। इससे व्यापारियों को उनके माल की स्थिति और स्थान की जानकारी मिलती है।

रिस्क मैनेजमेंट और सुरक्षा: ICD में सुरक्षा के पर्याप्त उपाय होते हैं, जिससे माल की सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है। इसमें सीसीटीवी निगरानी, सुरक्षा गार्ड, और बीमा की सुविधा शामिल होती है।

अन्य सेवाएं: इसके अलावा, ICD में डॉक्यूमेंटेशन, पैकेजिंग, और फ्यूमिगेशन जैसी सेवाएं भी प्रदान की जाती हैं, जो व्यापारिक प्रक्रियाओं को और अधिक सुगम बनाती हैं।

इन सुविधाओं के कारण, ICD व्यापारियों के लिए एक वन-स्टॉप सॉल्यूशन प्रदान करते हैं, जिससे उनके आयात और निर्यात संबंधी सभी जरूरतें पूरी होती हैं।

डॉ. लॉजिस्टिक्स एक पहल है जो पाठकों को लॉजिस्टिक्स उद्योग की गहरी समझ प्रदान करने का प्रयास करती है। इसका उद्देश्य है उद्योग के विभिन्न पहलुओं, कार्यों और जिम्मेदारियों पर प्रकाश डालना, ताकि लोग इस क्षेत्र में बेहतर संभावनाओं और अवसरों को समझ सकें। यह पाठकों को लॉजिस्टिक्स के महत्व और इसकी जटिलताओं से अवगत कराकर उद्योग में उनकी समझ और दृष्टिकोण को व्यापक बनाता है।

ankur.supplychain@gmail.com

फास्ट टैग्स के नए नियमों के अनुसार केवाईसी आवश्यकताओं को पूरा करने की समय सीमा 31 अक्टूबर, 2024 निर्धारित की गई है, जाने और समय रहते करे यह कार्य

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। अगस्त में नए नियमों की झड़ी लग जाएगी, खास तौर पर FASTags के मामले में। यह सिस्टम, टोल प्लाजा पर सुव्यवस्थित टोल भुगतान और ट्रैफिक जाम को कम करने के लिए एक आधारशिला है, इसमें महत्वपूर्ण बदलाव किए जा रहे हैं। नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (NPCI) ने नए दिशा-निर्देश जारी किए हैं, जिसमें नो योर कस्टमर (KYC) आवश्यकताओं पर जोर दिया गया है।

1 अगस्त से, FASTag सेवाएँ देने वाली कंपनियों को 31 अक्टूबर तक तीन से पाँच साल पहले जारी किए गए सभी FASTags के लिए KYC पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। ग्राहकों को यह सुनिश्चित करना होगा कि सेवा में व्यवधान से बचने के लिए इस अवधि के भीतर उनका KYC अपडेट हो।

NPCI के दिशा-निर्देशों में पाँच साल से पुराने FAS टैग को बदलने की भी आवश्यकता है, जिससे वाहन मालिकों के लिए अपने टैग की जारी करने की तिथियों की जाँच करना और तुरंत कार्रवाई करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

पुराने वाहन चलाने वालों के लिए, ये अपडेट विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। 1 अगस्त से 31 अक्टूबर के बीच, कंपनियों को:

तीन से पाँच साल से पुराने FASTags के लिए KYC अपडेट करना होगा।

पाँच साल से पुराने FAS टैग को बदलना होगा।

इन समयसीमाओं को पूरा न कर पाने से काफी असुविधाएँ हो सकती हैं, इसलिए इन बदलावों पर नज़र रखना बहुत ज़रूरी है।

इसके अलावा, 1 अगस्त से सभी FAS टैग को वाहन के रजिस्ट्रेशन और चेसिस नंबर से लिंक किया जाना चाहिए। नए वाहन मालिकों को खरीद के 90 दिनों के भीतर अपना रजिस्ट्रेशन नंबर अपडेट करना होगा। FASTag प्रदाताओं को सटीकता और अप-टू-डेट जानकारी सुनिश्चित करते हुए अपने डेटाबेस को सावधानीपूर्वक सत्यापित और अपडेट करना चाहिए।

प्रदाताओं को FASTag से जुड़ी कार की आसान पहचान के लिए वाहन के सामने और किनारे की स्पष्ट तस्वीरें अपलोड करने की भी आवश्यकता होती है। सहज संचार और अपडेट के लिए प्रत्येक FASTag को मोबाइल नंबर से जोड़ा जाना चाहिए।

सभी KYC आवश्यकताओं को पूरा करने की समयसीमा 31 अक्टूबर, 2024 निर्धारित की गई है। अंतिम समय तक प्रतीक्षा करने से अप्रत्याशित समस्याएँ हो सकती हैं, इसलिए तुरंत कार्रवाई करना उचित है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

पर्यावरण पाठशाला: प्रकृति के साथ सुबह का समय: जागरूकता की दिशा में एक कदम: डॉ. अंकुर शरण

आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में, लोग अक्सर अपने दिन की शुरुआत मोबाइल और अन्य गैजेट्स के साथ करते हैं। इससे न केवल शारीरिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, बल्कि मानसिक शांति भी बाधित होती है। 'पर्यावरण पाठशाला' के अंतर्गत, हम सभी से आग्रह करते हैं कि अपने दिन की शुरुआत प्रकृति के साथ करें।

सुबह जल्दी उठें और उगते हुए सूरज का दीदार करें। यह न केवल आपको प्रकृति के करीब लाएगा, बल्कि आपकी आत्मा को भी शांति प्रदान करेगा। पहले एक घंटे में मोबाइल या किसी भी गैजेट का उपयोग न करें। इसके बजाय, इस समय को प्रकृति के साथ बिताएं। चाहे वह पार्क में सैर हो, गार्डन में पौधों की देखभाल हो, या सिर्फ खिड़की से बाहर देखकर प्रकृति के नज़ारों का आनंद लेना हो, इस समय का सदुपयोग करें।

प्रकृति हमें बहुत कुछ सिखाती है। उसका हर पहलू—पक्षियों का चहचहाना, हवा का मंद बहाव, सूरज की किरणें—हमारे जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। जब आप नियमित रूप से यह अनुभव करेंगे, तो आपको अपने अंदर एक सकारात्मक बदलाव महसूस होगा। आपका मन शांत रहेगा, विचारों में स्पष्टता आएगी और दिनभर की थकान का सामना करने की शक्ति मिलेगी।

इसलिए, अपने जीवन में यह छोटा सा परिवर्तन लाने का प्रयास करें। सुबह का पहला घंटा खुद के साथ बिताएं और प्रकृति की गोद में अपने दिन की शुरुआत करें। यकीन मानिए, यह बदलाव आपके जीवन में नए रंग भरेगा और आपको एक नई दिशा में प्रेरित करेगा। प्रकृति से जुड़कर सीखें और जीवन को सरल और सुंदर बनाएं।

indiangreenbuddy@gmail.com

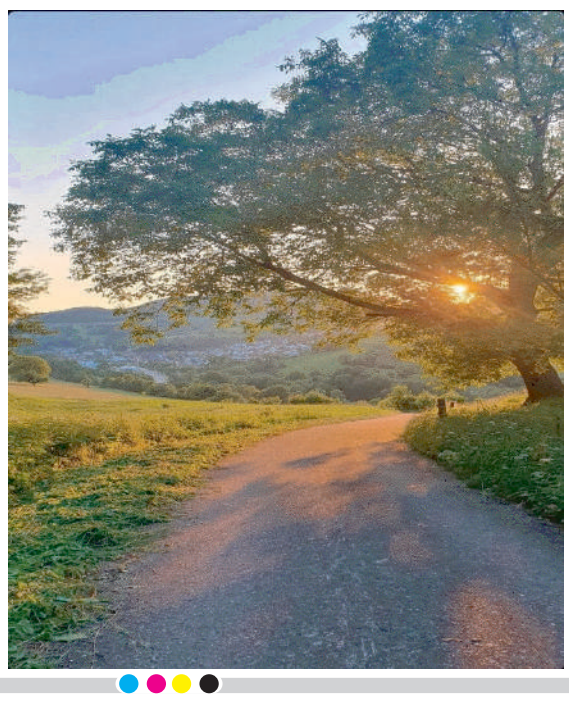

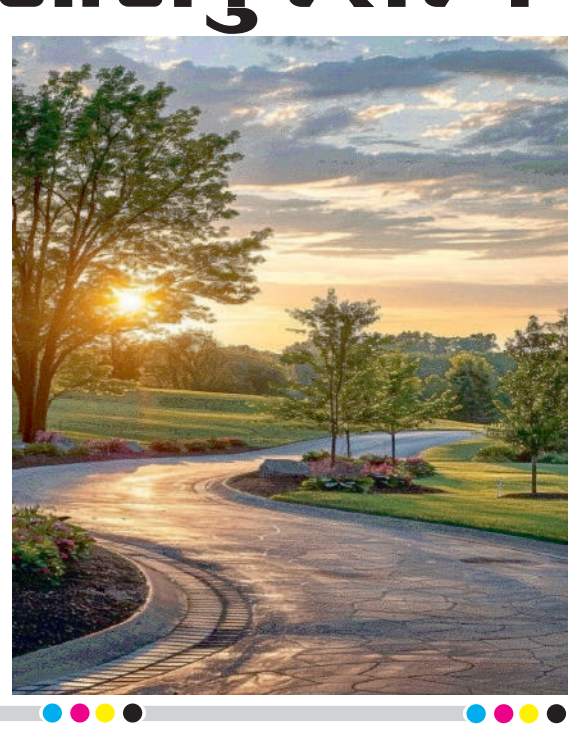

शिव के 12 ज्योतिर्लिंग

1.सोमनाथ मंदिर-:

● सोमनाथ मंदिर, हिन्दू धर्मावलंबियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण मंदिर है। यह 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र के वेरावल बंदरगाह में स्थित इस मन्दिर के बारे में कहा जाता है कि इसका निर्माण स्वयं चन्द्र देव ने किया था, जिसका उल्लेख ऋग्वेद में स्पष्ट है ।सोमनाथ मंदिर पितृगणों के श्राद्ध, नारायण बलि आदि धार्मिक कर्म-कांडों के लिए भी प्रसिद्ध है। चैत्र, भाद्रपद, कार्तिक माह में यहाँ श्राद्ध करने का विशेष महत्व बताया गया है। इसी कारण इन तीन महीनों में यहां श्रद्धालुओं की बडी भीड़ लगती है। इसके अलावा यहां तीन नदियों हिरण, कपिला और सरस्वती का महासंगम होता है। इस त्रिवेणी स्नान का विशेष महत्व है। (ॐ सोमेश्वराय नमः)

2.मल्लिकार्जुन-:

● श्री मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग आंध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के तट पर श्रीशैल पर्वत पर स्थित है। इस ज्योर्तिलिंग को दक्षिण का कैलाश कहा जाता है। हिन्दू धर्म ग्रंथों में इस ज्योतिर्लिंग की महिमा का वर्णन करते हुए लिखा गया है कि श्रीशैल पर्वत पर भगवान शिव की आराधना करने से व्यक्ति को अश्वमेध यज्ञ के समान फल प्राप्त होता है। साथ ही साथ दर्शन करने वाले के सारे पाप मिट जाते हैं और उसे अनंत सुखों की प्राप्ति होती है। दक्षिणी मंदिरो की तरह यह एक पुराना मंदिर है। यह एक ऊंचे पत्थर से निर्मित चारदीवारी के मध्य में स्थित है। जिस पर हाथी-घोड़ों की कलाकृतियाँ बनी हई हैं। परकोटे मे चारों ओर द्धार हैं, जिनपर गोपुर बने हैं। (ॐ मल्लिकार्जुनाय नमः)

3.महाकालेश्वर-:

● महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश के उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है। यहाँ पर कुंभ मेले का आयोजन भी होता है। 12 ज्योतिर्लिंगों में से महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग का एक विशेष महत्व है। कहा जाता है कि जो महाकाल का भक्त है, उसका काल भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता। महाकाल के बारे में तो यह भी कहा जाता है कि यह पृथ्वी का एक मात्र मान्य शिवलिंग है। महाकाल की महिमा का वर्णन इस प्रकार से भी किया गया है-: ₹आकाशे तारकं लिंगं पाताले हाटकेश्वरम् भूलोके च महाकालो लिंङ्गत्रय नमोस्तु ते।।₹ इसका तात्पर्य यह है कि आकाश में तारक लिंग, पाताल में हाटकेश्वर लिंग तथा पृथ्वी पर महाकालेश्वर ही मान्य शिवलिंग है। यहाँ प्रति बारह वर्ष में सिंहस्थ मेला आयोजित होता है। सिंहस्थ कुम्भ मेले के बारे में यह कहा जाता है कि जब समुद्र मंथन के पश्चात देवता अमृत कलश को दानवों से बचाने के लिए वहाँ से पलायन कर रहे थे, तब उनके हाथों में पकड़े अमृत कलश से अमृत की बूँद धरती पर जहाँ-जहाँ भी गिरी थी, वो स्थान पवित्र तीर्थ बन गए। उन्हीं स्थानों में से एक उज्जैन है। (ॐ महाकालेश्वराय नमः)

4.ओंकारेश्वर-:

● ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। ओंकारेश्वर या ॐकारेश्वर मंदिर मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में स्थित है। पुराणों में वायुपुराण और शिवपुराण में ओंकारेश्वर क्षेत्र के बारे में बताया गया है। ऐसा माना जाता है कि इसी मंदिर में शिव के परम भक्त कुबेर ने तपस्या की थी और शिवलिंग की स्थापना की थी। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार कुबेर के स्नान के लिए शिवजी ने अपनी जटा से कावेरी नदी उत्पन्न की थी। ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग ॐ के आकार में है इसीलिए इसे ओंकारेश्वर या ॐकारेश्वर कहा जाता है। माना जाता है कि यहीं ॐ शब्द की उत्पत्ति भगवान बह्मा के मुख से हुई थी ।ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक मात्र ज्योतिर्लिंग है जहां शिव भगवान शयन करने आते हैं। मंदिर के पुजारियों के अनुसार शिव भक्त यहां विशेष रुप से भगवान शिव के शयन दर्शन करने आते हैं। मान्यता यह भी है कि भगवान शिव के साथ यहां माता पार्वती भी रहती हैं और वो शिवजी के साथ चौसर (पासे) खेलती हैं। शायद यही वजह है कि शयन आरती के बाद ज्योतिर्लिंग के पास चौसर की बिसात सजाई जाती है। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि गर्भग्रह में शयन की आरती के बाद कोई भी नहीं आता लेकिन सुबह पांसे उल्टे मिलते हैं। (ॐ ओंकारेश्वराय नमः)

5.केदारनाथ-:

● केदारनाथ मंदिर, हिमालय की गोद में बसे उत्तराखंड राज्य के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित है। भगवान शिव का यह दुर्लभ मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। जलवायु के कारण केदारनाथ मंदिर के कपाट अप्रैल माह में खुलते हैं और नवंबर माह में मंदिर के कपाट बंद हो जाते हैं। धार्मिक मान्यता के साथ-साथ यह मंदिर अपने आप में अद्भुत है। चूंकि उत्तराखंड में बद्रीनाथ धाम भी है। मान्यता ये है कि जो व्यक्ति केदारनाथ के दर्शन किए बिना बद्रीनाथ धाम की यात्रा करता है। उसे इस यात्रा का फल नहीं मिलता है। (ॐ केदारेश्वराय नमः)

6.भीमाशंकर-:

● महाराष्ट्र के पुणे से लगभग 110 किमी दूर सहाद्रि नामक पर्वत पर स्थित है भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग। 12 प्रमुख ज्योतिर्लिंगों में भीमाशंकर का स्थान छठा है। यह ज्योतिर्लिंग मोटेश्वर महादेव के नाम से भी जाना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भगवान शंकर ने कुंभकरण के पुत्र भीमेश्वर का वध किया था। मान्यता है कि इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने मात्र से व्यक्ति को समस्त दुखों से छुटकारा मिल जाता है। यहीं से भीमा नदी भी निकलती है। (ॐ भीमेश्वराय नमः)

7.काशी विश्वनाथ-:

● काशी विश्वनाथ मंदिर शिव जी के सभी 12 ज्योर्तिलिंगों में से एक महत्वपूर्ण मंदिर है। यह मंदिर उत्तर प्रदेश के वाराणसी ज़िले में स्थित है। इसे विश्वेश्वर ज्योतिर्लिंग के नाम से भी जाना जाता है। काशी विश्वनाथ हिन्दू आस्था का महत्वपूर्ण केन्द्र है। वाराणसी गंगा नदी के तट पर स्थित विश्व का सबसे प्राचीन नगर

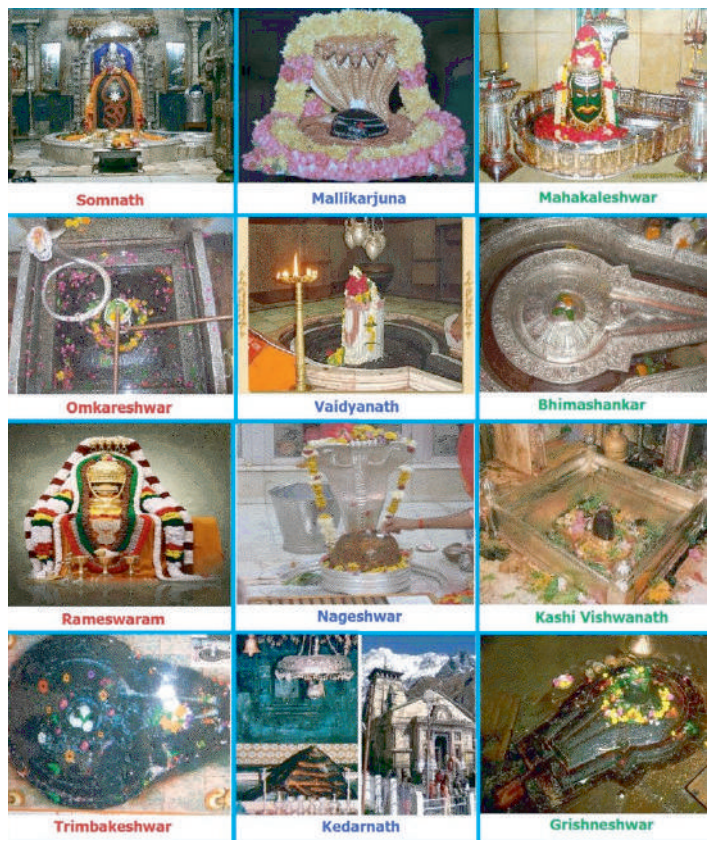

है। यहाँ स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर के दर्शन आदि शंकराचार्य, संत एकनाथ, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद जैसे महापुरुषों ने किया है। रामचरित मानस की रचना करने वाले तुलसी दासजी का भी आगमन भगवान शिव के इस मंदिर में हो चुका है। शिवरात्रि के समय इस मंदिर में लाखों श्रद्धालु शिव के दर्शन करने के लिए आते हैं। इस मंदिर का जीर्णोद्धार 1780 में महारानी अहिल्या बाई होल्कर ने करवाया था। बाद में महाराजा रणजीत के द्वारा 1853 में एक हज़ार किलो ग्राम सोने से इस मंदिर को बनवाया था। (ॐ विश्वेश्वराय नमः)

8.त्र्यम्बकेश्वर-:

● त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर हिन्दुओं का एक प्रमुख तीर्थस्थल है। यह मंदिर पूर्णतः भगवान शिव को समर्पित है। यह मंदिर महाराष्ट्र के त्र्यम्बक गांव में स्थित है, जो नासिक शहर से लगभग 28 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। त्र्यम्बकेश्वर मंदिर में स्थित ज्योतिर्लिंग भगवान शिव के 12 ज्योति लिंग में से है तथा 12 ज्योतिर्लिंगों में से त्र्यम्बकेश्वर को आठवां ज्योतिर्लिंग माना जाता है। यह मंदिर पवित्र गोदावरी नदी के निकट है। त्र्यम्बकेश्वर मंदिर तीन पहाड़ियों के बीच स्थित है, जिसमें ब्रह्मगिरी, निलागिरि और कालगिरी शामिल हैं। मंदिर की एक विशेषता यह है कि इस मंदिर में भगवन शिव, विष्णु और ब्रह्मा जी का प्रतिनिधित्व करने वाले तीन लिंगम (शिव के एक प्रतिष्ठित रूप) हैं। (ॐ त्रंयम्बकेश्वराय नमः)

9.वैद्यनाथ-:

● हिन्दू धर्म में 12 ज्योतिर्लिंगों के दर्शन का बड़ा महत्व है। इन सभी से शिव की रोचक कथाएं जुड़ी हुई हैं। देवघर के वैद्यनाथ धाम में स्थापित 'कामना लिंग' भी रावण की भक्ति का प्रतीक है। बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक पवित्र वैद्यनाथ शिवलिंग झारखंड के देवघर में स्थित है। इस जगह को लोग बाबा बैजनाथ धाम के नाम से भी जानते हैं। कहते हैं कि भोलेनाथ यहां आने वाले की सभी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। इसलिए इस शिवलिंग को 'कामना लिंग' भी कहते हैं। 12 ज्योतिर्लिंगों के लिए कहा जाता है कि जहां-जहां महादेव साक्षत प्रकट हुए वहां इनकी स्थापना हुई। इसी तरह पुराणों में वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग की भी कथा है जो लंकापति रावण से जुड़ी है। (ॐ वैद्यनाथेश्वराय नमः)

10.नागेश्वर-:

● नागेश्वर ज्योतिर्लिंग गुजरात के द्वारका में स्थित है। मान्यता है कि सावन मास में इस प्राचीन नागेश्वर शिव मंदिर में स्थापित शिवलिंगों की एक साथ पूजा-अर्चना का विशेष महत्व है। मंदिर में इन अद्भुत शिवलिंगों के दर्शन व पूजन के लिए दूर- दूर से श्रद्धालु आते हैं। सावन में विशेष रूप से सोमवार को खासी भीड़ रहती है। भगवान शिव के निर्देशानुसार ही इस शिवलिंग का नाम 'नागेश्वर ज्योतिर्लिंग' पड़ा। माना जाता है कि 'नागेश्वर ज्योतिर्लिंग' के दर्शन करने के बाद जो मनुष्य उसकी उत्पत्ति और माहात्म्य सम्बन्धी कथा को सुनता है, वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है तथा सम्पूर्ण भौतिक और आध्यात्मिक सुखों को प्राप्त करता है। (ॐ नागेश्वराय नमः)

11.रामेश्वरम-:

● हिंदू धर्म में तमिलनाडु के रामनाथपुरम में स्थित रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग एक विशेष स्थान रखता है। यहां स्थापित शिवलिंग बारह द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि उत्तर में जितना महत्व काशी का है, उतना ही महत्व दक्षिण में रामेश्वरम का भी है, जो सनातन धर्म के चार धामों में से एक है। कहा जाता है कि रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग की विधिपूर्वक आराधना करने से मनुष्य ब्रह्महत्या जैसे महापाप से भी मुक्त हो जाता है। मान्यता है कि जो भी श्रद्धालु ज्योतिर्लिंग पर गंगाजल चढ़ाता है, वह साक्षात जीवन से मुक्त हो जाता है और मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। इसकी स्थापना स्वयं भगवन श्री राम ने की थी।(ॐ रामेश्वराम नमः)

12.घृष्णेश्वर-:

● महाराष्ट्र के औरंगाबाद से लगभग 29 कि.मी. की दूर पर वेरुल नामक गांव में घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग है। यह ज्योतिर्लिंग भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में आखिरी माना जाता है। कई ग्रंथों और पुराणों में उल्लेख है कि घुश्मेश्वर महादेव के दर्शन कर लेने से मनुष्य को जीवन का हर सुख मिलता है। इस ज्योतिर्लिंग को घृष्णेश्वर भी कहा जाता है। बौद्ध भिक्षुओं के द्वारा एलोरा की गुफाएँ इसी मंदिर के निकट हैं। इस मंदिर का निर्माण देवी अहिल्याबाई होल्कर ने करवाया था।(ॐ घृष्णेश्वराय नमः)

द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तुति-:

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्याम्महाकालमोंकारेश्वर परमेश्वरम्।।
केदारम्हिमवत्पृष्ठे डाकिन्याम् भीमशंकरम्।
वाराणस्याम्च विश्वेशम्त्र्यंबकम् गौतमीतटे।।
वैधनाथं चिता भूमौ नागेशं दारूकावने।
सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशं तु शिवालये।।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरूत्थायः पठेत।
सर्वपापेर्विनिमुक्तः सर्वसिद्धिं फलम् लभेत।।

मासिक शिवरात्रि व्रत, जलाभिषेक 02 अगस्त 2024 शुक्रवार

सावन शिवरात्रि व्रत से भोलेनाथ होते हैं प्रसन्न

पंचांग के अनुसार, प्रत्येक महीने कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मासिक शिवरात्रि मनाई जाती है। मासिक शिवरात्रि वर्ष के प्रत्येक महीने में और महाशिवरात्रि वर्ष में एक बार मनाते है। लेकिन श्रावण माह की शिवरात्रि का भी विशेष महत्व है। इस बार श्रावण माह की मासिक शिवरात्रि 02 अगस्त 2024 शुक्रवार को मनाई जाएगी।

मासिक शिवरात्रि पर्व का महत्व-:

● शिवरात्रि शिव और शक्ति के संगम का एक पर्व है। पंचाग के अनुसार हर महीने कृष्ण पक्ष के 14वें दिन को मासिक शिवरात्रि मनाई जाती है। यह पर्व न केवल उपासक को अपनी इंद्रियों को नियंत्रित करने में मदद करता है, बल्कि उसे क्रोध, ईर्ष्या, अभिमान और लालच जैसी भावनाओं को रोकने में भी मदद करता है। यह पर्व आध्यात्मिक उन्नति का पर्व है। इस पर्व को विधिवत मनाने से हमारे अंदर सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है।

मासिक शिवरात्रि व्रत विधि-:

● जो भक्त मासिक शिवरात्रि व्रत- उपवास करने की इच्छा रखते हैं, उन्हें मासिक शिवरात्रि का प्रारम्भ महाशिवरात्रि के दिन से या फिर श्रावण माह की शिवरात्रि से प्रारंभ करना चाहिए। इस व्रत को महिला और पुरुष दोनों कर सकते है। श्रद्धालुओं को शिवरात्रि की रात को कुछ समय जागरण, मंत्र जप इत्यादि चाहिए।

● मासिक शिवरात्रि वाले दिन आप सूर्योदय से पहले उठकर स्नान आदि कर लें।

● अब आप किसी मंदिर में जा कर भगवान शिव और उनके परिवार (पार्वती, गणेश, कार्तिक, नंदी) की पूजा करें।

● सबसे पहले आप शिवलिंग का रुद्राभिषेक जल, शुद्ध घी, दूध, शक्कर, शहद, दही, आदि से करें। ऐसी मान्यता है कि रुद्राभिषेक करने से भोलेनाथ अत्यंत प्रसन्न हो जाते हैं।

● अब आप शिवलिंग पर बेलपत्र, धतूरा और श्रीफल, पुष्प फल इत्यादि चढ़ाएं। ध्यान रहे कि बेलपत्र अच्छी तरह साफ़ किये होने चाहिए।

● शिव पूजा करते समय आप शिव पुराण, शिव स्तुति, शिव अष्टक, शिव चालीसा और शिव श्लोक या शिव का पंचाक्षरी मंत्र का जप करें।

● आप भगवान शिव की धुप, दीप, कपूर आदि से पूजा- आरती करें।

● आप इस व्रत में फल- दूध इत्यादि का सेवन कर सकते हैं। लेकिन उपासक को अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिए।

● अगले दिन भगवान शिव की पूजा करें और दान आदि करने के बाद अपना उपवास खोलें।

● भगवा-शिव की पूजा रात को निशिता काल में करना भी श्रेष्ठ माना जाता है और पूजा के समय श्री हनुमान चालीसा का पाठ भी कर सकते हैं। ऐसा करने से उपासक पर हनुमान जी की कृपा बनी रहती है। मासिक शिवरात्रि के दिन शिव पार्वती की उपासना करने से सभी कष्टों से मुक्ति मिलती है।।

2 अगस्त को सावन की शिवरात्रि है, हिन्दू धर्म में शिवरात्रि का खास महत्व है। इस दिन शिव जी का पूजन करने से पूरे सावन की पूजा का फल मिलता है तो आइए हम आपको सावन की शिवरात्रि व्रत की कथा एवं महत्व के बारे में बताते हैं।

जानें सावन की शिवरात्रि के बारे में विशेष बातें

शिवरात्रि हिन्दू परंपरा का एक बहुत बड़ा पर्व है। भगवान शिव को समर्पित यह त्योहार चतुर्दशी तिथि को मनाया जाता है। सावन शिवरात्रि पर शंकर जी की पूजा निशिता काल मुहूर्त या फिर रात्रि जागरण कर चार प्रहर करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस साल सावन शिवरात्रि पर कई दुर्लभ योग का संयोग बन रहा है। पंडितों के अनुसार फाल्गुन महीने में आने वाली महाशिवरात्रि के समान ही सावन शिवरात्रि भी फलदायी है। हिन्दू धर्म में माना जाता है कि भगवान शिव का दिन सोमवार है और सावन उनकी पूजा के लिए अच्छा महीना माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार सावन के महीने में भगवान शिव, माता पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, नंदी और अपने शिवगणों सहित पूरे महीने धरती पर रहते हैं। इसी कारण सावन की शिवरात्रि के दिन भगवान शंकर की खास पूजा की जाती है। यह तिथि भगवान शिव की पूजा-अर्चना के लिए समर्पित है। हिंदू धर्म में सावन में आने वाली मासिक शिवरात्रि का विशेष महत्व माना गया है। मान्यताओं के अनुसार, भोलेनाथ जलाभिषेक से अति प्रसन्न होते हैं। इस साल सावन की शिवरात्रि 2 अगस्त को पड़ रही है।

सावन शिवरात्रि की पूजा में इन सामग्रियों का करें इस्तेमाल

सावन शिवरात्रि की पूजा के लिए इन सामग्रियों को जरूर शामिल करना चाहिए। इससे पूजा का संपूर्ण फल प्राप्त होता है। इस दौरान आप पूजा के बर्तन, पंच मिष्ठान्न, बेलपत्र, धतूरा, भांग, बेर, गुलाल और सफेद चंदन को जरूर रखें। इसके अलावा पंच फल, दक्षिणा, गन्ने का रस, गंगाजल, जल, दूध दही, कपूर, धूप, दीप, रूई, शहद, घी और श्रृंगार की सामग्री को भी रखें।

कई नामों से जानी जाती है शिवरात्रि

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार वैसे तो वर्ष भर में शिवरात्रि 12 से 13 बार आती है। यह तिथि पूर्णिमा से एक दिन पहले त्रयोदशी को आती है। इसमें दो शिवरात्रि विशेष है उनमें सावन तथा फाल्गुन शामिल हैं। इस शिवरात्रि को अन्य नामों से बुलाया जाता है जैसे कांवर यात्रा, त्रयोदशी, शिवतरेश, भोला उपवास और महाशिवरात्रि। सावन की शिवरात्रि को खास इसलिए भी माना जाता है क्योंकि इस दिन कांवर यात्रा सम्पन्न होती है।

सावन शिवरात्रि के दिन ऐसे करें पूजा

सावन की शिवरात्रि को प्रातः उठकर स्नान से निवृत्त होकर साफ कपड़े धारण करें। मंदिर या शिवालय जाकर शिवलिंग के पास जाकर प्रार्थना करें।

दुनिया की सबसे ऊंची शिव प्रतिमा 'विश्वास स्वरूपम' का करें दर्शन, दूर-दूर से आते हैं श्रद्धालु

सावन भगवान शिव का अतिप्रिय महीना है। इस महीने श्रद्धालु भगवान शिव के दर्शन के लिए शिवालय या अन्य मंदिरों में पहुंचते हैं। भारत में एक से एक प्राचीन और विशाल शिव मंदिर है, यहां पर दुनिया की सबसे ऊंची शिव प्रतिमा है।

सावन भगवान शिव का अतिप्रिय महीना है। इस महीने श्रद्धालु भगवान शिव के दर्शन के लिए शिवालय या अन्य मंदिरों में पहुंचते हैं। भारत में एक से एक प्राचीन और विशाल शिव मंदिर है, यहां पर दुनिया की सबसे ऊंची शिव प्रतिमा भारत में ही मौजूद है। 'विश्वास स्वरूपम स्टैच्यू' दुनिया की सबसे ऊंची शिव प्रतिमा है।

कई लोग इसको स्टैच्यू ऑफ बिलीव के नाम से भी जानते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको विश्वास स्वरूपम स्टैच्यू की खासियत के बारे में बताने जा रहे हैं। आप भी अपने परिवार या दोस्तों के साथ यहां पर जा सकते हैं।

कहां है विश्वास स्वरूपम स्टैच्यू

विश्वास स्वरूपम स्टैच्यू राजस्थान में मौजूद है। राजस्थान में राजसमंद जिले के नाथद्वारा में दुनिया की सबसे ऊंची शिव प्रतिमा मौजूद है।

खासियत

राजस्थान में राजसमंद जिले के नाथद्वारा में यह शिव प्रतिमा बनी है। इस प्रतिमा की ऊंचाई 369 फीट है। जिसको विश्वास स्वरूपम नाम दिया गया है। बताया जाता है कि इस शिव प्रतिमा को बनाने में करीब 10 साल का समय लगा था। इसे नाथद्वारा की गणेश टेकरी पर बनाया गया है।

विश्वास स्वरूपम स्टैच्यू दुनिया की टॉप पांच ऊंची प्रतिमाओं की लिस्ट में शामिल है। यहां पर शिव ध्यान और अल्लड़ की मुद्रा में विराजमान हैं। बताया जाता है कि इस प्रतिमा के निर्माण में जिस धातु का इस्तेमाल किया गया है, वह सालों तक खराब नहीं होगी।

बता दें कि विश्वास स्वरूपम इतनी बड़ी प्रतिमा है कि आप करीब 20 किमी दूर से ही इसके दर्शन कर सकते हैं। अक्तूबर 2022 में इस प्रतिमा का अनावरण किया गया था।

आस्था का केंद्र

विश्वास स्वरूपम स्टैच्यू को स्टैच्यू ऑफ बिलीव और विश्वास की मूर्ति भी कहा जाता है। यह शिव भक्तों के लिए बेहद खास है। हर दिन यहां पर हजारों की संख्या में भक्त दर्शन के लिए पहुंचते हैं।

सावन के महीने में हर दिन हजारों की संख्या में श्रद्धालु यहां पर दर्शन के लिए पहुंचते हैं। खासकर इस जगह पर सावन के सोमवार को सबसे ज्यादा श्रद्धालु आते हैं। स्टैच्यू के साथ-साथ आसपास की जगहों को भी सावन के महीने में लाइट्स से सजाया जाता है।

आसपास इन एक्टिविटी का लुत्फ उठाएं

आप विश्वास स्वरूपम स्टैच्यू के आसपास कई एडवेंचर एक्टिविटी का मजा ले सकते हैं। स्टैच्यू ऑफ बिलीव के पीछे स्थित एडवेंचर पार्क में आप फ्लाइंग जंप, बंजी जम्पिंग, जिप लाइन, फॉर्मूला कार्टिंग और Rope क्लाइंब जैसी शानदार एडवेंचर एक्टिविटी कर सकते हैं।

ऐसे पहुंचे विश्वास स्वरूपम स्टैच्यू

यहां पर पहुंचना बहुत आसान है, आप यहां पर राजस्थान के किसी भी शहर से आराम से पहुंच सकते हैं। विश्वास स्वरूपम स्टैच्यू के सबसे नजदीक मावली जंक्शन रेलवे स्टेशन है। जो कई अन्य बड़े रेलवे स्टेशन से जुड़ा है। बता दें कि जयपुर से विश्वास स्वरूपम स्टैच्यू 357, अजमेर अजमेर से 222 किमी और उदयपुर से करीब 45 किमी की दूरी पर स्थित है।

सब कुछ डूब गया, असोला, फतेहपुर बेरी, की वाल्मिकी बस्ती वालों का एमसीडी, PWD, अब भी मदहोश

परिवहन विशेष। एस डी सेठी।

दिल्ली के छतर पुर असोला,फतेह पुर बेरी की वाल्मिकी बस्ती के हजारों लोग बरसात में तमाम सिविक एजेंसियों और सरकारी अमले की लापरवाही के चलते उनके घर का तमाम सामान डूबो चुके है। अब प्रशासन सिर्फ बस्ती के लोगों का डूबने का इंतजार कर रहा है। इस बावत वाल्मिकी बस्ती के निवासी देवेन्द्र प्रधान ने बताया कि गत 28 जून,26 जुलाई और अब 31 जुलाई की बरसात ने पूरी बस्ती को 5 साढे पांच फीट पानी के आगोश में ले लिया। तीनों दिन की भारी बरसात के बाद घरों में 4-5 फीट तक पानी भर गया। हमारा सारा सामान जिनमें लकडी बेड,टेबल, सौफा ,बिस्तरे, खाने -पीने का सामान, इलैक्ट्रिक में टीवी ,लैपटाप, समेत बच्चों की कॉपी किताबे सब डूब कर खराब हो गयी। छोटे बच्चौं को रात-रात भर बिन बिजली के गौदियों में उठाए घूमते रहे। घर से बाहर कदम रखते ही वहां भी 5 फीट तक पानी ही पानी भरा रहा। देवेन्द्र के मुताबिक बिना लाइट के गर्मी में बस्ती वाले उबलते रहे।इस दौरान पुलिस और फायरब्रिगेड को भी फोन किया गया ,घंटी बजती रही पर उठाया नहीं गया। इसी तरह एमसीडी के सेंट्रलाइज नंबर 155203, पर भी कई-कई बार फोन किया गया ।लेकिन किसी ने भी आपातकालीन 24 घंटे सेवा के नाम पर रिसीव करने की जहमत तक नहीं उठाई गई। यहां तक की तीनों क्षेत्रीय जन प्रतिनिधि विधायक करतार सिंह तंवर, निगम पार्षद सुरेंद्र सिंह तंवर और सांसद रामबीर सिंह विधुडी तक ने अपने डूबते हुए लोगों की सुध तक नही ली। फोन तक नहीं रिसीव किया गया। आलम ये है कि आज तक बस्ती में दौरा भी नहीं किया गया। जबकि वाल्मिकी बस्ती के लोगो ने आसमानी आफत से जलभराव में जीना मुश्किल की शिकायत तक दे चुके है। हालत ये है कि अब बस्ती में जलजनित बिमारियों ने अपने पैर पसारने शुरू कर दिए है। घर -घर में बुखार और मच्छर पनप रहे हैं।, मलेरिया, डेंगू, चिकन गुनिया का डर सता रहा है। बस्ती के देवेन्द्र प्रधान ने बताया कि अगर प्रशासन ने बस्ती में बार-बार के जलभराव का स्थाई निदान नहीं किया गया, तो लोग तीनों जनप्रतिनिधियों समेत गैरजिम्मेदार निगम, पीडब्ल्यूडी, के खिलाफ आंदोलन, धरना-प्रदर्शन समेत सडक जाम तक करने को मजबूर होगे।

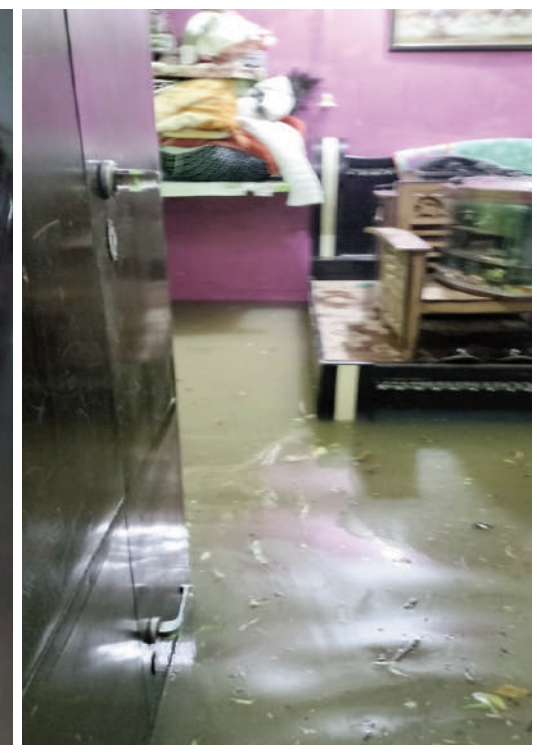

साइबर खतरे के प्रति जागरूकता के लिए विनीत कुमार सिंह, अक्षय ओबेरॉय ने साइबर सुरक्षा मुख्यालय का किया दौरा

सुषमा रानी

सुसी गणेशन द्वारा निर्देशित और विनीत कुमार सिंह, उर्वशी रौतेला और अक्षय ओबेरॉय अभिनीत आगामी फिल्म "घुसपैठिया" की टीम ने कफ परेड के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में साइबर सुरक्षा मुख्यालय का दौरा किया। इस दौरे में महाराष्ट्र साइबर विभाग के आईजीपी यशस्वी यादव आईपीएस के साथ बैठक शामिल थी, जिसमें भारत और दुनिया भर में साइबर धोखाधड़ी के बारे में जागरूकता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया।इस दौरे के दौरान, अभिनेता विनीत कुमार सिंह और अक्षय ओबेरॉय ने निर्देशक सुसी गणेशन के साथ साइबर अपराधों के प्रचलित मुद्दों के बारे में आईजीपी यशस्वी यादव के साथ एक व्यावहारिक चर्चा की। विनीत कुमार सिंह ने कहा, "साइबर धोखाधड़ी एक बढ़ता हुआ खतरा है, और लोगों को ऑनलाइन सामना करने वाले खतरों के बारे में जागरूक होना महत्वपूर्ण है। हमारा उद्देश्य अपने मंच का उपयोग शिक्षित करने और सुरक्षा के लिए करना है।" अक्षय ओबेरॉय ने जोर देकर कहा, "साइबर अपराधियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली रणनीति को समझकर, हम खुद को और अपने प्रियजनों को बेहतर तरीके से सुरक्षित कर सकते हैं। यह दौरा हमारी आँखें खोलने वाला रहा है, और हम इस जागरूकता को फैलाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।"

निर्देशक सुसी गणेशन ने साझा किया, "हमारी फिल्म 'घुसपैठिया' न केवल मनोरंजन करती है, बल्कि साइबर खतरों के खतरों को उजागर करने के एक बड़े उद्देश्य को भी पूरा करती है। साइबर विभाग के साथ यह बातचीत इन अपराधों के खिलाफ लड़ने के हमारे संकल्प को मजबूत करती है।" आईजीपी यशस्वी यादव ने अपना समर्थन व्यक्त करते हुए कहा, "साइबर अपराध के खिलाफ हमारी लड़ाई में इस तरह की पहल महत्वपूर्ण है। फिल्म उद्योग की एक शक्तिशाली आवाज है, और मैं 'घुसपैठिया' की टीम की सराहना करता हूँ कि उन्होंने जागरूकता पैदा करने और पीढ़ियों को आगे आने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए अपने मंच का उपयोग किया।"

"घुसपैठिया" के निर्माताओं ने #MyGhuspaithiyaStory अभियान भी शुरू किया है, जिसमें साइबर खतरों का सामना करने वाले व्यक्तियों से अपने अनुभव साझा करने और 1 लाख का नकद पुरस्कार जीतने का आग्रह किया गया है। मीडिया के सम्मानित सदस्य इन कहानियों का मूल्यांकन करेंगे, यह सुनिश्चित करते हुए कि हर आवाज़ सुनी जाए और उसका सम्मान किया जाए। टीम साइबर खतरों के खतरों के बारे में पीढ़ियों को बोलने और दूसरों को शिक्षित करने के लिए एक मंच प्रदान करके समाज को एक सुरक्षित स्थान बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

विद्रोही गुट के खिलाफ पार्टी अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल ने सख्त कदम उठाए

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली। शिरोमणि अकाली दल को दोफाड़ करने की कोशिश करने वाले विद्रोही गुट के खिलाफ पार्टी अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल ने सख्त कदम उठाए हैं. जब कि बागी गुट का यह कर्तव्य था कि जब पार्टी अध्यक्ष ने श्री अकाल तख्त साहिब के सामने अपना सिर झुकाते हुए अपना पक्ष लिखित रूप में रखा था, तब जत्थेदार अकाल तख्त साहिब उन्हें पंज सिंहों के बीच इस मामले पर चर्चा करने के बाद ही अपना निर्णय देने के लिए कहा था. इसलिए अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार साहिब द्वारा दिए जाने वाले फैसले तक विद्रोही गुट को किसी भी तरह का किन्तु परन्तु करने से हिचकिचाना चाहिए था. हालाँकि, उनकी बार-बार की जा रही हरकतों के कारण सुखबीर बादल को सख्त कार्रवाई करनी पड़ी, जबकि उन्हें भी जत्थेदार साहिब के फैसले तक इंतजार करना चाहिए था, क्योंकि अगर हम पार्टी में असंतुष्ट सदस्यों को साथ बैठाकर और विचारों के माध्यम से कुछ मानेंगे और कुछ मनाएंगे की जगह बाहर का रास्ता दिखायेंगे फिर कौन हमारे साथ जुड़ेगा और पार्टी अपना अस्तित्व कैसे फैलाएगी. इसलिए हम पार्टी अध्यक्ष सुखबीर बादल से अपील करते हैं कि वे पुराने/नए सदस्यों और पार्टी कार्यकर्ताओं को फिर से पार्टी में शामिल करने के लिए पांच सदस्यीय कमेटी बनाएं जो उनकी बात को समझकर उन्हें पार्टी में बनाए रख सके. इससे जहां पार्टी की प्रतिष्ठा बढ़ेगी वहीं बड़ी संख्या में लोग पार्टी से जुड़ने लगेंगें.

यह शब्द शिरोमणि अकाली दल दिल्ली इकाई की महिला विंग की मुख्य सेवादार बीबी रणजीत कौर ने मीडिया को जारी किये गए अपने एक बयान में व्यक्त किये।

अलर्ट:बिन बरसात स्कूलों में आतिशी ने की छुट्टी

परिवहन विशेष न्यूज

परिवहन विशेष। एसडी सेठी ।दिल्ली की केजरीवाल सरकार को अब पानी से डर लगने लगा है। दरअसल गुरूवार को 100 मिमी. से ऊपर बरसे बरसाती पानी ने एक बार फिर ओल्ड राजेन्द्र नगर इलाके से लेकर कई अंडर पास समेत भीड-भाड वाली सडको पर घुटने-घुटने तक जलभराव कर दिया। इससे पहले शनिवार को एमसीडी के निकम्मेपन से जलभराव में तीन छात्रो की मौत से भी सबक नहीं लिया। और पूरी दिल्ली में जलभराव की स्थिति पैदा हो गई। जल मंत्री आतिशी को दिल्ली में एमसीडी के जलजले की सूरते हाल पता चल गई है। इसी के चलते गुरूवार 1 जुलाई को तमाम स्कूलों की घंटी बजाकर छुट्टी कर दी। मंत्री ने जलभराव के समाधान की बजाए छुट्टी जैसे आसान तरीकों को अपना लिया है। परेशान जनता ने यहां तक कह डाला कि अब इतिंहा हो गयी है। आतिशी की भी छुट्टी कर देनी चाहिए। दरअसल आसमानी आफत के आगे बेबस दिखते राजधानी दिल्ली के प्रशानिक ढांचे के फेल्योर की और इशारा कर रहा है। आसमानी आफत के आगे वल्ड क्लास सिटी दिल्ली को शासकों ने किस हाल में ला खडा किया है। इससे तो ये ही लगता है कि ओल्ड राजेन्द्र नगर के बाद दिल्ली सरकार अब किसी तरह का जोखिम नहीं लेना चाहती है। जलमंत्री आतिशी ने सभी स्कूलो और कोचिंग संस्थानो को विशेष सतर्कता बरतने को कहा गया है ।लेकिन यह भी कड़वी सच्चाई है कि जलभराव को लेकर एमसीडी, पीडब्ल्यूडी ,समेत तमाम सिविक एजेंसियों के हेल्प लाइन नंबर काम नहीं कर रहे है। घंटियां घनघनाती रहती है और सरकारी अमला चैन की नींद में सोया रहता है। तब किससे उम्मीद करे? दिल्ली सरकार ने रेड एलर्ट पर स्कूलों की छुट्टी तो कर दी है लेकिन बचाव-बचाव की चीखें मारते हुए डूबने वालो की सुनने वाला कोई नहीं है। बता दें कि छतर पुर के असौला गांव के फतेह पुर बेरी की वाल्मिकी बस्ती तीन बार बरसाती आफत में डूब चुकी है। 28 जून, 27 जुलाई, और 31 जुलाई को वाल्मिकी बस्ती मे बारिश का पानी घरो में 5 फीट तक भर गया। वाल्मिकी बस्ती के लोग एमसीडी के आपातकालीन हेल्प लाइन नंबर-155203 पर फोन लगाते रहे। किसी ने फोन तक नहीं उठाया। यहां तक की पुलिस और फायरब्रिगेड कंट्रोल रूम में खूब फोन मिलाया। घंटिया बजती रही, अटैंड नहीं किया गया।अब 155203 नंबर पर टेप चल रहा है कि यह नंबर उपलब्ध नहीं है। जबकि सरकार ने दो दिन पहले ही तमाम मीडिया में इस नंबर पर आपातकालीन 24 घंटे सेवाएं मिलने का दावा किया गया था। आज भी बस्ती के लोग 5 फीट पानी में अपने बच्चों को लेकर हर सरकारी अमले से लेकर छतर पुर के विधायक करतार सिंह तंवर, पार्षद सुरेंद्र तंवर और सांसद रमेश विधुडी को बस्ती में आने की गुहार करते रहे। लेकिन तीनों जन प्रतिनिधियों ने क्षेत्र के लोगों की अब तक सुध तक नही ली है। यहां के लोग तीनों जन प्रतिनिधियों से खासे खफा हैं।

पंजाबी कलाकार डी कैली ने अपने आगामी एल्बम से 'पर्सनल जेट' के साथ धूम मचाई

सुषमा रानी

डी कैली का नवीनतम सिंगल पर्सनल जेट शहरी हिप-हॉप को रेगे वाइब्स के साथ मिलाता है, जो उनकी भारतीय जड़ों और कैलिफ़ोर्नियाई प्रभाव को दिखाता है।

पंजाबी संगीत के उभरते सितारे डी कैली ने हाल ही में अपना नवीनतम सिंगल 'पर्सनल जेट' रिलीज़ किया है, जो उनके बहुप्रतीक्षित एल्बम 'अर्बन डोमिनेशन' के लिए मंच तैयार करता है। कैलिफ़ोर्निया की जीवंत संस्कृति में पले-बढ़े, उन्होंने अपनी भारतीय विरासत को शहरी हिप-हॉप की धड़कनों के साथ मिलाकर एक अनूठी ध्वनि तैयार की है।

'पर्सनल जेट' डी कैली की यात्रा और आकांक्षाओं का प्रतीक है, जो लॉस एंजिल्स में शूट किए गए अपने आकर्षक संगीत वीडियो के माध्यम से एक शानदार 'जेट-सेटिंग' जीवनशैली को प्रदर्शित करता है। वीडियो में एक निजी जेट और एक आलीशान बीच बंगला दिखाया गया है, जबकि ट्रैक का शहरी हिप-हॉप और रेगे स्टाइल एक सहज, लयबद्ध प्रवाह प्रदान करता है जो कलाकार को दर्शाता है।

अपनी द्वि-सांस्कृतिक परवरिश पर विचार करते हुए, डी कैली कहते हैं, ₹कैलिफ़ोर्निया में पले-बढ़े, मैंने हिंदी और पंजाबी संगीत के माध्यम से अपनी भारतीय विरासत से जुड़ने का एक माध्यम है । दो शहरों की मेरी यात्रा ने मुझे दोनों संस्कृतियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया, जो मेरे कलाकार नाम - डी कैली में झलकता है।₹

दुनिया का यह मिश्रण न केवल एक कथा है, बल्कि एक रणनीति भी है जिसने महत्वपूर्ण सहयोगों को जन्म दिया है। वे कहते हैं, ₹वर्षों के अभ्यास और सीखने के बाद, मैंने आखिरकार अपनी अनूठी आवाज़ पा ली है। इक्का, फतेह, परधान जैसे कलाकारों के साथ सहयोग करना और अपने वीडियो 'बार्बी डॉल' में अभिनेत्री सनी लियोन को शामिल करना मेरे अब तक के करियर का मुख्य आकर्षण रहा है।₹ डी कैली की डिस्कोग्राफी में 'डेसिफोर्निया', 'व्हाट टू डू', 'रेडियो गर्ल', 'चोरनी' और हाल ही में कई हिट गाने शामिल हैं। इन ट्रैक्स ने YouTube पर लाखों व्यूज बटोरे हैं और शहरी पंजाबी संगीत परिदृश्य में एक नए हिटमेकर के रूप में उनकी प्रतिष्ठा को मजबूत किया है। हालाँकि, डी कैली का विज़न संगीत और मनोरंजन से परे है। युवा पीढ़ी को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने के लिए दृढ़ संकल्पित, उनका उद्देश्य उन नकारात्मक विषयों को बढ़ावा देने से दूर रहना है जो अक्सर इस शैली से जुड़े होते हैं और संगीत परिदृश्य में काफी प्रचलित हैं। रिकॉर्डिंग आर्ट्स में पृष्ठभूमि के साथ, उनके विविध प्रभाव जैज़ी बी और बोहेमिया से लेकर डॉ. ड्रे और एमिनेम तक हैं, जिससे उन्हें ऐसा संगीत बनाने का मौका मिला जो सांस्कृतिक सीमाओं को पार करता है।

'पर्सनल जेट' गायक की महत्वाकांक्षा और उपलब्धि का एक बयान है। डी कैली अपने एल्बम 'अर्बन डोमिनेशन' पर अंतिम रूप दे दिया, और अपने प्रशंसकों को शहरी पंजाबी संगीत की अपनी दुनिया में एक शानदार अनुभव देने का वादा किया हैं।

यह हादसा नहीं, हत्या है, भाजपा और एलजी मौन हैं: संजय सिंह

सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने मयूर विहार फेस-3 में केंद्र सरकार के डीडीए द्वारा बनाए जा रहे नाले में डूबने से हुई मां-बेटे की मौत पर एलजी वीके सक्सेना का इस्तीफा मांगा है। ''आप'' के वरिष्ठ नेता संजय सिंह का कहना है कि बुधवार को हुई भारी बारिश के बाद निर्माणाधीन नाले में पानी भर गया। डीडीए ने वहां कोई बोर्ड तक नहीं लगा रखा था, ताकि लोगों को पता चल सके। उस नाले में ढाई साल का बच्चा गिर गई। उसे डूबता देख बचाने आई उसकी मां भी पानी में डूब गई और दोनों की दुखद मौत हो गई। यह हादसा नहीं, हत्या है। इसके लिए सीधे तौर पर एलजी के अधीन डीडीए जिम्मेदार है, लेकिन इस पर भाजपा और एलजी पूरी तरह मौन हैं। वहीं, स्थानीय विधायक कुलदीप कुमार का कहना है कि डीडीए ने जारी सुरक्षा निर्देशों का पालन नहीं किया। इसलिए यह हादसा हुआ। एलजी को दिल्ली सरकार के काम रोकने का बड़ा शौक है, लेकिन अपने अधीन विभागों पर कोई ध्यान नहीं है।

आम आदमी पार्टी के राज्य सभा सदस्य संजय सिंह, वरिष्ठ नेता कुलदीप कुमार और मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने मयूर विहार में मां-बेटी की नाले में डूबने से हुई दुखद मौत को लेकर गुरुवार को पार्टी मुख्यालय में संयुक्त प्रेसवार्ता की। संजय सिंह ने कहा कि बुधवार को दिल्ली समेत देश के कई राज्यों में भयंकर बारिश हुई। जिसके कारण कई जगहों पर जलभराव हुआ। हमारे मंत्री, विधायक और पार्षदों ने अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार मौके पर जाकर काम किया। अधिकारियों और कर्मचारियों को बुलाकर जो भी जरूरी इंतजाम किए जा सकते थे, वो किए गए। लेकिन इस बीच एक अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण घटना हुई और भाजपा और दिल्ली के एलजी इस पर पूरी तरह से मौन हैं। इन लोगों के मुंह से एक शब्द नहीं निकल रहा है। इसकी वजह ये है कि दिल्ली बॉर्डर पर मयूर विहार फेज 3 में एलजी और केंद्र के अधीन डीडीए नाले का पुनर्निर्माण करा रहा था। डीडीए ने घोर लापरवाही करते हुए नाले को नहीं ढका। वहां किसी तरह का बोर्ड नहीं लगाया गया, ताकि लोगों को पता चले कि वहां निर्माण कार्य चल रहा है। इस बीच एक ढाई साल का बच्चा इस नाले में गिर गया और उसे बचाने के लिए गई उसकी मां भी नाले में गिर गई, और मां-बेटे दोनों की मौत हो गई। यह हादसा नहीं, हत्या है। और इस हत्या के लिए डीडीए के वे लोग जिम्मेदार हैं जिन्होंने यह निर्माण कार्य करते हुए जरा सी भी सावधानी नहीं बरती।

इस दौरान कोंडली से आम आदमी पार्टी के विधायक कुलदीप कुमार ने कहा कि यह बहुत दुख की बात है कि डीडीए की नाकामी की वजह से एक मां और मासूम बच्चे की मौत हो गई। मेरे कई बार आग्रह करने और पत्र लिखने के बाद डीडीए ने आखिरकार दिल्ली और यूपी की खोड़ा कॉलोनी के बीच इस नाले का पुनर्निर्माण का कार्य शुरू करवाया। लेकिन इसके बावजूद इसमें इतनी लापरवाही बरती गई कि निर्माण कार्य के दौरान वहां एक बोर्ड तक नहीं लगाया गया, न ही वहां कोई बैरिकेडिंग की गई, वह एरिया पूरी तरह से खुला था। बुधवार रात को बारिश के समय एक ढाई साल का बच्चा उस नाले में गिर गया, जब उसकी मां उसे बचाने के लिए गई तो वह भी उसमें गिर गई। जिसकी वजह से दोनों की मौत हो गई। डीडीए विभाग सीधे तौर पर दिल्ली के एलजी के अधीन आता है। हम बार-बार कहते हैं कि उन्हें दिल्ली जल बोर्ड के मामले में दखल देने, अधिकारियों को धमकाने और दिल्ली के कामों में रोड़े पैदा करने का बहुत शौक है। लेकिन जो विभाग सीधे तौर पर उनके अधीन आते हैं, उस पर उनका रत्ती भर भी ध्यान नहीं है। यह कोई आम हादसा नहीं, बल्कि हत्या है जो डीडीए के अधिकारियों की लापरवाही के चलते हुई है। एलजी ऐसे अफसरों को कब सजा देंगे? उस परिवार को न्याय मिलना चाहिए और उन अधिकारियों को निलंबित करके उनके खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज होना चाहिए। उपराज्यपाल सबके सामने आकर इसकी जिम्मेदारी लें कि उनकी लापरवाही के कारण एक मां और मासूम बच्चा इस दुनिया से चले गए। इस घटना के दौरान मैं पीड़ित परिवार के साथ पूरे समय मौजूद था। इस दुख की घड़ी में हम उनके साथ खड़े हैं। लेकिन जो लोग बात-बात पर राजनीति करते थे, वो लोग गायब हैं।

आम आदमी पार्टी की मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने कहा कि हम सब जानते हैं कि दिल्ली में कई सारी एजेंसियां काम करती हैं। एलजी को दिल्ली सरकार के काम रोकने का तो बहुत शौक है लेकिन अपने काम समय से और जिम्मेदारी से करने के लिए वे कभी नजर नहीं आते। सुप्रीम कोर्ट ने भी अक्टूबर 2023 में कहा था कि केवल अपने हाथ में पावर लेने की होड़ में दिल्ली की हालत खराब की जा रही है। डीडीए सीधे तौर पर एलजी के तहत आता है। यह घटना बेहद दुखद है, लेकिन इसे टाला जा सकता था। जब इतनी बारिश हो रही है और पता है कि दिल्ली और उत्तराखंड में बादल फटा है, जिसकी वजह से जलभराव की पूरी संभावना है, तो इतना बड़ा नाला खुला कैसे छोड़ दिया गया? उसे क्यों नहीं ढका गया? उस नाले को ढकना चाहिए था, वहां बोर्ड लगाया जाना चाहिए था। डीडीए और एलजी को केवल इतना करना है कि वे अपना काम ढंग से कर लें। दिल्ली सरकार के कामों को रोकना उनकी प्राथमिकता तो है ही, लेकिन वे अपना काम सही से करें। दिल्ली में ही नहीं भाजपा के तहत पूरे भारत में जहां-जहां निर्माण कार्य हुए हैं, चाहे वो जम्मू की ऑल वेदर सड़क हो, एयरपोर्ट टर्मिनल हो या एक्सप्रेस वे हो। इन सबमें इन्होंने केवल अपनी जेबें भरी हैं। इन्हें लोगों की जान की कोई परवाह नहीं है। ये केवल 2 लाख का मुआवजा देकर अपनी जान छुड़ा लेते हैं। ऐसे लोगों पर हत्या का मामला दर्ज होना चाहिए, तभी इनकी जवाबदेही तय होगी। आज ये लोग मीडिया के सामने नहीं आ रहे हैं, लेकिन उनसे सवाल पूछा जाना चाहिए कि क्या इस हादसे को टाला जा सकता था?

ग्रेटर नॉएडा के आधे गाँवों में पानी की सप्लाई आजतक नहीं - आरटीआई

नोवरा अध्यक्ष की आरटीआई में हुए चौंकाने वाले खुलासे

ग्रेटर नॉएडा - देश के सबसे विकसित क्षेत्रों में शामिल नॉएडा और ग्रेटर नॉएडा को प्राधिकरण के माध्यम से चलाने के परिणाम आम जनता को भुगतने पड़ रहे हैं , एक आरटीई जो की नॉएडा विलेज रेसिडेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री रंजन तोमर ने दाखिल की थी के जवाब में ग्रेटर नॉएडा प्राधिकरण कहता है की प्राधिकरण के अंतर्गत आने वाले 122 गाँवों में से मात्र 66 में ही जलापूर्ति की जा रही है जबकि 28 गाँवों में जलापूर्ति के लिए काम जारी है , 12 गाँवों में आदर्श ग्राम के रूप में काम किया जा रहा है , 14 गाँवों में आंगणन स्वीकृति की प्रक्रिया चल रही है जबकि 2 गाँवों में आबादी न होने के कारण कार्य प्रस्तावित नहीं है।

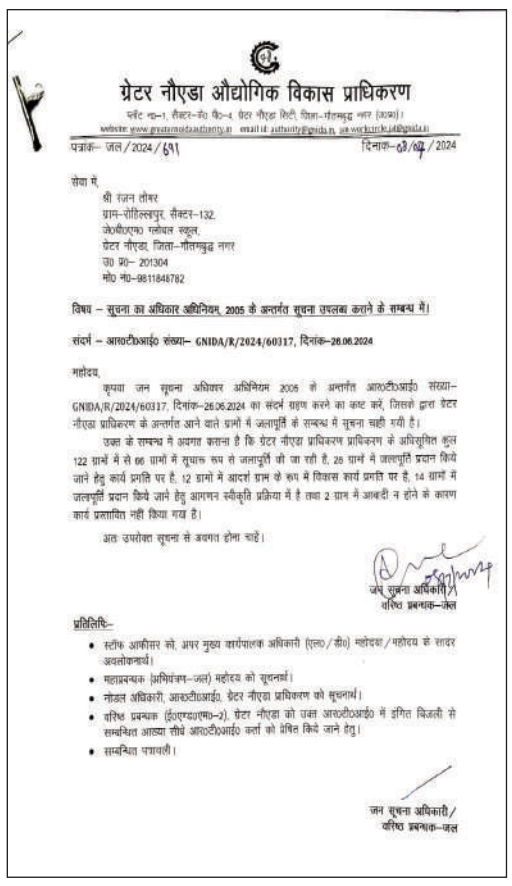

नॉएडा की तर्ज़ पर गाँवों के साथ भेदभाव

उपरोक्त जानकारी से यह सिद्ध होता है की ग्रेटर नॉएडा प्राधिकरण भी नॉएडा की तरह अपने भीतर आने वाले गाँवों के साथ भेदभाव और सौतेला व्यव्हार करता है इससे यह भी स्पष्ट है की आधे गाँवों में पानी की सप्लाई आजतक नहीं पहुंची है , जो बेहद दुखद है , सीईओ को तुरंत इस बात का संज्ञान लेकर जल्द से जल्द कार्य पूर्ण करवाने चाहिए। इक्कीसवी सदी के सबसे विकसित शहरों में से एक में शामिल इस शहर के गाँवों के साथ हो रहे व्यव्हार प्रदेश की तरक्की अपूर्ण रहेगी।

ग्रेटर नौएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण
प्लॉट नं०-1, सैक्टर-नॉ० पै०-4, ग्रेटर नौएडा सिटी, जिला-गौतमबुद्ध नगर (उ०प्र०)।
website: www.greaternoidaauthority.in email id: authority@gnida.in

पत्रांक- जल/2024/691 दिनांक- 03/07/2024

सेवा में,
श्री रंजन तोमर
ग्राम-रोहिल्लापुर, सैक्टर-132
जे०पी०एम० ग्लोबल स्कूल,
ग्रेटर नौएडा, जिला-गौतमबुद्ध नगर
उ० प्र०- 201304
मो० नं०-9811846782

विषय - सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के अन्तर्गत सूचना उपलब्ध कराने के सम्बन्ध में।

संदर्भ - आर०टी०आई० संख्या- GNIDA/R/2024/60317, दिनांक-26.06.2024

महोदय,

कृपया जन सूचना अधिकार अधिनियम 2005 के अन्तर्गत आर०टी०आई० संख्या-GNIDA/R/2024/60317, दिनांक-26.06.2024 का संदर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें, जिसके द्वारा ग्रेटर नौएडा प्राधिकरण के अन्तर्गत आने वाले ग्रामों में जलापूर्ति के सम्बन्ध में सूचना चाही गयी है।

उक्त के सम्बन्ध में अवगत कराना है कि ग्रेटर नौएडा प्राधिकरण प्राधिकरण के अधिसूचित कुल 122 ग्रामों में से 66 ग्रामों में सुचारु रूप से जलापूर्ति की जा रही है, 28 ग्रामों में जलापूर्ति प्रदान किये जाने हेतु कार्य प्रगति पर है, 12 ग्रामों में आदर्श ग्राम के रूप में विकास कार्य प्रगति पर है, 14 ग्रामों में जलापूर्ति प्रदान किये जाने हेतु आगणन स्वीकृति प्रक्रिया में है तथा 2 ग्राम में आबादी न होने के कारण कार्य प्रस्तावित नहीं किया गया है।

अतः उपरोक्त सूचना से अवगत होना चाहें।

जन सूचना अधिकारी/
वरिष्ठ प्रबन्धक-जल

प्रतिलिपि-
- स्टॉफ आफीसर को, अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी (एल०/सी०) महोदया/महोदय के सादर अवलोकनार्थ।
- महाप्रबन्धक (अभियन्त्रण-जल) महोदय को सूचनार्थ।
- नोडल अधिकारी, आर०टी०आई०, ग्रेटर नौएडा प्राधिकरण को सूचनार्थ।
- वरिष्ठ प्रबन्धक (ई०एण्ड०एम०-2), ग्रेटर नौएडा को उक्त आर०टी०आई० में इंगित बिजली से सम्बन्धित आख्या सीधे आर०टी०आई० कर्ता को प्रेषित किये जाने हेतु।
- सम्बन्धित पत्रावली।

जन सूचना अधिकारी/
वरिष्ठ प्रबन्धक-जल

गाजीपुर इलाके में जलभराव में नहीं दिखा खुला नाला, डूब कर मां-बेटे की मौत

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद की महिला अपने बच्चे के साथ नाले में गिर गई। वह बाजार गई हुई थी। नाला ओवरफ्लो होने के चलते उसे पता नहीं चला कि यहां नाला है। जब इसकी जानकारी मिली तो खोड़ा पुलिस को वह जगह दिल्ली के गाजीपुर थाना क्षेत्र की लगी। इस वजह से दोनों राज्यों की पुलिस सीमा विवाद में उलझ गईं।

गाजियाबाद/नईदिल्ली। बुधवार रात हुई तेज वर्षा से खोड़ा सीमा से सटे दिल्ली के गाजीपुर थाना क्षेत्र में उफनते नाले में डूब कर तीन साल के मामूस व उसकी मां की मौत हो गई। इनके डूबने के कई घंटे बाद दोनों के शव को बरामद किया जा सका।

पहले गाजियाबाद व दिल्ली पुलिस सीमा विवाद में उलझी रही। बाद में मामला दिल्ली के गाजीपुर थाना क्षेत्र का निकला। पुलिस ने शव को लाल बहादुर शास्त्री अस्पताल के मोर्चरी में रखवा दिया है। बृहस्पतिवार को शवों का पोस्टमार्टम होगा।

इनकी पहचान 22 वर्षीय तनुजा व तीन साल के प्रियांशु के रूप में की गई है। तनुजा अपने पति गोविंद व बेटे प्रियांशु के सथ गली नंबर चार अंबेडकर नगर के प्रकाश नगर में रहती थी। तनुजा बेटे प्रियांशु के साथ बुधवार शाम को गाजीपुर थाना क्षेत्र में लगने वाले साप्ताहिक बाजार में गई थी। इस बीच तेज वर्षा शुरू हो गई।

ओवरफ्लो हो रहा था नाले का पानी

महिला ने काफी देर तक वर्षा के बंद होने का इंतजार किया। जब वर्षा बंद नहीं हुई तो वह बेटे के साथ घर की ओर निकली। रास्ते में 15 फीट गहरा नाला है। नाले का पानी ओवरफ्लो हो रहा था। सड़क व नाले का पता नहीं चल रहा था। इससे महिला का पैर नाले में चला गया। इसके बाद महिला व बेटे का पता नहीं चला। रात 8:12 बजे हादसे की सूचना खोड़ा पुलिस को दी गई।

खोड़ा पुलिस मौके पर पहुंची तो पता चला कि मामला दिल्ली के गाजीपुर थाना क्षेत्र का है। पुलिस सीमा विवाद में उलझ गई। हालांकि खोड़ा पुलिस महिला को नाले में तलाश कराने में जुटी रही।

नाले की सफाई में बुलडोजर लगाया गया। गोताखोर बुलाए गए। बुधवार आधी रात के करीब दोनों के शव नाले से मिले। नाले की दीवार दिखती तो शायद न गिरते : वर्षा होने पर नाले की दीवार नहीं दिख रही थी। दीवार दिखती तो दोनों की जान बच जाती।

बाजार गई थी महिला

गोविंद अपनी पत्नी तनुजा, बेटे प्रियांशु के साथ गली नंबर चार अंबेडकर नगर प्रकाश नगर में रहते थे। उनकी पत्नी तनुजा बेटे प्रियांशु के साथ बुधवार शाम को गाजीपुर थाना क्षेत्र में लगने वाले साप्ताहिक बाजार में गई थी। तभी तेज वर्षा शुरू हो गई।

महिला ने काफी देर तक वर्षा बंद होने का इंतजार किया, लेकिन जब बारिश बंद नहीं हुई तो वह बेटे के साथ घर की ओर निकल गई। रास्ते में 15 फीट गहरा नाला है। नाले का पानी ओवरफ्लो हो रहा था। सड़क और नाले का पता नहीं चल रहा था। इस वजह से महिला का पैर नाले में चला गया।

सीमा विवाद में उलझ गई पुलिस

इसके बाद महिला व उसके बेटे का पता नहीं चला। रात 8:12 बजे हादसे की सूचना खोड़ा पुलिस को दी गई। खोड़ा पुलिस मौके पर पहुंची तो पता चला कि मामला दिल्ली के गाजीपुर थाना क्षेत्र का है। इसके बाद पुलिस सीमा विवाद में उलझ गई।

खोड़ा पुलिस विवाद में जुटी रही

हालांकि खोड़ा पुलिस महिला को नाले में तलाश कराने में जुटी रही। देर रात एक बजे पुलिस ने महिला व उसके बच्चे का शव बरामद कर लिया। महिला को तलाश करने के लिए गोताखोरों की टीम भी बुलाई गई। वहीं, बुलडोजर से नाले के मलबे के साफ किया गया।

नाले की दीवार दिखती तो बच जाती जान

नाले के निर्माण को आधा-अधूरा छोड़ दिया गया। वर्षा होने पर नाले की दीवार नहीं दिख रही थी। यदि नाले की दीवार दिखती तो महिला उसमें गिरने से बच जाती। वहीं नाले के निर्माण को भी दिल्ली सीमा के अंतर्गत बताया गया। ऐसे में अधिकारी एक दूसरे पर जिम्मेदारी का ठीकरा फोड़ते हुए नजर आए।

अन्तर्राज्यीय वाहन चोर गिरोह का सरगना समेत पांच गिरफ्तार, पांच मिनट में उड़ा देते थे वाहन; लग्जरी समेत 17 कार बरामद

नोएडा पुलिस ने एक अन्तर्राज्यीय वाहन चोर गिरोह का पर्दाफाश किया है। पुलिस ने गिरोह के सरगना समेत पांच सदस्यों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपितों के पास से लग्जरी समेत 17 कार बरामद की गई है। पूछताछ में पता चला कि ये आरोपित पांच मिनट में ही कार को चोरी कर लेते थे। पढ़िए इस गिरोह के बारे में पूरी जानकारी।

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा। सेक्टर 24 कोतवाली, स्वाट व सीआरटी पुलिस टीम ने अन्तर्राज्यीय वाहन चोरी करने वाले गिरोह के सरगना समेत पांच सदस्यों को सेक्टर 54 चौकी कट के पास से गिरफ्तार किया। इनमें चोरी के वाहन खरीदने वाला भी शामिल है।

लग्जरी समेत 17 कार बरामद

टीम ने गिरोह से दिल्ली व गौतमबुद्ध नगर से चोरी की इनोवा, एंडेवर लग्जरी समेत 17 कार बरामद की हैं। पांचों आरोपितों पर दिल्ली, यूपी व एमपी के कई थानों में 98 मुकदमे दर्ज हैं। पुलिस ने चोरों के लंबे समय से चोरी की वारदात करने और महज 100 वाहन चोरी करने का दावा किया है।

ये हैं गिरफ्तार किए गए आरोपित

डीसीपी नोएडा रामबदन सिंह ने बताया कि टीम ने गिरोह के सरगना देहली गेट मेरठ के आरिफ उर्फ डोरामोन, खलीलाबाद संतकबीरनगर के अब्बास उर्फ इकराम, छाता मथुरा के कप्तान उर्फ भूरा उर्फ भूट्टन, खिस्तयैजान मेरठ व रामपुरा कोटा राजस्थान के अब्दुल रज्जाक को गिरफ्तार किया।

पूछताछ में चोरों ने बताया कि सभी आरोपित शातिर चोर हैं और दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश समेत कई अन्य राज्यों में सक्रिय हैं। आरिफ पर 30, अब्बास पर 23, कप्तान पर 22, आसिफ पर 12, अब्दुल पर 11 मुकदमे दर्ज हैं।

ऑन डिमांड करते थे वाहन चोरी

यह गिरोह ऑन डिमांड चोरी कर वाहनों को देश के विभिन्न कोने में मनमाफिक रेट पर बेच देते हैं। चेसिंस, इंजन व कार नंबर बदलकर पकड़ में नहीं आते हैं। वाहन चोरी के लिए की प्रोग्रामिंग पेड की मदद से कार की ईसीएम को रिप्रोग्राम कर देते हैं। महज पांच मिनट में कार चोरी कर ले जाते हैं। फिर वाहनों से नंबर प्लेट हटाकर ग्रीन बेल्ट, पार्किंग में खड़ा कर देते।

बताया गया कि कारों के फर्जी पेपर व नंबर प्लेट बदलकर पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, चेन्नई व नार्थ ईस्ट प्रदेशों में बेच देते। आरोपित भी कक्कड़ गिरोह की तरह पुलिस से बचने के लिए व्हाट्सएप से जुड़कर काम करते व कार खराब होने की तकनीक अपनाकर वाहनों को बॉर्डर पार कराते हैं।

इतनी की वारदात, चोर भूल गए संख्या

गिरोह के सदस्यों द्वारा सटीक वाहन चोरी की संख्या का पता लगाने में ठोस नतीजे पर नहीं पहुंच पाई है। पुलिस की शुरुआती पूछताछ में सामने आया है कि चोर इतनी चोरी कर चुके हैं कि उन्हें चोरी की संख्या ही याद नहीं है।

डीसीपी क्राइम शिव मोहन अवस्थी ने बताया कि चोरों को खुद याद नहीं है कि उन्होंने कितनी वाहन चोरी की वारदात की हैं। चोरों से पूछताछ कर जानकारी जुटाई जा रही है।

मूसलाधार बारिश की वजह से दीवार गिरने से झुग्गी में सो रहे दंपती की मौत

ग्रेटर नोएडा के दादरी में मूसलाधार बारिश से दीवार गिरने से सो रहे दंपती की मौत हो गई। पुलिस के अनुसार असम का रहने वाला अब्दुस सबूर पत्नी अमीना खातून के साथ कटहैरा रोड स्थित झुग्गी में रहता था जो कबाड़ बीनने का कार्य करता था। बीते बुधवार रात हुई मूसलाधार वर्षा के कारण प्लॉट की छह फुट ऊंची दीवार गिरने से उनकी मौके पर ही मौत हो गई।

नोएडा। दादरी कोतवाली क्षेत्र में बीती रात हुई मूसलाधार वर्षा से कटहैरा रोड स्थित एक प्लॉट की छह फुट ऊंची दीवार गिरने से बगल में स्थित झुग्गी में सो रहे दंपती की मौके पर ही मौत हो गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस के अनुसार असम का रहने वाला अब्दुस सबूर पत्नी अमीना खातून के साथ कटहैरा रोड स्थित झुग्गी में रहता था, जो कबाड़ बीनने का कार्य करता था। बीते बुधवार रात हुई मूसलाधार वर्षा के कारण झुग्गी के बगल में स्थित प्लाट की छह फुट ऊंची दीवार झुग्गी के ऊपर गिरने से दंपती की मौके पर ही मौत हो गई।

पुलिस ने दोनों का शव मलबे से निकाला

मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों को मलबे से बाहर निकाल कर अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। अभी कोई लिखित शिकायत पुलिस को नहीं मिली है। अपने स्तर से पुलिस कानूनी कार्रवाई में लगी है।

कैसे मशीन लर्निंग भारत में उच्च शिक्षा को नया आकार दे रही है

विजय गर्ग

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) ने पारंपरिक तरीकों को बदलकर और दक्षता में सुधार करके स्वास्थ्य सेवा से लेकर वित्त तक लगभग हर उद्योग को प्रभावित किया है। मशीन लर्निंग (एमएल) तकनीकी नवाचार में सबसे आगे है, जो अपनी परिवर्तनकारी क्षमता के लिए विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के सबसेट के रूप में, एमएल कंप्यूटरों को डेटा से सीखने और स्पष्ट प्रोग्रामिंग के बिना समय के साथ सुधार करने में सक्षम बनाता है। यह क्षमता बुद्धिमान निर्णय लेने, पूर्वानुमानित विश्लेषण और जटिल कार्यों के स्वचालन की सुविधा प्रदान करती है। भारत में, एमएल के लिए परिदृश्य विशेष रूप से उपजाऊ है, क्योंकि देश में तकनीकी प्रतिभा का समृद्ध भंडार, एक उभरती हुई डिजिटल अर्थव्यवस्था और सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों से बढ़ता निवेश है। बीसीजी और आईटी उद्योग के शीर्ष निकाय नैसकॉम की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, भारत का एआई बाजार 25-35 प्रतिशत सीएजीआर से बढ़ रहा है और 2027 तक लगभग 17 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। यह भारत में मशीन लर्निंग शिक्षा के भविष्य के विस्तार की गुंजाइश के साथ आता है।

यह लेख भारत में एमएल शिक्षा के गतिशील परिदृश्य पर प्रकाश डालता है, इसके बढ़ते अवसरों और इसके सामने आने वाली चुनौतियों दोनों की खोज करता है। इसके अतिरिक्त, यह भविष्य के लिए देश के प्रतिभा पूल को आकार देने में अमेज़न के मशीन लर्निंग कार्यक्रम की भूमिका पर प्रकाश डालता है। भारत में एमएल का उपजाऊ परिदृश्य मशीन लर्निंग (एमएल) सिर्फ एक प्रचलित शब्द नहीं है; यह व्यावसायिक परिदृश्य को नया आकार देने वाली एक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) क्रांति है। कई नवाचार, जिन्हें कभी विज्ञान कथा माना जाता था, अब एआई/एमएल द्वारा संचालित हैं। अमेज़न में, एआई मॉडल सुव्यवस्थित पृष्ठों की सेवा के लिए नेटवर्क स्थितियों की भविष्यवाणी करते हैं, जिससे धीमे नेटवर्क पर भी एक सहज अनुभव सुनिश्चित होता है। एआई भाषा अनुवाद प्रयासों को भी बढ़ाता है, जिससे ग्राहक अपनी पसंदीदा भाषा में खरीदारी कर सकते हैं; उदाहरण के लिए, अमेज़न जैसा बाज़ार आठ भाषाओं का समर्थन करता है, जिसमें एआई ध्वन्यात्मक समानता के आधार पर वर्तनी को संशोधित करता है। एमएल के लिए भारत का परिदृश्य विशेष रूप से उपजाऊ है, जिसमें तकनीकी प्रतिभा का एक समृद्ध पूल, एक बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था और सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों से बढ़ता निवेश शामिल है। बीसीजी और नैसकॉम की एक रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि भारत का एआई बाजार 25-35 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ेगा, जो 2027 तक लगभग 17 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच जाएगा। भारत में हाल के वर्षों में मशीन लर्निंग (एमएल) भूमिकाओं के लिए रुचि और मांग में तेजी से वृद्धि देखी गई है।

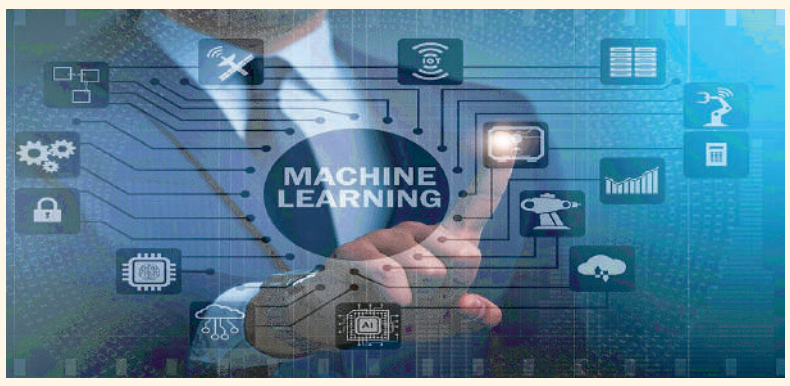

डेटा प्रसार और स्वचालन और बुद्धिमान निर्णय लेने की बढ़ती आवश्यकता से प्रेरित, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और एमएल में नौकरियां तेजी से बढ़ी हैं। अमेज़न वेब सर्विसेज द्वारा ₹एक्सेलरेटिंग एआई स्किल्सः भविष्य की नौकरियों के लिए एशिया-प्रशांत कार्यबल को तैयार करना₹ शीर्षक से एक अध्ययन के अनुसार, भारत में हो रहे एआई परिवर्तन की गति उल्लेखनीय है। लगभग सभी नियोक्ता (99 प्रतिशत) अपनी कंपनियों को 2028 तक एआई-संचालित संगठन बनने की कल्पना करते हैं। जबकि अधिकांश नियोक्ता (97 प्रतिशत) मानते हैं कि उनका वित्त विभाग सबसे बड़ा लाभार्थी होगा, उन्हें आईटी (96 प्रतिशत), अनुसंधान और विकास (96 प्रतिशत), बिक्री और विपणन (96 प्रतिशत), व्यवसाय संचालन (95 प्रतिशत), मानव की भी उम्मीद है। संसाधन (94 प्रतिशत), और कानूनी (92 प्रतिशत) विभाग भी एआई से

महत्वपूर्ण मूल्य प्राप्त कर रहे हैं। शैक्षिक पेशकशों का बदलता परिदृश्य विज्ञापन ₹डेटा विज्ञान शिक्षा रिपोर्ट 2023₹ सेइमार्टिकस लर्निंग का अनुमान है कि भारत का डेटा विज्ञान शिक्षा क्षेत्र 2028 तक 57.52% की सीएजीआर से बढ़ते हुए 1.391 बिलियन डॉलर तक पहुंच जाएगा। यह उछाल ऑनलाइन शिक्षा क्षेत्र की वृद्धि के समानांतर है, जिसके $76.20 मिलियन से बढ़कर $533.69 मिलियन होने की उम्मीद है। शैक्षणिक संस्थान सीमित एमएल-संबंधित पाठ्यक्रमों के साथ कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग से परे एमएल पाठ्यक्रम के महत्व को पहचान रहे हैं। अब, संस्थान व्यापक एमएल कार्यक्रम और अनुसंधान अवसर पेश कर रहे हैं। ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म और एमओओसी (बड़े पैमाने पर खुले ऑनलाइन पाठ्यक्रम) भौगोलिक बाधाओं को तोड़ने और स्व-गति से सीखने के अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष कौशल सेट और एमएल क्षमता में गहराई की आवश्यकता प्रगति के बावजूद, एमएल शिक्षा को कई कमियों का सामना करना पड़ता है। एमएल एल्गोरिदम की जटिलता गणितीय अवधारणाओं, सांख्यिकीय तरीकों और प्रोग्रामिंग कौशल की गहरी समझ की मांग करती है। एमएल की उद्योग प्रासंगिकता स्वास्थ्य सेवा, वित्त, ऑटोमोटिव और खुदरा तक फैली हुई है, जहां यह पूर्वानुमानित विश्लेषण, स्वचालन और बेहतर निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को संचालित करती है। विशिष्ट एमएल कौशल वाले पेशेवर नवाचार और प्रतिस्पर्धात्मकता बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं। उन्हें जटिल और असंरचित डेटा को संभालना होगा, पैटर्न की पहचान करनी होगी और ऐसे मॉडल विकसित करने होंगे जो वास्तविक दुनिया की समस्याओं को कुशलतापूर्वक हल करें। एमएल को आगे बढ़ाने के लिए विशेषज्ञों को अनुसंधान में योगदान देने, नए एल्गोरिदम विकसित करने और क्षेत्र की सीमाओं को आगे बढ़ाने की भी आवश्यकता होती है।

इन विशिष्ट कौशलों और योग्यता की गहराई के निर्माण के लिए, कई दृष्टिकोण प्रभावी हैं। उन्नत डिग्री कार्यक्रम गहन सैद्धांतिक ज्ञान और अनुसंधान के अवसर प्रदान करते हैं, जबकि विशेष प्रमाणन कार्यक्रम गहन शिक्षण और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण जैसे विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। गहन बूट शिविर और पाठ्यक्रम व्यावहारिक, व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करते हैं, और उद्योग परियोजनाएं और इंटर्नशिप वास्तविक दुनिया का अनुभव प्रदान करते हैं। कार्यशालाएँ, सेमिनार और सम्मेलन पेशेवरों को अद्यतन रखते हैं और विशेषज्ञों के साथ जुड़े रहते हैं। अनुसंधान परियोजनाओं में संलग्न होने से समझ गहरी होती है, और परामर्श कार्यक्रम कैरियर के विकास के लिए मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करते हैं। भारत भर में नियोक्ताओं को एआई/एमएल प्रशिक्षण कार्यक्रमों को लागू करने में मदद करने और श्रमिकों को उनकी नई अर्जित एआई/एमएल क्षमताओं का उपयोग करने के लिए उनके कौशल सेट को सही भूमिकाओं में मिलान करने में मार्गदर्शन करने के लिए सरकारों, उद्योगों और शिक्षकों के बीच अधिक सहयोग की भी आवश्यकता है। एमएल शिक्षा को आगे बढ़ाने में अमेज़न की भूमिका मशीन लर्निंग (एमएल) शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए अमेज़ॅन का समर्पण क्षेत्र को बढ़ावा देने में इसकी सक्रिय भागीदारी से स्पष्ट है। इस प्रतिबद्धता को अमेज़ॅन मशीन लर्निंग समर स्कूल (एमएलएसएस) द्वारा उजागर किया गया है, जो एक व्यापक कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य छात्रों को आवश्यक एमएल कौशल और प्रौद्योगिकियां प्रदान करना है। हाल ही में घोषित कार्यक्रम का चौथा संस्करण भारत में मान्यता प्राप्त संस्थानों से स्नातक, स्नातकोत्तर या पीएचडी डिग्री हासिल करने वाले इंजीनियरिंग छात्रों के लिए खुला है। एमएलएसएस बाजार की मांग और छात्र की तैयारी के बीच अंतर को पाटते हुए प्रतिभागियों को क्षेत्र में पुरस्कृत करियर के लिए तैयार करता है। अमेज़ॅन ने प्रासंगिक प्रशिक्षण और अपस्किलिंग अवसरों के साथ उनकी प्रतिभा के कौशल को बढ़ाने में भी निवेश किया है, जैसे 'मशीन लर्निंग यूनिवर्सिटी' जो कर्मचारियों को मशीन लर्निंग अवधारणाओं के बारे में सीखने और लागू करने के अवसर प्रदान करती है, और 'एमएल गुरुकुल' का उद्देश्य एसडीई को मौलिक शिक्षा देना है। एमएल अवधारणाएं और तकनीकें उन्हें एमएल समस्याओं को तैयार करने और व्यावसायिक समस्याओं को हल करने के लिए उपयुक्त मॉडलिंग तकनीकों की पहचान करने में सक्षम बनाती हैं। एम में इसके योगदान के अलावाएल शिक्षा, अमेज़ॅन इंडिया तकनीकी क्षेत्र में सभी व्यक्तियों के लिए विकास और समान अवसरों की संस्कृति को बढ़ावा देता है, विभिन्न समुदायों में विविधता और समावेशन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का विस्तार करता है। अमेज़ डब्ल्यूआईटी (अमेज़ॅन वुमेन इन टेक्नोलॉजी) सम्मेलन जैसी पहल प्रौद्योगिकी उद्योग में महिला प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण मंच के रूप में काम करती है। अमेज़ॅन फ्यूचर बिल्डर्स प्रोग्राम जैसे नेतृत्व विकास कार्यक्रम शीर्ष बी-स्कूल छात्रों को शामिल करते हैं, जबकि पिनेकल और कैटापुल्ट जैसे विशिष्ट कार्यक्रम महिलाओं के नेतृत्व विकास के लिए अद्वितीय अवसर प्रदान करते हैं। ऐसा ही एक कार्यक्रम Amazon WoW है, जो भारत में महिला इंजीनियरिंग छात्रों के लिए एक नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म है। यह उन्हें अमेज़ॅन नेताओं, भर्तीकर्ताओं और व्यापक समुदाय से जोड़ता है। यह कौशल-निर्माण सत्र, संसाधनों तक पहुंच और पूर्व छात्रों के साथ उनके करियर के अनुभवों के बारे में बातचीत की पेशकश करता है, जो अमेज़ॅन की संस्कृति के बारे में जानकारी प्रदान करता है। इसका लक्ष्य प्रौद्योगिकी में दीर्घकालिक करियर बनाने में महिला छात्रों का समर्थन करना है। छात्र कार्यक्रमों के साथ सहयोग विश्वविद्यालय की भर्ती में महत्वपूर्ण बदलावों में योगदान देता है, जिसका लक्ष्य अधिक विविध कार्यबल का निर्माण करना और एक समावेशी कार्यस्थल वातावरण बनाना है। अमेज़ॅन भारत में एमएल शिक्षा की प्रगति को उत्प्रेरित करने के लिए प्रतिबद्ध है, जो मशीन लर्निंग शिक्षा के विकास और सफलता को बढ़ावा देने और भारत को तकनीकी रूप से उन्नत भविष्य की ओर ले जाने के लिए एमएल पेशेवरों की अगली पीढ़ी की तैयारी सुनिश्चित करने के लिए समर्पित है।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट

– :सौजन्य :–
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV
Drive the Future

भागलपुर में चल रही ई-रिक्शा कोडिंग प्रणाली अब पूरे बिहार राज्य में होगी लागू

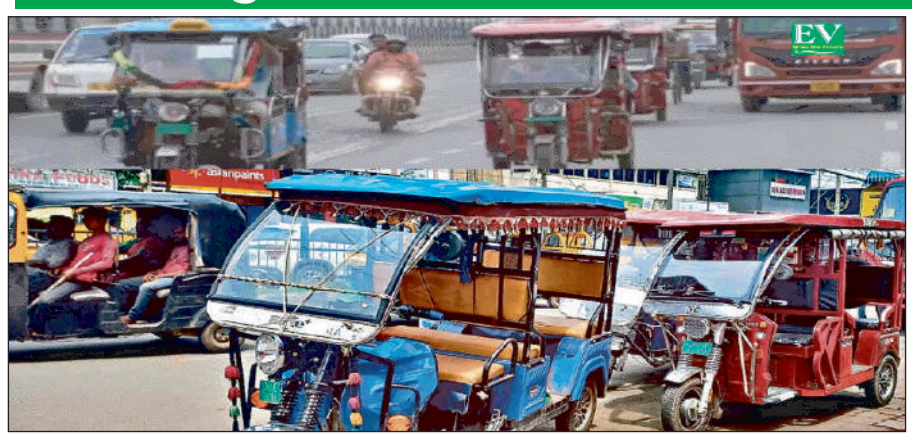

परिवहन विशेष न्यूज

भागलपुर में चल रही ई-रिक्शा कोडिंग प्रणाली अब पूरे बिहार राज्य में लागू होगी। राज्यपाल के आदेश पर सरकार के सचिव संजय अग्रवाल ने पत्र जारी कर जानकारी दी है। मोटर वाहन अधिनियम 1988 की धारा 67 (3) के तहत राज्य सरकार की शक्तियों का प्रयोग करते हुए सरकार ने टोटो और ई-रिक्शा के परिचालन के लिए नई नियमावली जारी की है।

अब राज्य में जहां भी टोटो और ई-रिक्शा चलेंगे, परिवहन विभाग वहां मौजूद सड़कों की वहन क्षमता के हिसाब से ऑटो और ई-रिक्शा का रजिस्ट्रेशन नंबर जारी करेगा। यह व्यवस्था पहले बिहार के भागलपुर जिले में ही लागू थी, अब इसे पूरे राज्य में लागू किया जाएगा।

इस नियम के अनुसार पटना मुख्यालय समेत राज्य के सभी जिलों को अलग-अलग जोन में बांटकर ऑटो और ई-रिक्शा के परिचालन के लिए अलग-अलग कोड निर्धारित किए जाएंगे। आम यात्रियों के अलावा रिजर्व में चलने वाले ऑटो रिक्शा पर भी विशेष कलर कोडिंग वाले स्टीकर चिपकाए जाएंगे।

इस नए नियम को लेकर बुधवार 31 जुलाई को भागलपुर के जिलाधिकारी के साथ बैठक हुई। इसमें परिवहन विभाग के सभी अधिकारी मौजूद थे। रूट निर्धारण के समय उस क्षेत्र से संबंधित थानों को भी टैग किया जाएगा ताकि परिचालन व्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सके।

इसके अलावा ऑटो और ई-रिक्शा के लिए शुरुआती और गंतव्य दोनों जगहों पर पार्किंग की सुविधा दी जाएगी। इस नई योजना को पूरे राज्य में चलाने के लिए आठ सदस्यीय टीम बनाई जाएगी, जिसका नेतृत्व जिला मजिस्ट्रेट करेंगे।

एमजी की नई इलेक्ट्रिक कार का नाम होगा विंडसर, जल्द होगी लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

ऑटो मैन्यूफैक्चरिंग कंपनी एमजी मोटर इंडियन मार्केट में एक और व्हीकल लेकर आ रही है। कंपनी ने अपने सोशल मीडिया हैंडल के जरिए अपनी अपकमिंग कार की जानकारी दी। यह व्हीकल क्रॉसओवर यूटिलिटी व्हीकल होगा, जिसमें सेडान कार और एसयूवी दोनों का ही मजा मिलेगा। यह कंपनी की पहली सीयूवी है, जो इंडियन मार्केट में पेश होने जा रही है।

कंपनी की यह कार मंगलवार, 6 अगस्त यानी कि अगले हफ्ते लॉन्च होनी है और कंपनी ने गुरुवार, 1 अगस्त को इस कार के नाम से पर्दा उठा दिया है। कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक जेएसडब्लू एमजी मोटर की नई सीयूवी का नाम विंडसर होगा। कंपनी का कहना है कि ये कार ब्रिटेश के आइकॉनिक आर्किटेक्चर से इंस्पायर है और रॉयल हैरिटेज विंडसर कैसल का प्रतीक है। टीजर में O, N, W, S, R, I और D जैसे अक्षर दिखाए गए थे। एमजी मोटर इंडिया ने घोषणा की है कि उसके आगामी मॉडल, भारत के पहले क्रॉसओवर यूटिलिटी व्हीकल (सीयूवी) का नाम "विंडसर" है। एमजी विंडसर भी उन्नत तकनीकी पेशकशों के साथ क्लासिक सुंदरता का प्रतीक है।

इस अवसर पर टिप्पणी करते हुए जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया के मुख्य वाणिज्यिक अधिकारी सतिंदर सिंह बाजवा ने कहा, "हम अपनी आगामी सीयूवी एमजी विंडसर के नाम का खुलासा करते हुए उत्साहित हैं। विंडसर कैसल रॉयल्टी और महिमा के प्रतीक के रूप में दुनिया भर में प्रसिद्ध है, जो इस सीयूवी के

हर विवरण में प्रतिबिंबित होता है जो प्रीमियमनेस को दर्शाता है। उन्नत तकनीकी पेशकश और भविष्यवादी एयरोडायनामिक एक्सटीरियर कार की अपील को और बढ़ाते हैं।'

एमजी विंडसर इलेक्ट्रिक सीयूवी विश्व स्तर पर उपलब्ध वूलिंग क्लाउड ईवी से महत्वपूर्ण प्रेरणा लेती है, जैसा कि टीज़र द्वारा सुझाया गया है, जो बैज स्वैप को छोड़कर लगभग समान डिज़ाइन तत्वों को प्रदर्शित करता है। एमजी विंडसर इलेक्ट्रिक सीयूवी की कुल लंबाई 4.3 मीटर और व्हीलबेस लंबा होगा।

उपकरण सूची में एक बड़ा टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट डिस्प्ले, ऑल-डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, कनेक्टेड टेक्नोलॉजी, फ्लैट-बॉटम स्टीयरिंग व्हील, लेवल 2 ADAS, ऑटोमैटिक एसी, 360-डिग्री कैमरा आदि शामिल होगा। E260 ईवी प्लेटफॉर्म पर निर्मित, क्लाउड ईवी 606 लीटर का बूट स्पेस प्रदान करता है, जिसे पीछे की सीटों को मोड़कर बढ़ाया जा सकता है।

एमजी विंडसर ईवी के लिए भी इसी तरह के स्पेसिफिकेशन की उम्मीद है। यह 37.9 kWh और 50.6 kWh बैटरी पैक के साथ उपलब्ध है, जो क्रमशः 360 किमी और 460 किमी की ड्राइविंग रेंज प्रदान करता है। घरेलू बाजार के लिए बड़ा 50.6 kWh बैटरी पैक शामिल हो सकता है।

ये कंपनी की तीसरी इलेक्ट्रिक कार है, जो जेडएस ईवी और कॉमेट ईवी के बाद आ रही है। कंपनी की कॉमेट ईवी को लोगों से काफी प्यार मिला है।

मारुति सुजुकी हर साल एक ईवी मॉडल की योजना बना रही है, जनवरी में पहली ईवी करेगी लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

मारुति सुजुकी लिमिटेड, जिसने अपने स्पोर्ट्स यूटिलिटी वाहनों की अधिक बिक्री से उम्मीद से बेहतर तिमाही लाभ की सूचना दी है, अब प्रति वर्ष एक इलेक्ट्रिक वाहन मॉडल लांच करने की योजना बना रही है।

कार निर्माता जनवरी 2025 में आयोजित होने वाले भारत मोबिलिटी शो में अपना पहला इलेक्ट्रिक वाहन प्रदर्शित करेगा। एमएसआई के कार्यकारी निदेशक (कॉरपोरेट मामले) राहुल भारती ने बुधवार को जून तिमाही के नतीजों की घोषणा के बाद निवेशक सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि कार निर्माता कंपनी 2031 तक कुल छह इलेक्ट्रिक वाहन मॉडल लांच करेगी। उन्होंने कहा कि कंपनी इसके बाद हर साल लगभग एक ईवी मॉडल लॉन्च करेगी।

उन्होंने यह भी बताया कि मारुति सुजुकी के लिए ग्रामीण बाजार शहरी से आगे निकल रहा है और यह लंबे समय से हो रहा है।

भारती ने कहा कि कंपनी ने सीएनजी वाहनों के साथ भी अच्छी पकड़ बनाई है। उन्होंने कहा कि पहली तिमाही में घरेलू बाजार में बिकने वाली हर तीसरी कार में से एक सीएनजी वाहन थी और एमएसआई इस वित्त वर्ष में 6 लाख वाहन बिक्री के अपने लक्ष्य को हासिल करने की राह पर है।

उन्होंने कहा कि एमएसआई ने सीएनजी वाहनों की आपूर्ति बढ़ा दी है और सबसे अधिक मांग वाले मॉडलों में से एक एर्टिगा सीएनजी का उत्पादन बढ़ाया गया है।

भारती ने कहा कि वित्त वर्ष 2025 की पहली तिमाही में भारत में पहली बार कुल सीएनजी यात्री वाहनों की बिक्री ने अपने डीजल समकक्ष को पीछे छोड़ दिया। इलेक्ट्रिक वाहन लॉन्च के बारे में एक सवाल पर उन्होंने कहा कि एमएसआई जनवरी 2025 में आयोजित होने वाले भारत मोबिलिटी शो में अपना पहला ईवी प्रदर्शित करेगी।

उबर और बीवाईडी की साझेदारी से वैश्विक स्तर पर 100,000 इलेक्ट्रिक वाहन पेश किए जाएंगे, जिसकी शुरुआत होगी यूरोप और लैटिन अमेरिका से

परिवहन विशेष न्यूज

उबर और चीनी ऑटो निर्माता बीवाईडी ने उबर के वैश्विक राइड-हेलिंग प्लेटफॉर्म में 100,000 नए इलेक्ट्रिक वाहनों को एकीकृत करने के लिए बहु-वर्षीय साझेदारी की घोषणा की है। यूरोप और लैटिन अमेरिका में शुरू हुई इस पहल का उद्देश्य उबर प्लेटफॉर्म पर ड्राइवरों के लिए किफायती ईवी तक पहुंच का विस्तार करना है और उबर बाद में विभिन्न बाजारों में विस्तार करेगा, जिसमें मध्य पूर्व, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड शामिल होंगे।

उबर और बीवाईडी के बीच सहयोग से उबर ड्राइवरों को बीवाईडी के ईवी मॉडल के लिए प्रतिस्पर्धी मूल्य निर्धारण और वित्तपोषण विकल्प मिलेंगे। इसके अलावा, ड्राइवरों को वाहन रखरखाव, चार्जिंग, वित्तपोषण और पट्टे पर विभिन्न छूटों का लाभ मिलेगा, जो विशिष्ट बाजारों के अनुरूप होंगे। उबर और बीवाईडी के बीच साझेदारी ऐसे समय में हुई है जब वाहनों की ऊंची कीमतों और उधार लेने की बढ़ती लागतों ने जलवायु परिवर्तन की बढ़ती चिंताओं और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के वैश्विक प्रयास के बावजूद इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने की गति को धीमा कर दिया है।

घोषणा के बाद प्रीमार्केट ट्रेडिंग में उबर के शेयरों में लगभग 2.5 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। उबर और बीवाईडी के बीच साझेदारी से उबर के इलेक्ट्रिक वाहनों में बदलाव में तेजी आने की उम्मीद है। उबर के सीईओ दारा खोसरोशाही ने उन ड्राइवरों के लिए ईवी के महत्वपूर्ण उत्सर्जन लाभों पर प्रकाश डाला है जो सड़क पर अधिक समय बिताते हैं। खोसरोशाही ने कहा, 'जब कोई उबर ड्राइवर ईवी में स्विच करता है, तो वह एक नियमित मोटर चालक की तुलना में चार गुना तक उत्सर्जन लाभ प्रदान कर सकता है।'

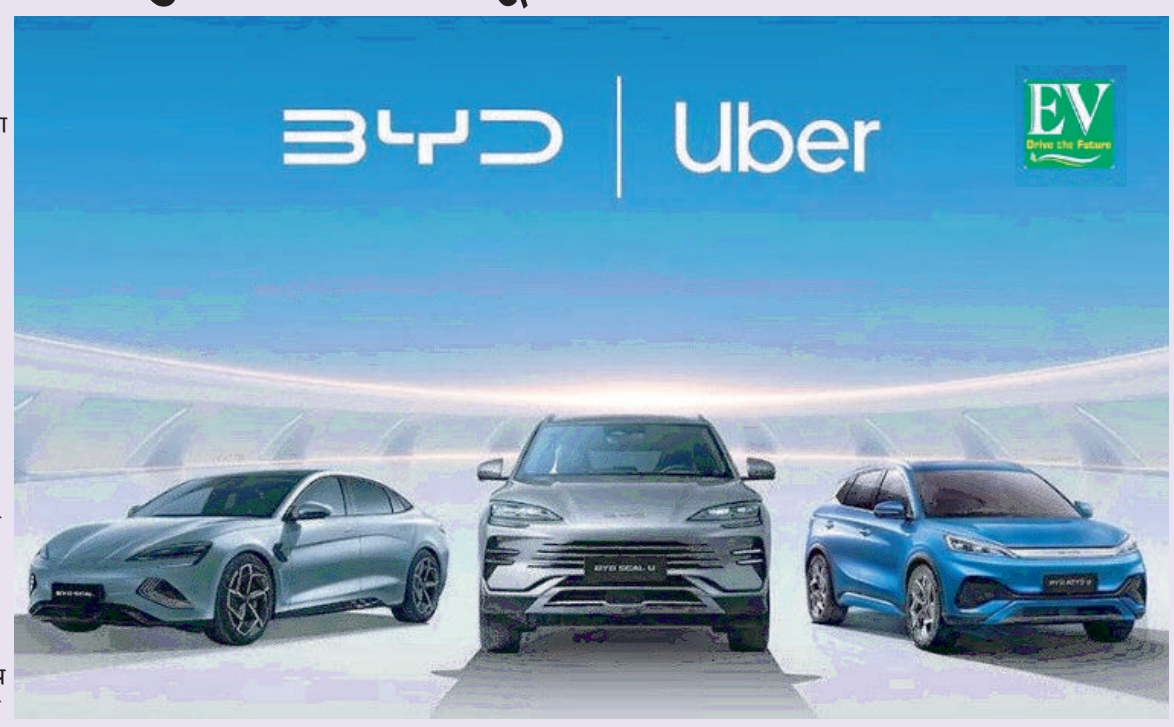

दोनों कंपनियाँ बीवाईडी के वाहनों को उबर के प्लेटफ़ॉर्म पर सेल्फ़-ड्राइविंग तकनीक के साथ एकीकृत करने पर सहयोग करने की योजना बना रही हैं। यह कदम ऐसे समय उठाया गया है जब बीवाईडी, जिसने पिछले साल दुनिया की सबसे बड़ी ईवी निर्माता कंपनी के रूप में टेस्ला को पीछे छोड़ दिया था, टेस्ला के साथ प्रतिस्पर्धा करना जारी रखे हुए है, जो अक्टूबर में अपने रोबोटैक्सी उत्पाद का अनावरण करने के लिए तैयार है।

अमेरिका में, उबर अपने ड्राइवरों के बीच ईवी अपनाने को बढ़ावा देने के लिए टेस्ला के साथ पहले से ही काम कर रहा है, जिसका लक्ष्य 2030 तक अमेरिका और कनाडाई शहरों में उत्सर्जन मुक्त संचालन हासिल करना है। BYD के साथ यह साझेदारी उबर की स्थिरता को बढ़ाने और वैश्विक स्तर पर अपने इलेक्ट्रिक वाहन बेड़े का विस्तार करने की अधिक व्यापक रणनीति में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करती है।

अमारा राजा का एथर एनर्जी से करार, ईवी के लिए बनाएगी उन्नत रसायन वाली बैटरी

परिवहन विशेष न्यूज

अमारा राजा एडवांस्ड सेल टेक्नोलॉजीज ने एथर एनर्जी के साथ मिल कर निकेल मैंगनीज कोबाल्ट (एनएमसी) और लिथियम आयरन फॉस्फेट (एलएफपी), लिथियम-आयन (ली-आयन) और अन्य उन्नत रसायनों के मिश्रण वाले पावर स्टोरेज सेल का विकास और आपूर्ति करेगी।

अमारा राजा एनर्जी एंड मोबिलिटी की पूर्ण स्वामित्व वाली कंपनी ने गुरुवार, 01 अगस्त को बताया तेलंगाना के दिवितिपल्ली में बनायी जा रही उसकी गीगाफैक्टी में इन सेल का विनिर्माण किया जाएगा।

अमारा राजा ने हाल ही में गोटियन-इनोबैट-बैटरीज़ (जीआईबी) के साथ एक समझौता किया है, जो इसे भारतीय परिस्थितियों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त लिथियम-आयन सेल बनाने के लिए वर्तमान वैश्विक एलएफपी तकनीक को स्थानीय बनाने में मदद करेगी।

अमारा राजा ने एनिकेल मैंगनीज कोबाल्ट सेल तकनीक के लिए जियांग्सू हाईस्टार बैटरी मैन्युफैक्चरिंग कंपनी के साथ भी समझौता किया है।

नई ईवी नीति जेएलआर के लिए नहीं उपयुक्त : टाटा मोटर्स सीएफओ

परिवहन विशेष न्यूज

टाटा मोटर्स समूह के मुख्य वित्तीय अधिकारी पीबी बालाजी ने गुरुवार, 1 अगस्त को कहा कि वाहन निर्माता की अपनी ब्रिटिश सहायक कंपनी जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर) के लिए नई इलेक्ट्रिक वाहन विनिर्माण नीति का लाभ उठाने की कोई योजना नहीं है।

टाटा मोटर्स द्वारा अपनी तिमाही आय की घोषणा के बाद मीडिया से बातचीत में बालाजी ने कहा, ₹इस समय, यह विशिष्ट नीति हमारे लिए उपयुक्त नहीं है। इसलिए हम इस समय इसका लाभ उठाने का इरादा नहीं रखते हैं।₹

भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों के विनिर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए, सरकार ने 35,000 डॉलर या उससे अधिक की लागत, बीमा और माल ढुलाई मूल्य वाली इलेक्ट्रिक कारों पर सीमा शुल्क को मौजूदा 100% से घटाकर 15% कर दिया है, बशर्ते ऑटोमेकर कम से कम 4,150 करोड़ रुपये का निवेश करे और पांच साल में 50% स्थानीयकरण हासिल करे।

बालाजी ने कहा कि जेएलआर स्थानीयकरण के मामले में अतिरिक्त देयता उठाए बिना 15% सीमा शुल्क के समान लाभ सुनिश्चित करने के लिए सीकेडी (पूरी तरह से नॉक डाउन) किट के माध्यम से विनिर्माण के अवसरों को देखना जारी रखेगा।

जेएलआर इंडिया ने इस साल मई में स्थानीय स्तर पर रेंज रोवर और रेंज रोवर स्पोर्ट का विनिर्माण शुरू किया। बालाजी कहते हैं, ₹ऑर्डर में भारी वृद्धि हुई है। जैसे-जैसे वॉल्यूम बढ़ता है, हम जितना संभव हो सके स्थानीयकरण करना चाहेंगे। हम भारत में अपने पैमाने को देखते हुए सीकेडी को अधिक आकर्षक विकल्प के रूप में आंकना जारी रखेंगे।₹

जुलाई में घरेलू यात्री वाहन बाजार में टाटा मोटर्स की इलेक्ट्रिक वाहन बिक्री 21% घटकर 5,027 इकाई रह गई, जबकि 2023 के इसी महीने में यह 6,329 इकाई थी।

बालाजी ने ईवी बिक्री में इस गिरावट के लिए बेड़े से संचालित यात्री चार पहिया वाहनों के लिए प्रोत्साहनों को हटाने और जुलाई में कार बिक्री में व्यापक मंदी को जिम्मेदार ठहराया।

कर्व ईवी के आगामी लॉन्च के साथ, कार निर्माता को उम्मीद है कि ईवी व्यवसाय में फिर से गति आएगी। बालाजी कहते हैं, ₹हमें उम्मीद है कि यहाँ से इसमें सुधार होगा, खासकर त्योहारी मांग के साथ।₹

टाटा मोटर्स समूह के सीएफओ को उम्मीद है कि अगली फेम योजना में चार पहिया वाहनों के लिए प्रोत्साहन शामिल होंगे। वे कहते हैं, 'यह बेड़े खंड की ओर बढ़ रहा है और सार्वजनिक परिवहन का विद्युतीकरण हो रहा है। इसलिए प्रोत्साहनों के पीछे एक तर्क है।'

टाटा मोटर्स ने 30 जून, 2024 को समाप्त तिमाही के लिए अपने शुद्ध लाभ में 74% की वृद्धि के साथ 5,566 करोड़ की वृद्धि दर्ज की। पहली तिमाही में परिचालन से राजस्व 5.7% बढ़कर 107,316 करोड़ हो गया। इसकी लग्जरी कार इकाई जेएलआर से राजस्व 5.4% बढ़कर 7.3 बिलियन पाउंड हो गया।

टाटा मोटर्स को उम्मीद है कि वैश्विक मांग नरम रहेगी और घरेलू बाजार में सुधार होगा। ऑटोमेकर का कहना है, 'हमें बुनियादी ढांचे में निरंतर निवेश, स्वस्थ मानसून, अनुकूल मैक्रो और त्योहारी मांग के कारण शेष वर्ष के दौरान घरेलू मांग में धीरे-धीरे सुधार की उम्मीद है।'

कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग में करियर के अवसर और चुनौतिया

विजय गर्ग

सीएसई एआई और एमएल में करियर नवाचार और समस्या-समाधान के लिए रोमांचक संभावनाएं प्रदान करता है। जैसे-जैसे उद्योग तेजी से एआई और एमएल प्रौद्योगिकियों को अपना रहे हैं, इन क्षेत्रों में कुशल पेशेवरों की मांग आसमान छू रही है। यह लेख सीएसई एआई और एमएल में करियर में विभिन्न अवसरों और चुनौतियों की पड़ताल करता है, इस तेजी से बढ़ते क्षेत्र में आवश्यक कौशल, उपलब्ध नौकरी भूमिकाओं और भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डालता है।

कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग (सीएसई) का क्षेत्र हमेशा एक गतिशील और विकासशील क्षेत्र रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) के आगमन के साथ, सीएसई का परिदृश्य और भी विस्तारित हो गया है, जिससे करियर के कई अवसर खुल गए हैं। सीएसई एआई और एमएल में करियर नवाचार और समस्या-समाधान के लिए रोमांचक संभावनाएं प्रदान करता है। जैसे-जैसे उद्योग तेजी से एआई और एमएल प्रौद्योगिकियों को अपना रहे हैं, इन क्षेत्रों में कुशल पेशेवरों की मांग आसमान छू रही है। यह लेख सीएसई एआई और एमएल में करियर में विभिन्न अवसरों और चुनौतियों की पड़ताल करता है, इस तेजी से बढ़ते क्षेत्र में आवश्यक कौशल, उपलब्ध नौकरी भूमिकाओं और भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डालता है। सीएसई एआई और एमएल में करियर के अवसर 1. विविध कार्य भूमिकाएँ सीएसई एआई और एमएल में करियर के सबसे आकर्षक पहलुओं में से एक उपलब्ध नौकरी भूमिकाओं की विविधता है। पेशेवर डेटा साइंटिस्ट, मशीन लर्निंग इंजीनियर, एआई रिसर्चर, एआई एथिक्स स्पेशलिस्ट और अन्य पदों में से चुन सकते हैं। ये भूमिकाएँ स्वास्थ्य सेवा, वित्त, खुदरा और प्रौद्योगिकी सहित विभिन्न उद्योगों में फैली हुई हैं। उदाहरण के लिए, डेटा वैज्ञानिक जटिल डेटा का विश्लेषण और व्याख्या करते हैं, जबकि मशीन लर्निंग इंजीनियर एल्गोरिदम विकसित करते हैं जो मशीनों को डेटा से सीखने में सक्षम बनाते हैं। एआई शोधकर्ता एआई के सैद्धांतिक पहलुओं को आगे बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और एआई नैतिकता विशेषज्ञ यह सुनिश्चित करते हैं कि एआई अनुप्रयोग नैतिक मानकों के अनुरूप हों। 2. उच्च मांग और प्रतिस्पर्धी वेतन एआई और एमएल में कुशल पेशेवरों की मांग अब तक के उच्चतम स्तर पर है। कंपनियां लगातार ऐसे विशेषज्ञों की तलाश में रहती हैं जो नवाचार और दक्षता बढ़ाने के लिए इन प्रौद्योगिकियों का लाभ उठा सकें। परिणामस्वरूप, सीएसई एआई और एमएल में करियर अक्सर आकर्षक मुआवजे पैकेज के साथ आते हैं। उद्योग रिपोर्टों के अनुसार, एआई और एमएल पेशेवरों के लिए औसत वेतन अन्य तकनीकी भूमिकाओं के औसत से काफी अधिक है। यह विशेष रूप से विशिष्ट भूमिकाओं के लिए सच है, जैसे डीप लर्निंग इंजीनियर्स और नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (एनएलपी) विशेषज्ञ, जहां विशेषज्ञता दुर्लभ है और अत्यधिक मूल्यवान है। 3. नवप्रवर्तन के अवसर सीएसई एआई और एमएल में करियर नवाचार के लिए अद्वितीय अवसर प्रदान करते हैं। एआई और एमएल प्रौद्योगिकियां प्रक्रियाओं को स्वचालित करके, निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाकर और नए उत्पाद और सेवाएं बनाकर उद्योगों को बदल रही हैं। इस क्षेत्र के पेशेवरों के पास अत्याधुनिक परियोजनाओं पर काम करने का मौका है, जैसे स्वायत्त वाहन विकसित करना, व्यक्तिगत स्वास्थ्य देखभाल समाधान बनाना और बुद्धिमान आभासी सहायकों को डिजाइन करना। इन करियरों की नवीन प्रकृति उन्हें अत्यधिक फायदेमंद बनाती है, क्योंकि पेशेवर उनके काम का वास्तविक प्रभाव देख सकते हैं। 4. वैश्विक अवसर एआई और एमएल पेशेवरों की वैश्विक मांग का मतलब है कि दुनिया भर में अवसर हैं। चाहे आप सिलिकॉन वैली, यूरोप, एशिया या दुनिया के किसी अन्य हिस्से में काम करना चाहते हों, एआई और एमएल में आपके द्वारा हासिल किए गए कौशल अत्यधिक हस्तांतरणीय हैं। इस वैश्विक मांग का मतलब यह भी है कि इस क्षेत्र के पेशेवरों के पास दूर से काम करने की सुविधा है, क्योंकि कई कंपनियां दूर से काम करने के विकल्प पेश करती हैं। एआई और एमएल कौशल की सीमा पार प्रयोज्यता विभिन्न क्षेत्रों में कैरियर के अवसर तलाशने वाले पेशेवरों के लिए एक महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करती है। 5. अंतःविषय अनुप्रयोग एआई और एमएल तकनीकी उद्योग तक सीमित नहीं हैं; उनके पास विभिन्न क्षेत्रों में अंतःविषय अनुप्रयोग हैं। उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य देखभाल में, एआई एल्गोरिदम का उपयोग रोगी के परिणामों की भविष्यवाणी करने और चिकित्सा निदान में सहायता करने के लिए किया जाता है। वित्त में, एमएल मॉडल धोखाधड़ी वाले लेनदेन का पता लगाने और ट्रेडिंग रणनीतियों को अनुकूलित करने में मदद करते हैं। मनोरंजन में, AI का उपयोग उपयोगकर्ताओं को वैयक्तिकृत सामग्री की अनुशंसा करने के लिए किया जाता है। एआई और एमएल करियर की अंतःविषय प्रकृति पेशेवरों को विविध डोमेन में काम करने की अनुमति देती है, जिससे क्षेत्र रोमांचक और हमेशा विकसित होता है। सीएसई एआई और एमएल में करियर में चुनौतियां 1. तीव्र तकनीकी प्रगति सीएसई एआई और एमएल को अपनाने वाले आईटी उद्योग में आने वाली मुख्य समस्याओं में से एक उस तेज गति के साथ तालमेल बनाए रखना है जिस गति से प्रौद्योगिकी बदल रही है। यह गतिविधि का एक क्षेत्र है, जो विकास की निरंतर प्रक्रिया से गुजर रहा है, जहां हर समय नए एल्गोरिदम, ढांचे और उपकरण बनाए जाते हैं। पेशेवरों को नवीनतम रुझानों और तकनीकी प्रगति के साथ खुद को अपडेट करने में सक्षम होना चाहिए। प्रतिस्पर्धा में बढ़त बनाए रखने के लिए निरंतर सीखना और व्यावसायिक विकास अपरिहार्य हथियार हैं। एक्सपोज़र तेजी से सीखने वालों में नवाचार को भी प्रोत्साहित कर सकता है, जिससे वे प्रगति के चालक बन सकते हैं। 2. नैतिक और कानूनी विचार एआई और एमएल प्रौद्योगिकियों के व्यापक उपयोग का तात्पर्य है कि नैतिकता और वैधता के प्रश्न अधिक से अधिक उठाए जा रहे हैं। डेटा गोपनीयता, एल्गोरिथम पूर्वाग्रह और एआई सिस्टम के नैतिक अनुप्रयोग जैसे मामले संबोधित किए जाने वाले मुख्य मुद्दे हैं। इस क्षेत्र में श्रमिकों को नैतिक और संभवतः न्यायिक आवश्यकताओं को शामिल करके इन समस्याओं से निपटने की आवश्यकता है। ये मामले इतने जटिल हैं कि तकनीकी पक्ष के साथ-साथ व्यक्ति की नैतिक संवेदनशीलता भी विकसित करनी पड़ती है। 3. उच्च प्रवेश बाधा इंजीनियरिंग और मात्रात्मक ज्ञान, विशेष रूप से कंप्यूटर विज्ञान और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में, सीएसई एआई और एमएल में करियर बनाने के लिए आवश्यक पाठ्यक्रम हैं। केवल इन क्षेत्रों में मजबूत बुनियादी ज्ञान वाले लोग ही बाधा पार कर सकते हैं। इसके अलावा, एआई और एमएल में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए बहुत अधिक समय और कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। पेशेवरों को पायथन और आर जैसी प्रोग्रामिंग भाषाओं में विशेषज्ञ होना चाहिए, और उन्हें विभिन्न एआई और एमएल फ्रेमवर्क जैसे टेन्सरफ्लो और पायटोरच से परिचित होना होगा। उच्च प्रवेश बाधा कुछ लोगों के लिए पहला कदम हो सकती है, और कोई भी इसे छोड़ना नहीं चाहेगा यदि वे अपेक्षित परिणामों पर भरोसा करने के लिए बाध्य हों। 4. डेटा निर्भरता एआई और एमएल मॉडल ठीक से काम करने के लिए काफी हद तक डेटा पर निर्भर हैं। सही प्रकार और जानकारी की मात्रा इन प्रक्रियाओं के निष्पादन पर बहुत प्रभाव डाल सकती है। सीएसई एआई और एमएल में करियर में बाधाओं में से एक डेटा से संबंधित मुद्दे हैं, जैसे डेटा की कमी, डेटा गुणवत्ता और डेटा गोपनीयता। पेशेवरों को इन चुनौतियों से निपटने के लिए कुछ तरीके अपनाने चाहिए और ऐसे तरीकों का प्रस्ताव देना चाहिए जो संबंधित मॉडलों की सुदृढ़ता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करें। इसके अलावा, डेटा नैतिकता एक महत्वपूर्ण पहलू है जिस पर विचार किया जाना चाहिए; जब डेटा का दुरुपयोग होगा तो गंभीर परिणाम होंगे. 5. अंतःविषय सहयोग तथ्य यह है कि एआई और एमएल के बीच संबंध विभिन्न शैक्षणिक क्षेत्रों में स्थापित हैं, यह संभावनाओं और देनदारियों में से एक है। पेशेवरों को अक्सर स्वास्थ्य देखभाल, वित्त और कानून जैसे विभिन्न उद्योगों के पेशेवरों के साथ मिलकर काम करना पड़ता है। प्रभावी संचार और एक साथ काम करना विभिन्न अंतःविषय क्षेत्रों की व्यक्तिगत मांगों और जरूरतों के लिए एआई और एमएल संरेखण की नींव है। यह तालमेल तो होना ही है, लेकिन अंतःविषय क्षेत्र का संयोजन है केंद्रीय रूप से जुड़े होने का मतलब है कि इसके लिए क्षेत्र के तकनीकी पहलुओं और डोमेन के संदर्भ में गहरी अंतर्दृष्टि की आवश्यकता है। निष्कर्ष सीएसई एआई और एमएल में करियर अवसरों और चुनौतियों से भरा है। लाभ कमाने के साथ-साथ गैर-लाभकारी संगठनों में एआई और एमएल प्रौद्योगिकियों के अनुसंधान, विकास और कार्यान्वयन से इन क्षेत्रों में कुशल पेशेवरों की मांग लगातार और लगातार बढ़ रही है। यह क्षेत्र अवसरों से भरा है और अत्यधिक तकनीकी रूप से सक्षम व्यक्तियों से भरा है जो अच्छा वेतन कमा सकते हैं और योगदान देने के इच्छुक हैं, लेकिन उन्हें तेज तकनीकी प्रगति, नैतिक समस्याओं और प्रवेश बाधाओं जैसी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। जो लोग निरंतर सीखने और कौशल विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं, उन्हें एआई और एमएल में काम करने से बहुत संतुष्टि मिल सकती है। सीएसई एआई और एमएल के पेशेवर अभी भी प्रौद्योगिकी क्षेत्र और एप्लिकेशन क्षेत्र में मुख्य भूमिका निभाएंगे।

संपादक की कलम से

केरल में 'प्रलय'

प्रलय को हमने पढ़ा और सुना है। जिसने प्रलय को देखा और झेला है, वह जिंदा नहीं रहा। 2013 में केदारनाथ धाम में जो सैलाब आया और तबाही हुई अथवा उत्तरकाशी में भूकंप के बाद जो बाढ़ आई, हमने उन्हें ही प्रलय माना। विनाश और बर्बादी का दूसरा नाम प्रलय है। अब केरल के वायनाड जिले में लगातार तीन भू-स्खलन आए और फिर सैलाब आया, गांव के गांव दफन हो गए, 400 से अधिक घर देखते ही देखते 'मलबा' हो गए, करीब 200 मौतें हो चुकी हैं और इतने ही लोग लापता बताए जा रहे हैं, यह प्रलय नहीं है, तो और क्या है? यह कुदरती मार नहीं, मानव-निर्मित घटना है, क्योंकि आदमी अपनी ऐयाशी के लिए पहाड़ों को तोड़ रहा है। पहाड़ों की चोटियों पर भी इमारतें बनाई जा रही हैं। केरल में सेना और एनडीआरएफ के जवान हमें 'देवदूत' लगे, जिन्होंने मलबे में से निकाल कर असंख्य जिंदगियां बचाईं। हालांकि केरल की भौगोलिक स्थिति परंपरागत पहाड़ों से भिन्न है, लेकिन देश भर के 80-85 फीसदी भू-स्खलन केरल में ही आते हैं। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के मुताबिक, 2015 से 2022 तक 3782 भू-स्खलन आए। उनमें से करीब 60 फीसदी केरल में ही आए। मौजूदा हालात पर विशेषज्ञों का मानना है कि अरब सागर का तापमान बढ़ने से बेहद घने बादल बने और उसी से केरल में कम समय में बहुत ज्यादा बारिश हुई। वायनाड पहाड़ी जिला है और पश्चिमी घाट का हिस्सा है। यहां 2100 मीटर तक ऊंचे पहाड़ हैं। मानसून में ये पहाड़ भू-स्खलन के लिए बेहद संवेदनशील हैं। जहां यह त्रासद घटना हुई है, वहां दो सप्ताह से बारिश हो रही थी, लिहाजा पहाड़ की मिट्टी गीली और ढीली हो चुकी थी। इसलिए एक ही रात में लगातार 3 भू-स्खलन आए। जमीन खिसक गई। घर हिलने लगे। पहाड़ दरक कर गिरने लगे। सड़क और पुल ताश के पत्तों की तरह बिखरने और ढहने लगे। जलवायु-परिवर्तन ने भी बारिश की स्थिति और भू-स्खलन की तीव्रता को बढ़ाया है। एक शोध में कहा गया है कि जो वायनाड साल भर बूंदाबांदी और मानसून की बारिश वाला ठंडा, नम वातावरण वाला इलाका होता था, जलवायु-परिवर्तन के कारण अब सूखा, गर्म, लेकिन मानसून के दौरान भारी, तीव्र बारिश वाला क्षेत्र बन गया है। इस बदलाव से भू-स्खलन का जोखिम बढ़ा है।

2018 के मानसून में भी खूब बारिश हुई थी, तब करीब 400 लोगों की जान चली गई थी। उसके बाद केरल में भू-स्खलन वाला क्षेत्र बढ़ गया है। इस हादसे, संकट या घटना पर राजनीति नहीं होनी चाहिए। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने संसद में बयान दिया है कि उन्होंने 23, 24, 25 जुलाई को केरल सरकार को चेतावनी भेजी थी। फिर 26 जुलाई को भू-स्खलन, भारी बारिश की चेतावनी देते हुए आशंका व्यक्त की थी कि कई जानें भी जा सकती हैं। केरल के मुख्यमंत्री विजयन ने ऐसी चेतावनियों से इंकार किया है। उनका कहना है कि रेड अलर्ट तब जारी किया गया, जब सैलाब आ चुका था। बहरहाल ऐसे आरोप-प्रत्यारोप से बचना चाहिए। देश में हर राज्य में, हर क्षेत्र में विकास होना चाहिए, लेकिन ऐसी घटनाओं से सबक भी सीखना चाहिए। विकास-कार्य जापान और ताइवान सरीखे देशों में भी हो रहे हैं। वहां भी पहाड़ काटे जा रहे हैं, लेकिन ऐसे हादसों से बचने के बंदोबस्त भी किए जा रहे हैं। वे दीवार पुश्ता लगाना हो अथवा पेड़-पौधों का रोपण या कुछ और बंदोबस्त करना हो, जापान इसमें अग्रणी रहा है। वहां के पहाड़ों को स्थिर बनाए रखने के लिए विशेष तरह की जालियां तक लगाई गई हैं। देश के उत्तराखंड राज्य में टिहरी बांध में ढलानों की कटाई के बाद बेहतर सुरक्षा उपाय किए गए हैं। ताइवान ने पहाड़ पर दबावमापी यंत्र लगाकर एक भिन्न प्रयोग किया है। इससे यथासमय पता चल जाता है कि पहाड़ पर कितना दबाव है और वह लोगों को पहाड़ के दरकने को लेकर आगाह कर देता है। भारत में हर सरकार और नागरिक विकास चाहते हैं। उसके लिए जो निर्माण-कार्य किए जाते हैं, वे बेलगाम और अनियोजित हैं। खनन तक धड़ल्ले से कराया जाता है। पहाड़ को काटते-तोड़ते रहेंगे, तो ऐसे 'प्रलय' कैसे रोके जा सकते हैं? इस पर सोचना चाहिए। देश के अन्य हिस्सों से भी बरसाती कहर के समाचार आ रहे हैं। बिहार हर वर्ष बाढ़ के कहर से सहम जाता है। वहां पर हर वर्ष बड़ी तादाद में जान और माल का नुकसान होता है। इस कहर से बिहार को बचाने के लिए इस वर्ष के बजट में विशेष आर्थिक सहायता दी गई है। अन्य राज्यों को भी उदारता के साथ विशेष आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए।

राय

कहर की बरसात

सिसकियां पिछले साल की लौट आईं, बेरहम बरसात ने दरवाजे पे पुनः दस्तक दी। खत पुराने भी यही खबर देते रहे, लेकिन दिल्ली ने हमारी एक न सुनी। विध्वंस की परिक्रमा में पूरा हिमाचल, लेकिन शिमला, कुल्लू और मंडी में कहर की बरसात ने मौत का समुद्र बना दिया। आधा दर्जन बादलों का श्रृंखलाबद्ध होकर फटना, जिन घाटियों, नदी-नालों, घरों, सड़कों, योजनाओं-परियोजनाओं और होटलों से होकर गुजरा है, वहां मौत और विनाश का मंजर देखा नहीं जाता। यहां समेXI के अस्तित्व को मिटाने वाली बारिश, बागीपुल पर भारी पडने वाला पानी और मंडी के जलबहाव में घर-परिवार को मिटाती बाढ़ का रौद्र रूप बता रहा है कि फिलवक्त सारा हिमाचल चीख रहा है। बुधवार की रात से निकली वीरवार की चीख समेXI के पत्थरों से लौट कर कानों में शीशा पिघला रही है। कल तक वहां आशियानें थे, आशाएं और बस्ती में मस्ती थी, लेकिन आज न घर बचे, न घर के लोग और न ही धरती का नामोनिशान रहा। करीब साढ़े तीन दर्जन लोगों को निगल कर बारिश सिर्फ छोड़ गई अफसोस, क्रूर यादें और वीभत्स दृश्य, जहां अब अवशेष रो रहे हैं, 'आखिर कहां गए लोग, क्यों गए लोग।' हादसों का प्रदेश बन गया हिमाचल, यहां बारिश अब मौत की सुपारी लेकर आती है। बागीपुल ने एक दर्जन लाशें देखीं, तो पद्धर के पत्थरों में लापता हो गए नौ से दस लोग। बादल हमारी योजनाओं, नीतियों और खुदगर्जी के भी फटे हैं। बादल हमें घूर रहे हैं, क्योंकि हम उसके आस्तीन के सांप हैं। उसके रास्तों के व्यवधान हैं।

हम समेXI की बस्ती में मौत का सामान हैं। हम तरक्कीपसंद हिमाचली नदी-नालों के आसपास विकास का जो मंजर खोज रहे हैं, उसमें कितनी कीलें और कितने विस्फोटक इरादे छुपे हैं कि आज हमारे अस्तित्व के निशान फनां हो रहे हैं। बरसात अब अस्तित्व से लड़ रही है, विकास से लड़ रही है। पंडोह बांध के गेट खोलते हैं, तो मंडी का पंचवक्त्र मंदिर बताता है कि डूबने को अब ईश्वर को भी कोई सहारा नहीं मिल रहा। पहाड़ पर पिछले साल भी कोहराम मचा था। नुकसान के अनुमान में आर्थिकी निकल गई और प्रदेश का वित्तीय घाटा बढ़ गया, लेकिन केंद्र ने हमारी न फरियाद सुनी और न ही पर्वत को समझने की सुध ली। बादल समुद्र से उठते हैं, तो उनका कद और मद अलग होता है। मैदानों के ऊपर उनकी काया और छाया अलग होती है, लेकिन पहाड़ पर वे अपना ठौर, अपना सफर फूल कर जब वजनी होते हैं, तो बारिश का अंतिम चरित्र भयावह हो जाता है। ये जख्म बताते हैं कि बादलों में शैतान छुपा था, लेकिन खंजर में तेरा नाम खुदा था। ये खंजर केंद्र-राज्य की बीच फासलों का है। पहाड़ को न समझने की चुनौती को सभी नजरअंदाज कर रहे हैं। राज्य विनाश की लहरों को न मापने की गलती कर रहा है, तो केंद्र पहाड़ के आंसू पौंछने की मर्यादा भंग कर रहा है। हद तो यह कि बरसात को हिमाचल के महकमे ही हल्के से ले रहे हैं। नदी-नालों के किनारे बढ़ रहे हादसों के बावजूद निर्माण की कोई आचार संहिता लागू नहीं होती। वर्षों पहले से पहली जुलाई से 31 अगस्त तक स्कूली अवकाश निर्धारित थे, लेकिन शिक्षा विभाग का मुख्यालय अपने मौसम खुद तय करके बच्चों के स्कूल पहली अगस्त को खोल देता है। इसी पहली अगस्त की किस्त में डूबे स्कूल और ढहती इमारतें बता रही हैं कि महकमा कहीं बच्चों की जान से खेल रहा है।

मातृभाषा में खुलती शिक्षा की की नई नई राहें

विजय गर्ग

हाल के कुछ वर्षों में बेरोजगारी एक बड़ा मुच बनकर उभरा है। इसी की ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार देश की शीर्ष 500 कंपनियों में एक करोड़ युवाओं के लिए विशेष इंटर्नशिप योजना शुरू करने जा रही है। इस इंटर्नशिप योजना में अभ्यर्थी को हर महीने पांच हजार रुपये का भत्ता मिलने के साथ साथ कारोबार के वास्तविक माहौल को जानने और अलग-अलग पेशे की चुनौतियों से रूबरू होने का अवसर मिलेगा। इससे देश में रोजगार और कौशल विकास क्षेत्र को एक बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा। इसके अलावा, केंद्रीय विश्वविद्यालयों के लिए अनुदान में चार हजार करोड़ रुपये से अधिक की वृद्धि करके वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 15,928 करोड़ रुपये आवंटित करना स्वागतयोग्य कदम है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के बजट में सरकार ने नौ प्रतिशत वृद्धि की है। पिछले वित्त वर्ष के 17,473 करोड़ रुपये की तुलना में बढ़कर यह 19,024 करोड़ रुपये हो गया है। यूजीसी नई शिक्षा नीति के तहत देश में उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों में क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठा रहा है। हाल ही में शुरू हुई अस्मिता परियोजना क्षेत्रीय भाषाओं शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु एक मुख्य पहल है। उम्मीद है कि इस पहल से उच्च शिक्षा के भीतर विभिन्न विषयों में भारतीय भाषाओं में अनुवाद एवं मौलिक पुस्तक लेखन के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र बनाने तथा भारत की भाषा परंपराओं को संरक्षित एवं उसे बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। साथ ही यह पहल 22 अनुसूचित भाषाओं में शैक्षणिक संसाधनों का एक व्यापक पूल बनाने, भाषाई विभाजन की पाटने, सामाजिक सामंजस्य और एकता को बढ़ावा देने तथा हमारे युवाओं की सामाजिक रूप से जिम्मेदार वैश्विक नागरिकों में बदलने में भी मदद करेगी।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि देखें, तो तथ्य यह है कि बिना स्थानीय और मातृभाषा के उच्च शिक्षा के स्तर की मजबूती देना संभव नहीं होग। यही कारण है कि यूजीसी ने विश्वविद्यालयों सहित देश के सभी उच्च शिक्षण संस्थानों में स्थानीय अथवा मातृभाषा में पाठ्यक्रम शुरू करने के निर्देश दिए हैं। इसके अलावा, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद यानी एआइसीटीई ने भी इंजीनियरिंग की पढ़ाई अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी सहित आठ भारतीय भाषाओं में भी कराए जाने की पहल की है।

बौद्धिक विकास हमारे देश में उच्च अध्ययन-अध्यापन मुख्य रूप से विदेशी भाषाओं में होता रहा है, जबकि भारतीय भाषाओं की इस क्षेत्र में इतना महत्त्व कभी भी नहीं मिला। हालांकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 ने प्राथमिक और उच्च शिक्षा स्तरों पर शिक्षा के लिए क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग पर बल दिया है। विभिन्न अध्ययनों से लगातार पुष्टि हुई है कि बच्चों को अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने से उनका न केवल बौद्धिक विकास होता है, बल्कि उनके विचार करने और चिंतन करने की क्षमता में बढ़ोतरी होती है। जो छात्र अपनी मातृभाषा या घर में प्रचलित भाषा में शिक्ष प्राप्त करते हैं, वे स्कूल में उन छात्रों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करते हैं जिन्हें विदेशी या अपरिचित भाषा में शिक्षण प्रदान किया जाता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वे पाठ्यक्रम सामग्री तक अधिक आसानी और आत्मविश्वास से पहुंच सकते हैं तथा अपने कौशल एवं ज्ञान को अन्य भाषाओं में स्थानांतरित कर सकते हैं शोध आधारित सक्ष्य बताते हैं कि बच्चें की प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए। इससे उनकी संखने की क्षमता कई गुना बढ़ जाती है। जब हम मातृभाषा में चीजों की संखते हैं तो वे हमारे लिए प्राथमिक होती हैं, क्योंकि इसके लिए हमारे मस्तिष्क को अनुवाद की प्रक्रिया से नहीं गुजरना पड़ता। इसके विपरीत जब हम मातृभाषा के अतिरिक्त अपनी द्वितीयक या तृतीयक भाषा में विचारों को ग्रहण करते हैं, तो पहले उसे अपनी मातृभाषा में बदलते हैं, फिर उसे ग्रहण करते हैं। यही कारण है कि मातृभाषा में मस्तिष्क की ग्राह्यता सर्वाधिक होती है।

चौंकाने वाली बात यह है कि वैश्विक आबादी के 40 प्रतिशत हिस्से को उनकी मातृभाषा से अलग किसी अन्य भाषा में पढ़ाया जाता है ऐसा होने पर बच्चों की सीखने की गति कम हो जाती है और सामाजिक असमानताएं पैदा होती हैं। शिक्षा के प्राथमिक माध्यम के रूप में मातृभाषा शुरूआत करने और बाद में अंग्रेजी को शामिल करने से अंग्रेजी सीखना आसान हो जाता है। बाद में किसी अन्य भाषा का ज्ञान लिया जा सकता है, लेकिन प्रारंभिक वर्षों के दौरान मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनए जाने के फलस्वरूप जी कौशल विकसित होता है, वह अमूल्य साबित होता है। पहली भाषा कौशल जितनी अधिक विकसित होगी, दूसरी भाषा में परिणाम उतने ही बेहतर होंगे।

आत्मविश्वास की वृद्धि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की वृद्धि होता है। वे अपनी भाषा में प्रश्न पूछने चर्चा करने और विचार व्यक्त करने में सहज महसूस करते हैं, जिससे उनकी शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास में मदद मिलती है। मातृभाषा में शिक्षा का एक प्रमुख लाभ यह है कि यह स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और धरोहर को संरक्षित रखती है। इसके माध्यम से विद्यार्थी अपनी जड़ों से जुड़े रहते हैं और सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हैं। मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से विद्यार्थी स्थानीय समस्याओं और जरूरतों को बेहतर समझ सकते हैं। इससे वे समाज के विकास और सुधार में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं। इसके अलावा, मातृभाषा में दक्षता होने के कारण वे स्थानीय बाजार में रोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

वर्तमान में देश इस समस्या से जूझ रहा है कि प्रारंभिक कक्षाओं में सीखना- सिखाना बेहतर नहीं हो पा रहा है। शिक्षा जगत नई योजनाएं व रणनीतियां तो बनता है, लेकिन समस्या के समाधान के बजाय वे अधिक गाढ़ी हो जाती हैं। समस्या की वजह में बच्चे व शिक्षक गिनाए जाते हैं, लेकिन लंबे समय तक असली समस्या की अनदेखी होती रही। चूंकि मातृभाषा या घरेलू भाषा में ही बच्चों की भाषाई क्षमता का विकास होता है, उसे तजकर दूसरी या तीसरी भाषा पर छलांग लगाकर अपेक्षित सीखना समझना नहीं हो पाता। अच्छी बात नई शिक्ष नीति के आने के बाद मातृभाषा को टीचिंग-लर्निंग की भाषा के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है। शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में मातृभाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मातृभाषा में पढ़ते हुए विद्यार्थियों को कमतर नहीं आंकना चाहिए। तकनीकी शिक्ष भी मातृभाषा में देनी चाहिए। मातृभाषा का विस्तार इंटरनेट की भाषा के रूप में होनी चाहिए। मातृभाषा को सभी विद्यार्थी लर्निंग की भाषा के रूप में स्वीकार करें, इसके लिए मातृभाषा में रोजगार के अवसर भी सृजित होने चाहिए। उच्च शिक्षा में मातृभाषा को लेकर राष्ट्रीय नीतियों को ऐसे सूक्ष्म और स्थूल वातावरण का निर्माण करना चाहिए, जो किस प्रकार की सहायता पर निर्भरता के बजाय सशक्तीकरण के माध्यम से युवाओं के लिए बेहतर शिक्षा और जीवन स्थितियों के अनुकूल हो । विभिन्न देशों ने अंग्रेजी के स्थान पर अपनी मातृभाषा में शिक्ष प्रदान करने में सफलता हासिल की है और उन देश से विश्व स्तर के विज्ञानी, शोधकर्ता, तकनीशियन और विचारक अपनी प्रसिद्धि बिखेर रहे हैं। भाषा की बाधा तब तक है, जब तक संबंधित भाषा में उचित प्रोत्साहन का अभाव है। सरकार को क्षेत्रीय भाषाओं में मूल वैज्ञानिक लेखन और पुस्तकों के प्रकाशन को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि लोगें में स्थानिक भाषाओं को लेकर जागरूकता और जिज्ञासा बढ़े।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार

पूर्वाग्रहों की जंजीरें : विजय गर्ग

हमारी दुनिया में पूर्वाग्रहों का जाल इतनी बारीकी से बुना हुआ है कि हममें से अधिकतर लोग इसके प्रभाव से अनजान रहते हैं। यह जाल हमारे जीवन में सोचने, समझने और प्रतिक्रिया देने के ढंग को आकार देता है । पूर्वाग्रह का अर्थ है किसी भी व्यक्ति, वस्तु, समूह या स्थिति के प्रति पहले से बनी हुई मानसिक धारणा, जो अक्सर बिना किसी साक्ष्य के होती है, यह हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहरा असर डालती है । पूर्वाग्रहों का उद्भव अक्सर हमारे सांस्कृतिक, पारिवारिक, और सामाजिक अनुभवों से होता है। उदाहरण के लिए, किसी विशेष वस्तु, जाति, व्यक्ति या समुदाय के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण का विकास बचपन में सुनी या देखी गई कहानियों, अनुभवों और सामाजिक मान्यताओं से हो सकता है। यह पूर्वाग्रह किसी विषय के बारे में तथ्यों के स्थान पर भावनाओं और धारणाओं पर आधारित होता है। इसके विकास में तर्क और विवेक का कोई विशेष महत्त्व नहीं होता। आमतौर पर व्यक्ति पूर्वाग्रहों को अपने परिवार या निकट संबंधी रहे लोगों की राय के अनुकरण के आधार पर सीखता है । इनको वह अक्सर अपने व्यवहार का अंग इसलिए बना लेता है कि उसके निकट के लोग इस प्रकार की धारणाएं रखते हैं। जाहिर है, इस तरह की धारणाओं के निर्माण में विवेक आधारित विचार की जगह नहीं होती । इन पूर्वाग्रहों का आधार समय के साथ इतना गहरा हो जाता है कि व्यक्ति उसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन स्वीकार नहीं करता ।

इस तरह पूर्वाग्रहों के प्रभाव बहुआयामी होते हैं। व्यक्तिगत स्तर पर यह हमारे निर्णय लेने और सोचने-समझने की क्षमता पर अतिक्रमण कर लेता है, जिससे हम अपने ही हितों के विरुद्ध निर्णय ले सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक कार्यस्थल पर महिला कर्मचारियों के प्रति पूर्वाग्रह उन्हें महत्त्वपूर्ण भूमिकाओं में पदोन्नति देने से रोक सकता है, चाहे उनके पास आवश्यक योग्यता और अनुभव हो । सामाजिक स्तर पर यह असमानता और विभाजन को बढ़ावा देता है, जो समाज की प्रगति को बाधित करता है। आधुनिक जीवन में बढ़ रहे नए- नए संचार माध्यम भी पूर्वाग्रहों के प्रसार और पोषण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है। फिल्मों और प्रचार माध्यमों में अक्सर ऐसी छवियां और कथाएं प्रस्तुत की जाती हैं जो किसी विशेष समूह, व्यक्ति और विषय के प्रति हमारे दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं।

आज जिसे सोशल मीडिया कहा जाता है, वैसे डिजिटल मंचों के आगमन ने इस समस्या को और अधिक जटिल बना दिया है। अब हमारे पास ऐसे तंत्र हैं, जो हमारे पूर्वाग्रहों को सुदृढ़ करने वाली सामग्री को प्राथमिकता देते हैं, जिससे हम और भी गहराई से पूर्वाग्रह में फंस जाते हैं। यह न केवल व्यक्तिगत सोच को प्रभावित करता है, बल्कि सामूहिक विचारधारा को भी विकृत करता है। वर्तमान समय में पूर्वाग्रह, पक्षपात और पूर्वधारणाएं समाज के विभिन्न वर्गों और व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव डाल रहे हैं।

जब किसी व्यक्ति के खिलाफ पूर्वाग्रह या पक्षपात किया जाता है, तो उसे अपने आत्मसम्मान और आत्मविश्वास में कमी महसूस होती है। इससे उसकी मानसिक स्थिति कमजोर हो सकती है। लगातार पूर्वाग्रह और पक्षपात का सामना करने से व्यक्ति में चिंता और अवसाद जैसी मानसिक समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। यह उसे अपने जीवन में नकारात्मक सोच और उदासी की ओर धकेल सकती हैं। अक्सर व्यक्ति की छोटी से बड़ी मानसिक समस्याओं का कारण उसकी ही धारणाओं और पूर्वाग्रहों में छिपा होता है जिनसे वह अनजान होता है।

सही शिक्षा पूर्वाग्रहों को चुनौती देने और उनसे मुक्त होने का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। जब हम विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और परंपराओं के बारे में विस्तार से सीखते हैं, तो हम अपने पूर्वाग्रहों को समझने और उन पर सवाल उठाने की क्षमता विकसित कर पाते हैं। ऐसी समावेशी शिक्षा प्रणाली, जो विविधता का सम्मान करती है और विभिन्न दृष्टिकोणों को महत्त्व देती है, हमें पूर्वाग्रहों के जाल से बाहर निकलने में मदद कर सकती है। इसके अलावा, चिंतन और आत्म-जागरूकता का विकास हमें हमारे अपने पूर्वाग्रहों को पहचानने और उन्हें दूर करने की दिशा में कदम बढ़ाने में सक्षम बनाता है। यह न केवल हमारे व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि एक न्यायसंगत और समतावादी समाज के निर्माण के लिए भी महत्त्वपूर्ण है । पूर्वाग्रहों का मुकाबला करने के लिए सबसे पहले हमें आत्म-जागरूकता की आवश्यकता है। हमें यह पहचानने की जरूरत है कि हमारे पास भी पूर्वाग्रह हो सकते हैं और उन्हें स्वीकार करना ही उनके प्रभाव को कम करने का पहला कदम है। इसके लिए हमें अपने दृष्टिकोण और व्यवहार की नियमित समीक्षा करनी चाहिए और उनके पीछे के कारणों की जांच करनी चाहिए। हमें दूसरों के अनुभवों और दृष्टिकोणों को समझने का प्रयास करना चाहिए ।

संवाद, सहानुभूति और सम्मान का अभ्यास हमारे समाज को पूर्वाग्रहों के जाल से मुक्त कर सकता है। समाज के विभिन्न संस्थानों का भी यह दायित्व है कि वे पूर्वाग्रहों को कम करने के प्रयास करें। पूर्वाग्रहों का जाल अत्यंत व्यापक है, जो हमारी सोच, व्यवहार और सामाजिक संरचना को प्रभावित करता है । इसे तोड़ने के लिए हमें व्यक्तिगत, सामाजिक और संस्थागत स्तर पर निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है। इस दिशा में उठाए गए हर छोटे कदम का प्रभाव व्यापक हो सकता है, जिससे हम एक अधिक न्यायपूर्ण और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट

सालाना 8 प्रतिशत GDP रही तो 2047 तक 55 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनेगा भारत: केवी सुब्रमण्यन

परिवहन विशेष न्यूज

अगर भारत 8 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर बनाए रखता है तो 2047 तक भारत 55 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बन सकता है। सुब्रमण्यन ने कहा कि मैं भविष्यवाणी कर रहा हूं कि अगर भारत अब से लेकर 2047 तक 8 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से बढ़ सकता है जब हम स्वतंत्रता के 100वें वर्ष का जश्न मनाएंगे तो यह 55 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बन सकता है।

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के कार्यकारी निदेशक और भारत के पूर्व मुख्य आर्थिक सलाहकार KV Subramanian ने गुरुवार को कहा कि अगर भारत 8 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर बनाए रखता है, तो 2047 तक भारत 55 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बन सकता है।

2047 तक बनेगी 55 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था

समाचार एजेंसी एएनआई से बात करते हुए सुब्रमण्यन ने कहा कि मैं भविष्यवाणी कर रहा हूं कि अगर भारत अब से लेकर 2047 तक 8 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से बढ़ सकता है, जब हम स्वतंत्रता के 100वें वर्ष का जश्न मनाएंगे, तो यह 55 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बन सकता है। उन्होंने स्वीकार किया कि यह लक्ष्य अन्य पूर्वानुमानों की तुलना में महत्वाकांक्षी लगता है, जैसे कि अर्न्स्ट एंड यंग का 2047 के लिए 26 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का पूर्वानुमान या गोल्डमैन सैक्स का 2075 तक 50 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का अनुमान है।

उन्होंने कहा कि अगर हम 2016 के बाद सरकार द्वारा मुद्रास्फीति-लक्ष्यीकरण सहित सभी व्यापक आर्थिक विविधताओं को ध्यान में रखते हैं, जिसके परिणामस्वरूप मुद्रास्फीति में औसतन कम से कम 2 प्रतिशत की कमी आई है। यह डॉलर के मुकाबले रुपये के मूल्य में उल्लेखनीय रूप से कम गिरावट को दर्शाता है और जब इसे चक्रवृद्धि की शक्ति में जोड़ा जाता है, तो 26 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का पूर्वानुमान कमतर आंका जाता है।

ऐसे छुएंगे आंकड़ा

55 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के लक्ष्य पर सुब्रमण्यन ने समझाया कि अगर हम 5 प्रतिशत मुद्रास्फीति के साथ वास्तविक रूप से 8 प्रतिशत की वृद्धि मान लें, जो मुद्रास्फीति लक्ष्य व्यवस्था के बाद 2016 से मामला रहा है। यह 13 प्रतिशत है, अगर मुद्रास्फीति की काफी कम दर के कारण मुद्रा का मूल्यह्रास 1 प्रतिशत है, तो मुद्रा का मूल्यह्रास लगभग 3 के ऐतिहासिक औसत की तुलना में बहुत कम होगा। तब विकास दर 12 प्रतिशत होगी।

अमेरिका और चीन को देंगे टक्कर

उन्होंने यह भी कहा कि 2047 में भारत से आगे दो अर्थव्यवस्थाएं अमेरिका और चीन होंगी। भारत की प्रति व्यक्ति आय 40,000 अमेरिकी डॉलर होगी। सुब्रमण्यन ने इस बात पर जोर दिया कि 8 प्रतिशत की विकास दर और नियंत्रित मुद्रास्फीति के साथ भारत 2047 तक 55 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का लक्ष्य हासिल कर सकता है।

बैंक ऑफ इंग्लैंड ने इंटरेस्ट रेट में की कटौती, घटकर 5 प्रतिशत हुई ब्याज दरें

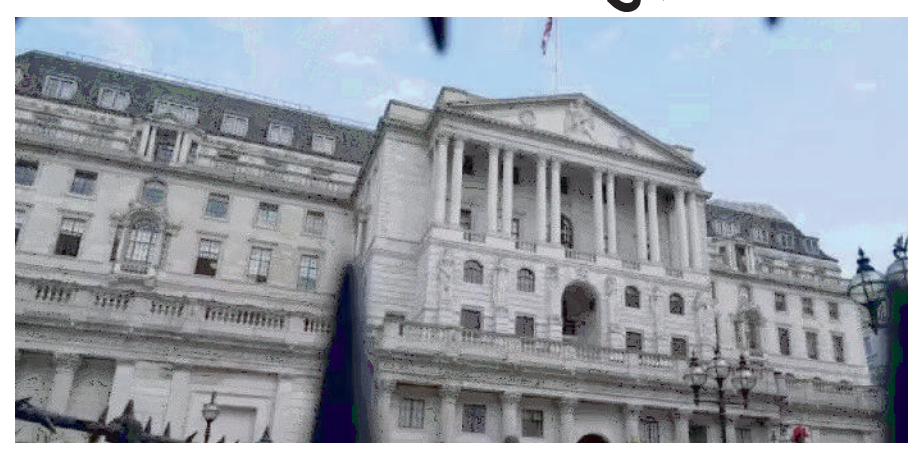

बैंक ऑफ इंग्लैंड ने ब्याज दरों में कटौती का एलान किया है। मौजूदा कटौती के बाद ब्याज दरें 16 साल बाद शीर्ष स्तर से नीचे आ गई हैं। मौद्रिक नीति का एलान करते हुए बताया बैंक रेट में क्वार्टर प्वॉइंट की कटौती की गई है जिसके बाद ब्याज दरें 5 प्रतिशत पर आ गई हैं। समिति ने यह फैसला वोटिंग के आधार पर लिया है।

नई दिल्ली। बैंक ऑफ इंग्लैंड (BoE) ने ब्याज दरों में कटौती की है। कटौती के बाद दरें 16 साल के शीर्ष स्तर से नीचे आ गई हैं। ब्याज दरें क्वार्टर प्वॉइंट घटकर 5 प्रतिशत हो गई हैं। गवर्नर एंड्रयू बेली ने इसके समर्थन में थी। हालांकि ब्याज दरों में कटौती का फैसला वोटिंग के आधार पर किया गया। समिति के 5 सदस्य ब्याज दरें कम करने के पक्ष में थे। वहीं 4 सदस्यों का मानना था कि महंगाई दर अभी पर्याप्त कम नहीं है।

ब्याज दरें कम करने को लेकर गवर्नर ने कहा कि BoE की मौद्रिक नीति समिति आगे बढ़ने में सावधानी बरतेगी। हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि मुद्रास्फीति कम रहे, और ब्याज दरों में बहुत जल्दी या बहुत अधिक कटौती न करने के लिए सावधान रहें।

बाजार ने किया समर्थन

BoE के ब्याज दरें कम कम करने का इंग्लैंड के शेयर बाजार का समर्थन मिला है। ब्लू-चिप FTSE 100 के शेयरों में 0.3 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली है। इसके साथ ही FTSE 250 मिडकैप इंडैक्स में 0.5 फीसदी की तेजी आई है। यह पिछले दो सालों में सबसे ज्यादा है।

नवंबर तक हो सकती है अगली कटौती

मिजुहो बैंक के इकोनोमिस्ट कोलिन अशीर ने बैंक रेट में कटौती को लेकर कहा कि यदि आप गवर्नर बेली द्वारा तैयार की गई सुर्खियों को देखें; बहुत जल्दी या बहुत अधिक कटौती करने पर सावधानी, तो मुझे लगता है कि वे कटौती की स्थिर तिमाही गति को देख रहे हैं।

कोलिन आगे कहते है कि आने वाले दिनों में मैक्रो इकोनॉमिक डेवलपमेंट भी देखने को मिलेंगे। इसलिए संभवतः नवंबर में अगली कटौती की उम्मीद कर रहा हूं।

RBI के पास वापस आए 2,000 रुपये के 97.92 प्रतिशत नोट; 7,409 करोड़ रुपये के नोट अब भी आने बाकी

RBI ने बृहस्पतिवार को कहा कि 2000 रुपये के 97.92 प्रतिशत नोट बैंकों में वापस आ गये हैं। आरबीआई ने 19 मई 2023 को 2000 रुपये मूल्य के बैंक नोट को चलन से हटाने की घोषणा की थी। 19 मई 2023 की स्थिति के अनुसार उस समय चलन में 2000 रुपये के बैंक नोट का कुल मूल्य 3.56 लाख करोड़ रुपये था।

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने बृहस्पतिवार को कहा कि 2,000 रुपये के 97.92 प्रतिशत नोट बैंकों में वापस आ गये हैं। चलन से हटाये गये केवल 7,409 करोड़ रुपये मूल्य के नोट अब लोगों के पास हैं। आपको बता दें कि नवंबर, 2016 में 1,000 रुपये और 500 रुपये के बैंक नोट को चलन से हटाने के बाद 2,000 रुपये के बैंक नोट जारी किये गये थे।

97.92 प्रतिशत नोट वापस आए

आरबीआई ने 19 मई, 2023 को 2,000 रुपये मूल्य के बैंक नोट को चलन से हटाने की घोषणा की थी। 19 मई, 2023 की स्थिति के अनुसार उस समय चलन में 2,000 रुपये के बैंक नोट का कुल मूल्य 3.56 लाख करोड़ रुपये था। ये आंकड़ा 31 जुलाई, 2024 को घटकर 7,409 करोड़ रुपये रह गया है। केंद्रीय बैंक ने बयान में कहा कि इस प्रकार 19 मई, 2023 तक चलन में मौजूद 2,000 रुपये के 97.92 प्रतिशत बैंक नोट वापस आ गये हैं।

अभी भी हो सकते हैं जमा

दो हजार रुपये के बैंक नोट को जमा करने या बदलने की सुविधा सात अक्टूबर, 2023 तक देश की सभी बैंक शाखाओं में उपलब्ध थी। चलन से हटाये गये 2,000 रुपये के बैंक नोट को बदलने की सुविधा 19 मई, 2023 से रिजर्व बैंक के 19 निर्गम कार्यालयों में उपलब्ध है।

आरबीआई के निर्गम कार्यालय 9 अक्टूबर, 2023 से बैंक खातों में जमा करने के लिए भी 2,000 रुपये के बैंक नोट स्वीकार कर रहे हैं। इसके अलावा लोग देश के भीतर भारतीय डाक से भी 2,000 रुपये के नोट आरबीआई के किसी भी निर्गम कार्यालय में भेज रहे हैं। यह पैसा उनके बैंक खाते में जमा हो जाता है।

19 आरबीआई कार्यालय हैं एक्टिव

बैंक नोटों को जमा/विनिमय करने वाले 19 आरबीआई कार्यालय अहमदाबाद, बेंगलुरु, बेलापुर, भोपाल, भुवनेश्वर, चंडीगढ़, चेन्नई, गुवाहाटी, हैदराबाद, जयपुर, जम्मू, कानपुर, कोलकाता, लखनऊ, मुंबई, नागपुर, नयी दिल्ली, पटना और तिरुवनंतपुरम में हैं।

दिल्ली-एनसीआर और मुंबई के लोगों को राहत, शुक्रवार से 50 रुपये प्रतिकिलो टमाटर बेचेगी सरकार

परिवहन विशेष न्यूज

सरकार शुक्रवार से दिल्ली-एनसीआर और मुंबई के रिटेल मार्केट में 50 रुपये प्रति किलोग्राम की रियायती दर पर टमाटर बेचना शुरू करेगी। 29 जुलाई को केंद्रीय खाद्य एवं उपभोक्ता मामलों के मंत्री प्रहलाद जोशी ने दिल्ली-एनसीआर में 60 रुपये प्रति किलोग्राम की रियायती दर पर टमाटर की बिक्री शुरू की थी। टमाटर खरीद सीधे मंडियों से की जाएगी जिससे बिचौलियों से बचा जा सके।

नई दिल्ली। आम आदमी को राहत देने के लिए सरकार शुक्रवार से दिल्ली-एनसीआर और मुंबई के रिटेल मार्केट में 50 रुपये प्रति किलोग्राम की रियायती दर पर टमाटर बेचना शुरू करेगी। बाजार में अभी टमाटर 60 रुपये प्रति किलोग्राम पर बिक रहा है।

फिलहाल 60 रुपये प्रति किलोग्राम हो रही बिक्री

29 जुलाई को केंद्रीय खाद्य एवं उपभोक्ता मामलों के मंत्री प्रहलाद जोशी ने दिल्ली-एनसीआर में 60 रुपये प्रति किलोग्राम की रियायती दर पर टमाटर की बिक्री शुरू की थी। बाद में मुंबई में भी इसकी बिक्री शुरू हो गई। जोशी ने कहा कि हमारे हस्तक्षेप के बाद टमाटर की कीमतों में कमी आई है। उपभोक्ता मामलों की सचिव निधि खरे ने संवाददाताओं से कहा कि हम कल (2 अगस्त) से दिल्ली-एनसीआर और मुंबई में 50 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से टमाटर बेचना शुरू करेंगे। भारतीय राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ लिमिटेड (NCCF) मोबाइल वैन के जरिए टमाटर बेच रहा है।

उपभोक्ता मामलों के विभाग के आंकड़ों के अनुसार, 31 जुलाई को टमाटर की अखिल भारतीय औसत कीमत 61.74 रुपये प्रति किलोग्राम थी। दिल्ली में बुधवार को औसत कीमत 70 रुपये प्रति किलोग्राम थी। पिछले महीने, कई उत्पादक राज्यों में अनियमित बारिश के बाद गर्म लहरों के कारण आपूर्ति प्रभावित होने से दरें 100 रुपये प्रति किलोग्राम से अधिक हो गईं।

सीधे मंडियों से हुई खरीद

खरे ने कहा कि मंत्रालय दिल्ली-एनसीआर के बाजार में अपने सफल स्टोरों के माध्यम से टमाटर बेचने के लिए मदर डेयरी को शामिल करने पर विचार करेगा। इस मामले में मंत्रालय ने मूल्य स्थिरीकरण कोष (PSF) का उपयोग नहीं किया है, क्योंकि टमाटर सीधे मंडियों से खरीदे गए थे।

महासंघ थोक मंडियों से टमाटर खरीद रहा है और उन्हें उचित खुदरा कीमतों पर बेच रहा है। इस कदम का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि खुदरा स्तर पर लाभ मार्जिन उचित रहे और बिचौलियों को अप्रत्याशित लाभ से रोका जा सके और इस तरह उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा हो सके। इस हस्तक्षेप से एनसीसीएफ मूल्य वृद्धि को शांत करना और बाजार में मूल्य स्थिरता बनाए रखना चाहता है, जिससे उपभोक्ताओं को लाभ हो सके।

HDFC Bank ने ग्राहकों को किया सतर्क, फेक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म से सावधान रहने की दी सलाह

HDFC Bank देश का सबसे बड़ा बैंक है। बैंक ने ग्राहकों को ऑनलाइन फ्रॉड को लेकर सर्तक रहने की सलाह दी है। बैंक के बयान के अनुसार ऑनलाइन फ्रॉड के मामलों में तेजी देखने को मिली है। ग्राहक फेक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म के झांसे में आ जाते हैं। इन प्लेटफॉर्म पर हाई रिटर्न का वादा किया जाता है जो ग्राहकों को आकर्षित करता है। ऐसे में ग्राहकों को सतर्क होना चाहिए।

नई दिल्ली। देश के सबसे बड़े बैंक यानी एचडीएफसी बैंक (HDFC Bank) ने ग्राहकों को फेक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म को लेकर सतर्क किया है। बैंक ने कहा कि इन्वेस्टमेंट फ्रॉड के मामलों में वृद्धि देखने को मिली। लगातार बढ़ रहे फ्रॉड को रोकने के लिए ग्राहकों का सतर्क होना बहुत जरूरी है। बैंक ने ग्राहकों को निवेश के अवसर देने वाली फेक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म से सावधान रहने की सलाह दी।

एचडीएफसी बैंक के बयान के अनुसार कई बार निवेशक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर आने वाले ज्यादातर आकर्षक ऑफर की जाल में फंस जाते हैं और बाद में फ्रॉड के शिकार हो जाते हैं। इस तरह के फ्रॉड से बचने के लिए ग्राहकों का जागरूक होना बेहद जरूरी है।

हाई रिटर्न का वादा

आमतौर पर स्टॉक, आईपीओ, क्रिप्टोकरेंसी, बिटकॉइन आदि में निवेश को लेकर फ्रॉड के मामले देखें गए हैं। इनमें ग्राहकों को हाई रिटर्न का वादा करने का झांसा दिया जाता है। जालसाज फेक इन्वेस्टमेंट प्लेटफॉर्म या ऐप का निर्माण करते हैं जो कि ग्राहकों को ऑरिजनल जैसा लगता है। इन ऐप्स या वेबसाइट पर उच्च रिटर्न का संकेत देने वाले फर्जी डैशबोर्ड शो होता है।

इस फर्जी डैशबोर्ड पर शो हो रहे रिटर्न को देखकर ग्राहक जालसाज का शिकार हो जाते हैं।

"हम निवेश धोखाधड़ी के मामलों की संख्या में वृद्धि देख रहे हैं और इस मुद्दे के बारे में व्यापक जागरूकता और ज्ञान पैदा करने में मदद करना चाहते हैं, ताकि उपभोक्ता इन भ्रामक योजनाओं का शिकार होने से बच सकें। जबकि सरकार, बैंक और नियामक निकाय इन धोखाधड़ी को रोकने के लिए कदम उठा रहे हैं। व्यक्तिगत सतर्कता और जागरूकता इन फ्रॉड से बचने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।"

एचडीएफसी बैंक, कार्यकारी उपाध्यक्ष (क्रेडिट इंटेलिजेंस एंड कंट्रोल) मनीष अग्रवाल

फेक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म को कर रहें प्रमोट

बैंक ने अपने बयान में कहा कि इन फेक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म को सोशल मीडिया पर प्रमोट भी किया जा रहा है। जालसाज सोशल इंजीनियरिंग रणनीति के माध्यम से लोगों के साथ फ्रॉड करते हैं। अगर कभी कोई व्यक्ति ऑनलाइन फ्रॉड का शिकार हो जाता है तो उसे तुरंत बैंक में अनऑथराइज्ड ट्रांजैक्शन को लेकर रिपोर्ट करनी चाहिए।

इसके अलावा गृह मंत्रालय (एमएचए) द्वारा शुरू की गई 1930 हेल्पलाइन नंबर पर और राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल पर भी शिकायत दर्ज करनी चाहिए।

PNB के कन्ज्यूमर लोन होंगे महंगे, MCLR में 5 बेस प्वाइंट की बढ़ोतरी

परिवहन विशेष न्यूज

PNB ने एक नियामक फाइलिंग में कहा कि बेंचमार्क एक साल की अवधि का एमसीएलआर जिसका उपयोग ऑटो और पर्सनल जैसे अधिकांश कन्ज्यूमर लोन की कीमत तय करने के लिए किया जाता है। बुधवार को सार्वजनिक क्षेत्र के एक अन्य ऋणदाता बैंक ऑफ इंडिया ने भी एक वर्ष की अवधि के लिए MCLR में 5 आधार अंकों की वृद्धि करके इसे 8.95 प्रतिशत करने की घोषणा की है।

नई दिल्ली। सरकारी स्वामित्व वाले Punjab National Bank ने गुरुवार को सभी अवधियों के लिए सीमांत लागत आधारित ऋण दर (MCLR) में 0.05 प्रतिशत या 5 बेस प्वाइंट की बढ़ोतरी की है। PNB के इस फैसले के बाद अधिकांश कन्ज्यूमर लोन महंगे हो गए हैं।

महंगा हो गया कंज्यूमर लोन

पीएनबी ने एक नियामक फाइलिंग में कहा कि बेंचमार्क एक साल की अवधि का एमसीएलआर, जिसका उपयोग ऑटो और पर्सनल जैसे अधिकांश कन्ज्यूमर लोन की कीमत तय करने के लिए किया जाता है, पहले की दर 8.85 प्रतिशत के मुकाबले 8.90 प्रतिशत होगा।

कितनी बढ़ोतरी हुई?

तीन साल का एमसीएलआर 5 बेस प्वाइंट की वृद्धि के साथ 9.20 प्रतिशत है। एक महीने, तीन महीने और छह महीने की अवधि की दर 8.35-8.55 प्रतिशत के दायरे में होगी। ओवरनाइट अवधि पर एमसीएलआर 8.25 प्रतिशत के मुकाबले 8.30 प्रतिशत होगा। नई दरें 1 अगस्त 2024 से प्रभावी होंगी।

Bank Of India ने भी की बढ़ोतरी

बुधवार को सार्वजनिक क्षेत्र के एक अन्य ऋणदाता बैंक ऑफ इंडिया ने भी एक वर्ष की अवधि के लिए MCLR में 5 आधार अंकों की वृद्धि करके इसे 8.95 प्रतिशत करने की घोषणा की। हालांकि, शेष अवधि के लिए दरें अपरिवर्तित रहीं।

'क्रीमीलेयर की पहचान जरूरी', सुप्रीम कोर्ट ने आरक्षण के नियमों पर पूछा सवाल- IAS और गांव का गरीब बच्चा एक बराबर कैसे?

परिवहन विशेष न्यूज

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को एससी और एसटी श्रेणियों के रिजर्वेशन कोटे में सब कैटेगरी बनाए जाने का रास्ता साफ कर दिया। साथ ही कोर्ट ने आरक्षण के नियमों से जुड़े कई बुनियादी सवाल खड़े किए। कोर्ट ने आरक्षित जातियों में क्रीमीलेयर की पहचान और समर्थ लोगों को इसके दायरे से बाहर करने पर कानून बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

नई दिल्ली। अनुसूचित जातियों और जनजातियों के उपवर्गीकरण का रास्ता साफ करने वाले सुप्रीम कोर्ट के निर्णय में जस्टिस बीआर गवई ने आरक्षण की व्यवस्था के क्रियावन्वन को लेकर बुनियादी प्रश्न खड़े किए हैं। विशेष रूप से इसका लाभ सही, उपयुक्त, पात्र और वास्तविक जरूरतमंद व्यक्ति को मिलने के संदर्भ में।

जस्टिस गवई ने स्पष्ट रूप से कहा है कि राज्य यानी शासन प्रणाली को एक नीति लानी चाहिए, जो अनुसूचित जाति-जनजाति वर्गों में क्रीमी लेयर की पहचान कर सके और इसके आधार पर आरक्षण का लाभ उठाकर समर्थ हो चुके लोगों को इसके दायरे से बाहर किया जा सके। जस्टिस गवई अनुसूचित जाति समाज से आते हैं और अगले साल प्रधान न्यायाधीश बनने वाले हैं। वह केजी बालाकृष्णन के बाद इस समुदाय से प्रधान न्यायाधीश बनने वाले दूसरे जज होंगे।

बीआर अंबेडकर के विचारों को किया याद

जस्टिस गवई ने अपने अलग फैसले में संविधान निर्माता बीआर अंबेडकर के विचारों का स्मरण किया है। अंबेडकर ने कहा था कि राजनीतिक लोकतंत्र तब तक नहीं टिकेगा, जब तक सामाजिक लोकतंत्र सुनिश्चित नहीं किया जाता। सामाजिक लोकतंत्र क्या है। सामाजिक लोकतंत्र का अर्थ है- एक ऐसी जीवनशैली जिसमें स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा की भावना हो। ये तीनों अलग-अलग नहीं, बल्कि एक त्रिकोण का भाग हैं।

क्या पूरे हो रहे आरक्षण के संवैधानिक उद्देश्यः कोर्ट

जस्टिस गवई के अनुसार सवाल यह उठना चाहिए कि क्या अनुसूचित जाति वर्ग में गैरबराबरी पर खड़े लोगों के साथ समान व्यवहार आरक्षण के संवैधानिक उद्देश्य को पूरा करता है या इसमें बाधक बनता है। उन्होंने अपनी बात के समर्थन में यह सवाल खड़ा किया कि क्या एक आईएएस-आईपीएस या सिविल सेवा के अन्य अधिकारी के बच्चे की तुलना अनुसूचित जाति के ही उस वंचित व्यक्ति के बेटे के साथ की जा सकती है, जिसने ग्राम पंचायत या जिला परिषद के स्कूल में पढ़ाई की है।

उन्होंने कहा कि पहली श्रेणी के व्यक्ति के बच्चे को मिली शिक्षा और अन्य सुविधाएं गांव में अभाव में रह रहे व्यक्ति के मुकाबले कहीं अधिक होंगी। एक अधिकारी के बच्चे के पास तो कोचिंग जैसी सुविधा भी है, उसके घर का माहौल शैक्षणिक उत्थान के लिए कहीं अधिक अनुकूल होगा। इसके विपरीत दूसरी श्रेणी के बच्चे के अभिभावक के पास नाममात्र की शिक्षा और कोचिंग सुविधा होगी।

क्रीमीलेयर पर उठाए सवाल

जस्टिस गवई ने यह टिप्पणी भी की कि पिछड़े समुदायों के क्रीमी लेयर में शामिल लोग आरक्षण का लाभ उठाकर बहुमत में जरूरतमंदों को इस अधिकार से वंचित कर देते हैं। उन्होंने लिखा, 'जब कोई व्यक्ति किसी अलग कमरे में पहुंच जाता है तो वह हर तरह से दूसरे लोगों को उसमें आने से रोकता है। सामाजिक न्याय से ही उन्हें यह लाभ मिलता है, लेकिन जब शासन यही लाभ ऐसे दूसरे लोगों को देना चाहता है, जो अब तक वंचित रहे हैं तो उसे मना नहीं किया जा सकता।'

अन्य जजों ने भी किया समर्थन

जस्टिस गवई ने कहा है कि अनुसूचित जाति और जनजाति का एक विशेष वर्ग ही आरक्षण का लाभ उठा रहा है। इस जमीनी सच्चाई की अनदेखी नहीं की जा सकती कि एससी-एसटी समुदायों में ऐसी जातियां हैं, जो अभी भी उत्पीड़न का सामना कर रही हैं। एससी-एसटी में क्रीमी लेयर की पहचान के संदर्भ में जस्टिस गवई की राय का तीन अन्य जजों- जस्टिस पंकज मित्तल, जस्टिस एससी शर्मा और जस्टिस विक्रम नाथ ने भी समर्थन किया है।

जस्टिस पंकज मित्तल ने कहा है कि किसी श्रेणी में आरक्षण का लाभ केवल एक पीढ़ी में मिलना चाहिए। अगर दूसरी पीढ़ी आ गई है तो आरक्षण का लाभ नहीं मिलना चाहिए। जस्टिस एससी शर्मा ने कहा है कि क्रीमी लेयर की पहचान को संवैधानिक रूप से अनिवार्य बनाया जाना चाहिए।

माहेश्वरी लहरिया महोत्सव 13 अगस्त को मिसेज लहरिया प्रतियोगिताएं आयोजित होगी

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। माहेश्वरी महिला संस्थान के तत्वाधान में पुराना शहर माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा 13 अगस्त को लहरिया महोत्सव शास्त्री नगर स्थित सूर्य महल में आयोजित किया जा रहा है जिसके तहत आज पुराना शहर माहेश्वरी महिला मंडल की कार्यकारी मंडल मीटिंग का आयोजन किया गया इस मीटिंग में माहेश्वरी महिला मंडल के लहरिया महोत्सव से संबंधित कार्यक्रम पर चर्चा की गई, सभी कार्य समिति सदस्यों की राय ली गई सभी सदस्यों को अपनी अपनी जिम्मेदारियां सौपी गई ,पुराना शहर महिला मंडल अध्यक्ष सुमित्रा भदादा व सचिव पूनम पोरवाल ने बताया कि इस लहरिया महोत्सव में कई तरह की प्रतियोगिताएं रखी जा रही है मिसेज लहरिया प्रतियोगिता ,ग्रुप डांस प्रतियोगिता, सरप्राईज गेम्स का आयोजन किया जाएगा। इस मीटिंग में मंडल की 29 कार्यकारिणी सदस्य ज्योति भदादा ,संतोष तोषनीवाल, उषा समदानी,उषा पटवारी ,रानू राठी ,रश्मि कोगटा ,आशा पटवारी ,उमा काबरा ,संगीता पटवारी ,संगीता मुन्दडा, रेखा लाहोटी, रेखा समदानी ,रेखा जागेटिया,अंजलि झवर ,अनीता बाहेती,सुमन सोमानी, पूजा दरक,पूनम बाहेती ,वैजयंती समदानी,शीलू इनानी, चंदा तोषनीवाल,कौशल्या समदानी, आशा पटवारी,मंजू डाड उपस्थित थी।

विश्वविद्यालयों को भरनी होगी सभी खाली सीटें, अंतिम चरण के काउंसलिंग के बाद भी छात्रों को मिलेंगे मौके

UGC ने सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों सहित सीयूईटी के जरिए प्रवेश देने वाले उच्च शिक्षण संस्थानों को निर्देश दिया है कि वह प्रवेश के दौरान स्नातक और परास्नातक कोर्सों से जुड़ी एक भी सीट खाली न छोड़ें ।यूजीसी चेयरमैन ने कहा कि किसी कोर्स की सीटें खाली रह जाती हैतो सीयूइटी में दूसरे कोर्सों में प्रवेश के लिए आवेदन करने वाले छात्रों को नियमों में ढील देकर प्रवेश का मौका दिया जाए।

नई दिल्ली। विश्वविद्यालयों में सीयूइटी (कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेस टेस्ट) के जरिए प्रवेश की प्रक्रिया शुरू होने के साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों सहित सीयूईटी के जरिए प्रवेश देने वाले उच्च शिक्षण संस्थानों को निर्देश दिया है,

कि वह प्रवेश के दौरान स्नातक और परास्नातक कोर्सों से जुड़ी एक भी सीट खाली न छोड़ें। यह संसाधनों की बर्बादी है, साथ ही उन छात्रों को उच्च शिक्षा से वंचित करना भी है, जो उन संस्थानों के साथ जुड़कर पढ़ना चाहते है।

UGC ने जारी किए नए दिशा निर्देश

यूजीसी चेयरमैन प्रोफेसर एम जगदीश कुमार ने गुरुवार को केंद्रीय विश्वविद्यालयों सहित दूसरे सभी उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश को लेकर एक नई एसओपी (स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर) जारी किया है, जिसमें साफ तौर पर यह कहा है कि सीयूइटी के जरिए प्रवेश के लिए वैसे तो तीन से चार चरणों में काउंसलिंग आयोजित की जाती है, जिसका उद्देश्य सभी कोर्सों की सारी सीटें भरी जा सकें।

छात्रों को दिया जाए नियमों में ढीलः यूजीसी चेयरमैन

उन्होंने कहा कि यदि इसके बाद भी किसी कोर्स की सीटें खाली रह जाती है, तो सीयूइटी में दूसरे कोर्सों में प्रवेश के लिए आवेदन करने वाले छात्रों को नियमों में ढील देकर प्रवेश का मौका दिया जाए। इस व्यवस्था के बाद भी यदि सीटें खाली रह जाती है, तो विश्वविद्यालयों उन्हें भरने के लिए नए सिरे से विश्वविद्यालय स्तर पर फिर से प्रवेश परीक्षा आयोजित कर सकता है। ताकि उन छात्रों को मौका मिल सके, जो किन्ही कारणों से सीयूइटी में शामिल नहीं हो पाए थे।

विश्वविद्यालयों में सभी सीटों की भरने की हो कोशिश

यूजीसी ने चेयरमैन ने विश्वविद्यालयों से परीक्षा को पूरी पारदर्शिता के साथ करने और आरक्षण नियमों का पालन करने की सलाह दी है। यूजीसी चेयरमैन ने विश्वविद्यालयों को यह निर्देश ऐसे समय दिया है, जब देश भर के उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश की प्रक्रिया चल रही है। इस दौरान इन संस्थानों में हर साल अलग-अलग कोर्सों की काफी सीटें दाखिला न लेने के चलते खाली रह जाती है। यूजीसी चेयरमैन का मानना है कि हमें इन्हें भरने की हर संभव कोशिश करनी चाहिए।

यात्रिगन क्रुपया ध्यान दीजिए ढेंकानाल स्टेशन से यात्रा कर रहा है थोड़ा देख के स्टेशन पर जायीये नहीं तो जान जा सकता है

मनोरंजन सासमल , स्टेटे हेड उडीशा, भुबनेस्वर्: ढेंकानाल मुख्य स्टेशन का नवीनीकरण कार्य जारी है, लेकिन कर्मचारियों/अधिकारियों द्वारा सुरक्षा के लिए कोई बड़ा कदम नहीं उठाया गया है, जिससे इस तरह का मामला सामने आ सकता है। अगर आप जल्दी में हैं तो यह स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देता है... इसलिए जब भी आप प्लेटफॉर्म पर हों तो बिजली के प्रति सचेत रहें। रेलवाय का सेफ्टी अधिकारी , ढेंकानाल रेल स्टेशन मास्टर , RPF और GRP ध्यान देना जरूरी नही तो किसी की जान चली गयी तो इसीका जिम्मेदारी कोन लेगा।

'औपचारिक नहीं है समानता का अधिकार', 140 पन्नों के अपने फैसले में CJI चंद्रचूड़ ने और क्या कुछ कहा?

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि समानता का मौलिक अधिकार औपचारिक समानता नहीं बल्कि तथ्यात्मक समानता की गारंटी देता है ।प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा कि अनुच्छेद-14 औपचारिक समानता की नहीं बल्कि तथ्यात्मक समानता की गारंटी देता है ।इस प्रकार अगर किसी व्यक्ति की कानून के उद्देश्य के संदर्भ में स्थिति समान नहीं हैं तो वर्गीकरण की अनुमति है। वर्गीकरण का यही तर्क उपवर्गीकरण पर भी समान रूप से लागू होता है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को कहा कि समानता का मौलिक अधिकार औपचारिक समानता नहीं बल्कि तथ्यात्मक समानता की गारंटी देता है और अगर विभिन्न व्यक्तियों की स्थिति समान नहीं है, तो वर्गीकरण स्वीकार्य है।

प्रधान न्यायाधीश ने क्या कहा?

प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने बहुमत का अपना 140 पृष्ठों का फैसला लिखते हुए कहा कि संविधान वैध वर्गीकरण की अनुमति देता है, बशर्ते दो शर्तें पूरी हों- पहली यह कि ऐसा स्पष्ट अंतर होना चाहिए जो समूह में शामिल व्यक्तियों को समूह के अन्य व्यक्तियों से अलग करता हो। स्पष्ट अंतर का अर्थ है ऐसा अंतर जिसे समझा जा सके।

दूसरी- उस अंतर का कानून के जरिये हासिल किए जाने वाले उद्देश्य से तर्कसंगत संबंध होना चाहिए, अर्थात वर्गीकरण के आधार का वर्गीकरण के उद्देश्य के साथ संबंध होना चाहिए। फैसले में इस बात पर विचार किया गया कि क्या उप वर्गीकरण का सिद्धांत अनुच्छेद-14 (समानता का अधिकार) का उल्लंघन करता है।

अनुच्छेद-14 औपचारिक समानता की नहीं, बल्कि तथ्यात्मक समानता की गारंटी देता है। इस प्रकार अगर किसी व्यक्ति की कानून के उद्देश्य के संदर्भ में स्थिति समान नहीं हैं, तो वर्गीकरण की अनुमति है। वर्गीकरण का यही तर्क उपवर्गीकरण पर भी समान रूप से लागू होता है।- डीवाई चंद्रचूड़, प्रधान न्यायाधीश

सभी व्यक्ति एक या दूसरे पहलू में असमानः सीजेआई

जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा कि सभी व्यक्ति एक या दूसरे पहलू में असमान हैं। किसी स्थिति में, एक व्यक्ति को भी अपने आप में एक वर्ग माना जा सकता है। उस मामले में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि कानून सूक्ष्म वर्गीकरण न करे। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि राज्यों द्वारा अनुसूचित जातियों का उपवर्गीकरण संवैधानिक चुनौती उत्पन्न होने पर न्यायिक समीक्षा के अधीन है।

सीजेआई ने राज्यों को लेकर क्या कहा?

उन्होंने कहा कि जब भी कार्रवाई को चुनौती दी जाएगी, राज्य को अपनी कार्रवाई के आधार को उचित ठहराना होगा। उपवर्गीकरण का आधार और उसके लिए जिस मॉडल का पालन किया गया है, उसे राज्य द्वारा एकत्र किए गए अनुभवजन्य आंकड़ों के आधार पर उचित ठहराना होगा। दूसरे शब्दों में राज्य को उपवर्गीकरण की कवायद आंकड़ों के आधार पर करनी होगी, वह केवल अपनी मर्जी या राजनीतिक सुविधा के हिसाब से काम नहीं कर सकता।

कोटे पर मंडल फैसले का उल्लेख करते हुए प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि उसमें उपवर्गीकरण के क्रियान्वयन को केवल अन्य पिछड़े वर्गों (ओबीसी) तक सीमित नहीं किया गया था। उन्होंने यह भी कहा कि अनुसूचित जाति के भीतर उपवर्गीकरण अनुच्छेद 341(2) का उल्लंघन नहीं करता क्योंकि जातियों को अनुसूचित जाति की सूची में शामिल या बाहर नहीं किया गया है।

उपवर्गीकरण केवल तभी उक्त प्रविधान का उल्लंघन करेगा जब अनुसूचित जातियों में शामिल कुछ जातियों या समूहों को वर्ग के लिए आरक्षित सभी सीटों पर वरीयता या विशेष लाभ प्रदान किया जाएगा। अनुच्छेद 341(2) कहता है कि संसद किसी भी जाति, नस्ल या जनजाति को अनुसूचित जाति की सूची में शामिल या बाहर कर सकती है।

वायनाड में दो दिन बाद भी जारी है मलबे से शवों की तलाश, 1600 से अधिक जवान लगा रहे जान की बाजी

वायनाड में भूस्खलन से आई त्रासदी इतनी भीषण है कि घटना के दो दिन बाद भी अब तक सभी शव निकाले नहीं जा सके हैं। वहां 1600 से अधिक कर्मियों की टीम बचाव कार्य में जुटी हुई है। इस बीच मौत का आंकड़ा 270 पार कर गया है एवं अभी इसके और बढ़ने की आशंका है। करीब 200 लोग अभी भी लापता बताए जा रहे हैं।

वायनाड। केरल के वायनाड में मंगलवार तड़के भारी बारिश के बाद बड़े पैमाने पर हुए भूस्खलन के दो दिन बाद भी मलबे में फंसे जीवित लोगों की तलाश के लिए बचाव दल कठिन परिस्थितियों में भी शिद्दत से जुटे हैं। सेना, नौसेना, एनडीआरएफ समेत बचाव दलों के 1,600 से अधिक कर्मी राहत एवं बचाव कार्य में जुटे हैं।

इसमें अलावा करीब 3,000 स्थानीय नागरिक भी उनकी मदद कर रहे हैं। अब तक 177 लोगों के शव बरामद किए जा चुके हैं, जबकि लगभग 200 लोग अभी भी लापता हैं। मृतक संख्या अभी और बढ़ने की आशंका है। उधर, कुछ अपुष्ट रिपोर्टों में 276 लोगों की मौत होने की बात कही गई है। इस भूस्खलन में वायनाड के चार गांव मुंडक्कई, चूरलमाला, अट्टमाला और नूलपुझा पूरी तरह तबाह हो गए थे।

अभी भी मलबों में दबे हैं शव

वायनाड जिले के अधिकारियों ने कहा है कि भूस्खलन में मारे गए लोगों में 25 बच्चे और 70 महिलाएं शामिल हैं और 200 से अधिक अन्य घायल हुए हैं। इनमें से ज्यादातर सबसे ज्यादा प्रभावित मुंडक्कई और चूरलमाला क्षेत्रों के हैं। राहत कार्यों में सड़कें और पुल ध्वस्त होने और भारी उपकरणों की कमी के कारण बाधा भी आ रही है। इसके चलते बचाव कर्मियों के लिए मलबा और बड़े-बड़े उखड़े हुए पेड़ों को हटाना मुश्किल हो रहा है।

पेड़ घरों और अन्य इमारतों पर गिर गए हैं, जिससे इमारतें पूरी तरह ढह गई हैं। मुंडक्कई में राहत कार्य में जुटे एक दल ने कहा, 'हम एक इमारत की छत पर खड़े हैं और नीचे से बदबू आ रही है, जो शवों की मौजूदगी का संकेत दे रही है। इमारत पूरी तरह से कीचड़ और उखड़े हुए पेड़ों से ढकी हुई है।' उधर, मुख्यमंत्री पी. विजयन और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा सहित अन्य नेताओं ने आपदा प्रभावित लोगों से मुलाकात की और उनके प्रति अपनी एकजुटता व्यक्त की।

राहुल गांधी ने किया दौरा

राहुल ने कहा कि यह आपदा वायनाड, केरल और राष्ट्र के लिए एक भयानक त्रासदी है। हम यहां हालात देखने आए हैं। यह देखना काफी दर्दनाक अनुभव है कि लोगों ने अपने परिवार के सदस्यों और घरों को खो दिया है। हम यह सुनिश्चित करने की कोशिश करेंगे कि बचे हुए लोगों को उनका हक मिले। उधर, सीएम विजयन ने यहां एक सर्वदलीय बैठक के बाद कहा कि हमारी पहली प्राथमिकता प्राकृतिक आपदा के पीड़ितों को बचाना है।

रक्तदाता का सम्मान समारोह एवं मोटिवेशनल सेमिनार साथ विशाल रक्तदान शिविर

हैदराबाद : शिवरामपल्ली स्थित थैलेसिमिया, आप सभी को यह बताते हुए मुझे बड़ा ही गर्व महसूस हो रहा ब्लड बैंक में तारिख 4 अगस्त, 2024 वार रविवार अमावस्या के दिन थैलेसिमिया ब्लड बैंक शिवरामपल्ली हैदराबाद में रक्तदाता सम्मान समारोह एवं मोटिवेशनल सेमिनार का भव्य आयोजन करने जा रहे है ,साथ ही साथ विशाल रक्तदान शिविर भी रखा गया है। इस आयोजन में अन्य अलग-अलग राज्यों से रक्तवीरों को आमंत्रित किया गया है और साथ ही हैदराबाद मे रहने वाले अपने हर एक समाज के प्रवासी भाई बंधुओ को आमंत्रित किया गया है । इस आयोजन का करने का एक ही मकसद है कि लोगों को रक्तदान के प्रति ज्यादा से ज्यादा जागरूक करना और उन्हें ये दिखाना कि आपके द्वारा किया गया रक्तदान सही जगह पर जा रहा है या नहीं साथ ही आज थैलेसिमिया बीमारी से जूंझ रहे बहुत सारे पीड़ित बच्चों को समय पर रक्त मिल सके और उनका इलाज हो सके। इस आयोजन में हर एक रक्तयोद्धा को मोमेंटो व सर्टिफिकेट देकर मंच पर सम्मानित किया जाएगा इसलिए आप सभी से सादर निवेदन है की आप 4 अगस्त वार रविवार को समय 10 बजे से सायं 6बजे तक होगा सभी रक्तदाता से अपिल ज्यादा से ज्यादा संख्या मे पधारकर इस आयोजन को सफल बनाएं धन्यवाद और प्रेम व कैलाश प्रजापत, विशाल , सुरेन्द्र सांगवा द्वारा जानकारी दी।

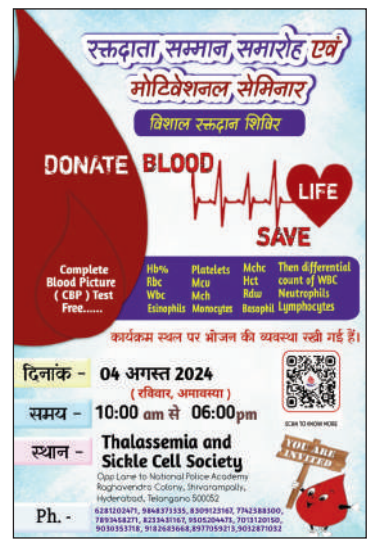

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023